वियोगी आखदेन.....

वो

तुम

मैं

और

कैंसर

कुंवर वियोगी
सुधा रणधीर चतुर्वेदी

Name of the Book – वो, तुम, मैं और कैंसर
Authors- Kunwar Viyogi & Sudha Randhir Chaturvedi
Kunwar Viyogi di Bayaja:Volume- 27
Editor- Sudha Chaturvedi

Copyright--- Sudha Randhir Chaturvedi and Rounak Singh

ISBN: 978-93-90622-45-0

Publisher: Mrs. Sudha Randhir Chaturvedi

Address- Mrs. Sudha Randhir Chaturvedi
M-327, Utsav Ashiana Manglam
Kalwar Road, Jaipur, Raj. 302012
e-mail : sudha.chaturvedi5@gmail.com
Mobile: 9829738844, 9829245255
www.kunwarviyogi.com

Online distribution on Amazon, Kindle & Book Media on line book stores Link---
https://www.amazon.in/dp/BO8YYD7VNT?ref=myi_title_dp

printer- Book Media, bookmediaindia@gmail.com

Year of publication: 2020
Price: Rs.150/-

कुवंर वियोगी

कुंवर वियोगी, साहित्य अकादमी पुरस्कार–1980

दो शब्द

''कैंसर'' शब्द आज भी उतना ही डरावना है जितना 1980–90 के बीच था। ढेरों अनुसंधानों, खोजों के बाद भी इसका स्थायी तोड़ नहीं है। कैंसर से बचाव का अर्थ है, उस अवश्यंभावी को टालना। उन्नत से उन्नत तकनीकों की सहायता से छुटकारा तो मिलता है पर बाकी बचा जीवन, डर के साये में जीना होता है।

कैंसर, रोगी के आत्मविश्वास, सुख–शान्ति को उजाड़ देता है। भय, निराशा और मौत का डर, सामान्य संतुलन को नष्ट कर देता है। रोगी के निकट पारिवारिक सदस्यों को भी चोट पहुंचाता है। घर का कर्ता अपने घर को, अपने रोगी को बचाने के लिये हरसंभव प्रयास करता है। रोगी कोई माता, पिता, पत्नि, पुत्र या पुत्री हो सकते हैं। अपने प्रिय को बचाने के लिये हरसंभव कोशिश करता है। अपने श्रम, धन, समय को न्योछावर करने के लिए तत्पर होता है। अपनी जान की बाजी तक लगाने से चूकता नहीं है। इलाज लंबा और खर्चीला होता है। सारी जमापूंजी खत्म हो जाती है। यह जानते हुए भी कि मृत्यु निश्चित है तब भी एक–एक सांस के लिये युद्ध चलता है।

रोगी के न रहने से परिवार में खालीपन आता है। अगर गृहणी पीड़ित हो तो फिर तो नुकसान का आकलन करना ही कठिन है। आर्थिक स्तर पर घोर हानि की भी भरपाई हो सकती है पर जन हानि की भरपाई नहीं हो सकती है। जनहानि में व्यक्ति ही नहीं जाता उसके साथ घर का सुख–चैन, विश्वास, भरोसे की छाया भी गुम हो जाती है। पति या पत्नि की हानि तो घर को तोड़ ही देती है। घर को व्यवस्थित करने के प्रयासों में एक अपराध बोध जन्म लेता है।

यह अपराध बोध आदमी को पीछे खींचता है, और उस घुटन भरी यादों में अपने आपको कोंचता रहता है। इन सबसे बाहर

आने के लिए साक्षीभाव का होना आवश्यक है, बार –बार विश्लेषण व संश्लेषण से आदमी अपनी स्थिति, पर्यावरण, रिश्तों का सही आकलन कर पाता है।

सेना के कई पदकों और साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित वायुसेना अधिकारी ग्रुप कैप्टन रणधीर सिंह उपनाम ''कुंवर वियोगी'' अपनी पत्नि 'प्रेम'(पम्मी) से अगाध प्रेम करते हैं। परिवार की जिम्मेदारियां निवृत होने पर 1986 में जब थोड़ी राहत का समय आया तो मालूम हुआ कि पम्मी स्तन कैंसर से ग्रस्त हैं। सदा निरोगी और पूजा–पाठ करने वाली महिला को कभी बुखार भी नहीं आया था। कैंसर सैकण्ड स्टेज पर था। रणधीर का 1986 में ही गांधीनगर (गुजरात) से स्थानांतरण नगरोटा(जम्मू) हुआ था। सबसे छोटा देवर जो सास की मृत्यु के समय 3–4 साल का होगा 1986 में ही उसकी passing out paradeमें शामिल हुई थी। उसके बाद ही यह वज्रपात हुआ था।

वर्ष 1986 में अहमदाबाद कैंसर हॉस्पिटिल आना पड़ा। इस पुस्तक का आरंभ यहीं से होता है। कैंसर के कारण कैसी–कैसी मानसिक यंत्रणाओं को झेलना पड़ा। रोगी के साथ केयर टेकर को उससे भी ज्यादा यंत्रणा भोगनी होती है। 16–10–86 से हॉस्पिटिल से ही कुछ लिखा गया। वैष्णव देवी, अपने पुरखे को याद किया गया। अपने आपको बहुत ही दयनीय हालत में पाया। अनहोनी का भय और बचाने की कोशिश सभी का चित्रण है।

रणधीर, 31 दिसंबर की रात कैलेण्डर के बदलने पर सोचते हैं कि क्यों न 1986 साल ही गुम हो जावे, या 1987 आये ही नहीं। एक पति का भय, अकेलापन, घर का कर्ता, स्वाभिमानी, साहसी, अपनी प्रियतमा को बचाने के लिये कुछ भी करने को तत्पर, भावी बिछोह की वेदना उसे शारीरिक और मानसिक तौर पर छिन्न–भिन्न कर रही थी। सबके हार जाने

पर प्रियतमा से विनती की कि तू अब यह देह छोड़ दे। हे ईश्वर! इसे मुक्ति दे।

प्रियतमा के न रहने पर रणधीर का अकेले प्रमोशन पर जोधपुर आना और अपने क्वार्टर में अकेले रहना बहुत पीड़ादायक था। इस उम्र में साथी का बिछोह मर्मान्तक होता है। अकेलापन घुन की तरह खाता जाता है। कुछ महीनों के बाद थोड़ा शान्त हो अपने पर ध्यान दिया। पाया सब लुट गया है, अवशेष सब haunting हैं।

समय के साथ आदमी खुद ऐसी परिस्थितियों से उबरना चाहता है, पर साथ ही अपराध बोध से ग्रस्त हो जाता है। ऐसे द्वंद से निकलने पर ही व्यक्ति सामान्य जीवन जी सकता है। इस सब में बाहर का नया जन भी लहूलुहान हो जाता है, लगन सच्ची हो तो उबरा जा सकता है। एक तिनके का सहारा चाहिए। नये साथी के साथ घर बसाया पर कैंसर की सुनामी के चिन्ह जीवंत हो जाते हैं।

पम्मी दी त्रीऽ पुन्न–तित्थ–

मन जीने दी कोशश साल भर जरुर करदा ऐ,
अवो हर साल यकम अप्रैल दा खलनायक आई करियै।
मिरे मिथे दे मनसूबे गी चकनाचूर करदा ऐ,
जिदे जीवन दा नखलेस्थान भलयां, भलयां उक्खड़े दा।

Men and women who comes into your line of

vision from nowhere And vanish into nowhere,

" Could one make a deal like that,
Trade all his tomorrows for a single yesterday".

वो, तुम, मैं और कैंसर में डोगरी व अंग्रेजी में लिखित सामग्री सभी कुंवर वियागी जी यानी रणधीर सिंह जी द्वारा रचित हैं। एक दो जगह उन्होंने हिन्दी में भी लिखा है वहां उनका नाम लिखा है। 'वो व तुम' का लेखन श्री वियोगी जी के अनुसार है एवं मैं का लेखन मेरे द्वारा है। कहीं कहीं कविताओं के लंबे होने के कारण उनका कुछ हिस्सा ही मुख्य धारा में आ पाया है। एक विषय बिन्दु खत्म होने पर कैंसर का संकेत लगाया गया है। इसका कथानक काल 16–10–1986 से जुलाई 1994 है। हिन्दी कथानक मेरे द्वारा लिखा गया है।

कुंवर वियोगी
सुधा रणधीर चतुर्वेदी

सूची

वो, तुम, मैं और कैंसर

1. वो..... पृ. 9

2. तुम..... पृ. 73

3. मैं..... पृ. 119

— वो —

कैंसर हॉस्पिटिल, अहमदाबाद

16.10.1986

उपरोक्त शीर्षक अपने आप में स्व व्याख्यात्मक है। वर्ष 1986 में कैंसर हास्पिटिल में क्या हुआ था? वहां तो रोज़ ही कुछ न कुछ होता ही रहता है। बिलकुल ठीक है, पर मेरी प्यारी प्रियतमा, प्रेम–पम्मी को वहां ले जाना ही मेरे लिए दुनिया की घोर विपत्ति का कष्टप्रद क्षण था। तब कैंसर एक ऐसा भयावह रोग था जिससे बचना नामुमकिन था। उस निश्चित मृत्यु को विज्ञान आज भी टाल तो सकता है, पर निजात नहीं दिला सकता। अपने प्रिय को कोई भी परेशानी–दर्द या रोग से बचाने की कोशिश में परिजन कुछ भी करने को तैयार हो जाते हैं। डॉक्टर, रोगी और परिजनों को सान्त्वना और आशा–निराशा की नाव में लक्ष्य तक पहुंचाने की मदद करते हैं। पर डॉक्टर तो डॉक्टर होते हैं, भगवान तो नहीं?

आजकल कई शहरों में कैंसर अस्पतालों की सुविधायें हैं पर 1986 में ऐसा नहीं था। कैंसर से जूझने के लिए सर्वाधिक श्रेष्ठ अस्पताल अहमदाबाद ही हुआ करता था। आज ''कोरोना'' से बचने का उपाय मात्र सावधानी और सतर्कता है, कोई दवाई या वैक्सीन नहीं है। इसी तरह कैंसर से निजात का उपाय सावधानी और सतर्कता था और आज भी है । भोले–भाले लोगों को अचानक कैंसर अपनी गिरफ्त में ले लेता है–मालूम ही नहीं पड़ता । मालूम होता है तब, जब रोग विकराल रूप ले लेता है। सावधानी और सतर्कता आज भी ''जागरूकता'' के नाम से बचाव है। अस्सी–नब्बे के दशक में इतनी जागरूकता और विशेषज्ञता भी नहीं थी। प्रयोगों और पुनः प्रयोगों से अब भी सौ प्रतिशत निजात नहीं है। उस की अन्तिम परिणति को

विलंबित किया जा सकता है पर खत्म नहीं किया जा सकता है।

इस रोग के रोगी और परिजन सभी मानसिक, आर्थिक और सामाजिक रूप से तार–तार हो जाते हैं। परिवार की समरसता नष्ट हो जाती हैं। मूल्य, आदर्श, संस्कार, परिवार को एकजुट रखते हैं पर मानसिक रूप से बिखर जाते हैं। इन सबके पीछे एक महत्वपूर्ण सूत्र भी अपना खेल खेलता है जो अपने–परायों की और नैतिक संबल की पहचान भी कराता है। दीर्घावधि में अधिकतर सहयोगी तटस्थ या निर्लिप्त हो जाते हैं या दूरी को ही श्रेयस्कर समझते हैं।

पर एक बात निश्चित है कि 'घर' का कर्ता, वह जो कोई भी हो , हमेशा ''अकेला'' होता है। अपने को निपट अकेला ही पाता है जो उसे पल–पल कमजोर करता है पर अपने पुरूषार्थ, आत्मिक शक्ति से सामान्य बनाए रखता है।

Happiness of a family, completely depends on the happiness of its man, because when the head aches, all the body is out of its element.

घर का वातावरण स्वस्थ रखने के लिए कर्ता को सामान्य व्यवहार करना ही होता है। इससे रोगी भी स्वस्थ और उत्साही रहता है। कर्ता के निराश होने से रोगी भी हतोत्साहित हो जाता है। रोगी का उत्साही ,ऊर्जावान, आशावान होना ही पहला उपचार होता है।

कैंसर व्याधि, रोगी व परिवार को समसामयिक ही नहीं बल्कि दीर्घकालीन आघात भी देता है। रोगी के न रहने पर भी उसकी अनुपस्थिति परिवार को तार–तार कर देती है जिसके दूरगामी परिणाम होते हैं। कैंसर के आघातों का प्रभाव परिवार के सदस्यों की सहनशक्ति, धैर्य और क्षमता पर ही होना निश्चित

होता है। पर टूटन तो आती ही है जो सालों कनी समान चुभती रहती है।

रणधीर गांधीनगर में Commander & Controller (IAF) रहे थे। तब तक सब ठीक था। मई '86' में नगरोटा, जम्मू आ गए थे। रणधीर बचपन से ही माता वैष्णव देवी के अंधभक्त रहे हैं। उनका हर काम माता को स्मरण करके ही होता है। माता में अथाह आस्था और विश्वास रहा है। गांव अंबारा–गौर, चिनाब, वैष्णव देवी, जम्मू और फत्तूचौगान उनके चारों धामों से अधिक पूज्य रहे हैं। दुनिया के किसी भी कोने में रहें पर ये हमेशा साथ रहें हैं। पम्मी भी पूजा–पाठ वाली रहीं। उन्हें कभी बुखार तक नहीं आया था। सबसे छोटे देवर का passing out parade होने के थोड़े दिनों बाद मालूम हुआ कि पम्मी को रोग हुआ है। टैस्ट करवाए, विश्वास न होने पर अहमदाबाद तक जांचा गया। रणधीर का तो सारा संसार ही अनिश्चितता में डूब गया। अगस्त आखिर में पम्मी के भयानक कैंसर रोग की सैकण्ड स्टेज मालूम हुई थी। सबसे ज्यादा भरोसा माता का था और वही साथ नहीं दे रहीं थीं।

16.10.1986

को मैं और पम्मी कैंसर हॉस्पिटिल अहमदाबाद आये। टैस्ट हुए, एक–एक पल निकालना कठिन हो रहा था। माता का ही सहारा था, चमत्कार हो और सब रिपोर्ट गलत आ जाएं। जिस महिला को कभी सर भी नहीं दुखा उसे यह क्या हो गया? सारा दिन औपचारिकता पूरी करते निकला। दोनों उपर से शान्त थे। मुझे तो विपत्तिकाल में शान्त रहने की आदत थी पर जब सब नींद के आगोश में थे, मेरी नींद उड़ी हुई थी। समझ नहीं आ रहा था कि प्रेम को यह कैसे हो गया? जैसी आदत थी, विचारों की अभिव्यक्ति लेखन द्वारा हुई।

कत्तरी अगस्त उन्नी सौ छेयासि दे दिन

(*दिन हकूमत राहें वैष्णौ जात्तरां दा इन्तजाम साम्भालने दे अवसर वेल्लै किश इक रद्धे अमल*)

मना च क्रोध हा बे–ऐन्त माता तां गै में तुक्की
जुलाई, उन्नी सो बास्सी च खडजैंतर गलाया हा
निहा जकीन लेकन बिंद अपने आपे प मिक्की
मिगी इस बे–जकीनी नै बुरी चाल्ली डराया हा

में तां गै डरदे–डरदे एह् भलोका लाना लाया हा
जे इक दिन तूं जरूरी अपनी सत्ता दस्सी देनी ऐ
ते इक जकीन बनिये लाना एह मना च आया हा,
कोई भामें नेईं मन्नै तूं अलबता दस्सी देनी ऐ।

अगस्त उन्नी सौ छयासी च दाहवा जकीनी ऐ
तूं बारी दारें ते धर्म–अर्थ दे चुंगल त्रोड़े न
ते अपनी लाज़वाव सत्ता कन्नै बीन्नी–बीन्नियै
तूं अपने पाक दरबारा चा पापी कड़्ढी छोड़े न

ही पैहले बारीदारें दी प हून भगतें दी बारी ऐ
पुराने बक्त मुक्के न, नमें बक्तें दी बारी ऐ

हॉस्पिटिल में एडमिशन के साथ ही एक किट मिली जिसमें कैंसर के रोगी के केयरटेकर के लिए कुछ निर्देश और सलाह थे। एक कैसेट था जिसमें पहला वाक्य ही था... मतलब ''कैंसर एक अवश्यंभावी मृत्यु का वारंट है।'' लंबी बीमारी में रोगी और केयरटेकर को उत्साह, मनोबल, स्वास्थ्य को किस तरह बनाये रखना है।

मेरे मन में विचारों का भूचाल आया हुआ था। अपने बुजुर्गों को याद कर रहा था कि चोट पर चोट कर मेरे धैर्य–साहस

को आजमाया जा रहा है। हे! बुजुर्गों मेरी साफ स्लेट पर ये क्या लिख दिया है? रास्ता संकड़ा होने पर चलना मुश्किल है पर समतल भी नावाकिफ होने पर कठिन है। हे ईश्वर! तुम्हारा व्यवहार मधुर था पर अब पता नहीं क्यों नाराज हो। भाग्य ने हर बार करारी चोट दी है और भेदभाव किया। सब कठिन है, पर मेरे इरादे बहुत मजबूत हैं। एक तो भाग्य ने मुंह मोड़ा और दुःख दिये, दूसरा यह सब कुछ सहन करने के लिए मुझे अकेला छोड़ दिया। लोगों को इश्क का सौदा घाटे का लगता है पर मुझे तो लाभ वाला ही लगता है। अपने कर्मों के लेखों को जोड़ता–घटाता रहता हूं। बड़ी हिम्मत से इस पीड़ा से लड़ रहा हूं पर हर बार पीड़ा बढ़ती ही जाती है। दुनिया से संताप ही मिला है और हे ईश्वर ये पीड़ा तुम्हीं ने दी है ।

बजुर्गो, अस आं तुंदै सामनै कोरे सफें आंह्गर
लिखी किश कारी दा साढेरे ता जीरी दफें आंगर
बड़ा तंग दिल होंदा ऐ चलियै सौंगंड़ी गैह्लें
मदाने बिच्च आईयै चलदी ऐ नवाकफें आंह्गर
नबाकफ बनियै जे ओह् गरजी बनदे तां जरी लैन्दा
जफा तुंदी ही लेकन यारी दी जायी जफें आंह्गर
मिरे बाबर इरादें दियें तोफें सामनै आईयै
लशकर मुशकलें दे बद्दे लोद्धी दी सफें आंह्गर
गलांदे घाटे दा सौहदा ऐ इशक, पर मीं दस्सी दे
'वियोगी' गी ए घाटा कैह्ल्ली लगदा ऐ नफें आंह्गर

में जिंदगी आखरै गी इक लम्हे ही
होठें नै लाईयै जिंदगी में डीक ही लाई
दिलै दी राखी दिलै दी बसनीक ही लाई
पता नेईं कैह्ल्ली मिरे नै होए ओह् नराज

पैहली करारी चोटा शा बधीक ही लाई
लुच्चे हीखी छुटटी परंपरा नै मुंढा शा दित्ती
उस करमें दी करना जेमा–तफरीक ही लाई

चतेरा ईश्वर जदूं मी साम्भी नेईं सकेआ

दिला दी राखी, दिला दी बसनीक ऐ लाई।
होठें नै लाइये, जिंदगी दी डीक ऐ लाई।।
इशकै दी पौड़ी, खबरै, सुर्ग जंदी ऐ जां नेईं–
पर पौड़ी, तूं जादूगिरा रमनीक ऐ लाई।

पता नेईं कैह्ल्ली मेरे नै, होआ दे ओ नराज़
में गल्ल ते उंदे नै बिलकुल ठीक ऐ लाई।
में स्हाबै च कमजोर हा, कमजोर आं, ते रौह्ंङ
कर्में दी अल्ला–जमा–तफरीक ऐ लाई

सोचता हूं..... स्वर्ग की परिकल्पना जिसने भी की है, उसने मनुष्य की सीमाएं भी बता दी हैं। सृष्टि के सूक्ष्म, गूढ़ भाव व सहनशीलता को जानकर मैं जानता हूं कि फैसला मेरे हक में ही आयेगा।

ईज़ाद कीता जिन्नै सुर्ग, ओह्दा शुक्रिया–
मेंदें दी मंज़ला दी बुत्ती ठीक ऐ लाई।
बरोबरी उदी करै , इश्वर नै तां,
मनुक्खी हद्ध–बंदी तैं तफीक ऐ लाई।
श्रृष्टी दी बरीकबीनियें गी समझिऐ
मनुक्खै लीह् नकलै दी जरनीक ऐ लाई।
पता ऐ मिगी फैसला ऐ हक्कै च मेरे
बस दबदबे तै तूं नमी तरीक ऐ लाई

सच्चे इश्क की राह स्वर्ग की तरफ जाती है, सच्चे प्रेमियों को वह स्वर्गातीत आनंद मिलता है। देवता जब मेरे हक में

फैसला देंगे तब नया इतिहास लिखा जायेगा। तू मेरी मंशा को साबित करना–

मेदें दी मजंला तैं बुती ठीक ही लाई
इशकै दी पौड़ी सुर्गै गी जाने गितै लाईयै
एह इशक ऐ जां सुर्ग ऐ जाने आल्ली ऐ पौड़ी
जादुगिरै नै पौड़ी रमनीक ही लाई
तफीकै शा मता जदूं होआ मनुक्खी लोग
लाड कड्डने तै पूजा दी तकनीक ही लाई
इशकै दी सुर्गी पौड़ी सुर्ग जंदी ऐ जां नेईं
पर पौड़ी तूं जादू गिरा रमनीक ही लाई

जमीर पिच्छें, उस मिरी शरीक ही लाई
जरदा रेहा जिच्चर तां उन्नै हर करारी चोट

अहमदाबाद
17.10. 1986

आज अहमदाबाद हास्पिटिल में दूसरा दिन है। मेरे दादाओं ने अपने परदादाओं की कमाई खाई और अगली नस्लों की जड़ें काट दी। किस्मत ने स्यापा दिया और फिर कलपना भी दिया। मेरे लिए यह पीड़ा सर्वव्यापी हो गई है। दुनिया ने बड़े संताप दिए पर ईश्वर तूने भी कम संताप नहीं दिए हैं।

इक्क ते किसमतें, मीं, पिट्ट–स्यापी दित्ती।
दूआ–ए करने गितै जिंद कलापी दित्ती।।
मेरे पुरखें, अपने पुरखें दी कमाई खाईयै
अगलियें नसलें दी जड़–जड़ चापी दित्ती।
जिगरे नै पीड़ें नैं लड़ने दा जदूं जिगरा कीता
पीड़ें दे लशकरै उदी हद्ध गै नापी दित्ती।
में निहा तेरा जिकर करना, पर केह् करदा
तूं ऐ ही पीड़ मिगी–सर्ब–ब्यापी दित्ती।

बड़े संताप मिगी थ्होये न इस दुनियां कोला
पर मीं तवाऽ बी अल्ला नै संतापी दित्ती

किस्मत! आज मैं दिल खोलकर तेरे भेद खोलना चाहता हूं। मुझसे अकेले मिलना चाहती है पर जिस रोज भी मुझे भाग्य से थोड़ा भी मौका मिला तो सारा जहान नापना चाहता हूं।पर तभी किस्मत बोली कि अभी तो तुझे और रूलना है।

तूं चाहन्नी एं तां इक्कले मिलेआं नबेकलै
तुगी कलाबे मारिऐ गंदोलना ऐ में।
जिस रोज़ बी मिलग मिगी भागें दा पासकू–
अपने मकाबले च ज्हान तोलना ऐ में।

शकैत कीती किसमता कन्नै तां ओ बोल्ली
आल्ली ते तुगी होर बढ़ा रोलना ऐ में।

माहरें आंगर ऐ लिशक–बिशक कर।
उंदै गै शाना–बशाना मुशक कर।
कंजरी कसकें गी नीरन बंन्निऐ।
अपने काबुआ च कसक–कसक कर
जे 'वियोगी' लिखनी ऐ खरी नसर
मशक कर, तां मशक कर, तूं मशक कर।

गिला में कीता किसमता कन्नें तां ओ बोली,
आल्ली ते तुगी होर बड़ा रोलना ऐ में।

ए मेरा टैंट ऐ, खेडी लै आईऐ
भखे दा ऐटं ऐ, खेडी लै आईऐ
मता चिर रौह्नी नेईं ऐटां च गरमी
ए मैंटो–मैटं ऐ, खेडी लै आईऐ
'वियोगी' दी विदा लेई वाकी वचया
घड़ी सकैटं ऐ, खेड़ी लै आईऐ
में म्हेशां तरसे खादा माल्लियें गी जित्ती–जित्तिऐ
ते मेरी कामयावियें गितै ईऐ फड़ित्ती ऐ

अहमदाबाद
18.10.86
आज ऑपरेशन हो गया है।
कभी उसे नजरअंदाज न करो जो तुम्हारी बहुत परवाह करता हो, वरना किसी दिन तुम्हें अहसास होगा कि पत्थर जमा करते–करते तुमने हीरा गंवा दिया है। किसी के प्रति यदि लेशमात्र भी प्रेमभाव है तो उसे नज़रअंदाज़, अवहेलना या उपेक्षा मत करो। दिल चुराना कठिन नहीं है। प्रिय को गले लगा लेना श्रेयस्कर है। रूठे तो मना लो, ना को भी हामी में भर दो। वियोगी तो कृष्ण के भक्त हैं, अपना बना लो।

लेश–मातर जिसगी चाही लैन्नें आं अस।
घोटिऐ, गलै न, लाई लैन्नें आं अस।
दिल चुराना ते ममूली चीज ऐ
स्हाड़ै कन्नै तां मता रूसदी ऐ ओ
जेल्लै बी रूस्सै मनाई लैन्नें आं अस।
पोटें दे छोंदे गै, भोगी गरमिये
हामी नै हामी रलाई लैन्नें आं अस।
यारें कन्नै जे कोई रंजश होऐ
कालजा अपना गै खाई लैन्नें आं अस।
ब्हा–बलूनें दा असें गी शौक ऐ
चित्त अदंर ब्हा राही लैन्नें आं अस।
रोंदे–रोंदे यारें गी कुआलिऐ–
लैह्जे दे लाडै नै स्हाई लैन्नें आं अस।
अस ''वियोगी'' कृष्णा जी दे भगत आ
बर–जरूरत रोल पाई लैन्नें आं अस।

ओ मुसीबतों! वियोगी बड़ा संत है, उसे हर तरह से परख लो, उसे बहुत दूर जाना है, परख लो,उसे मौत का डर है या नहीं परख लोः

ओ 'वियोगी' सैतं ऐ, परखी लै आईऐ,

नामी मैहतं ऐ दिक्खी परखी लै आईऐं
चली जाना ई उन्नै दूर कुदरै,
बड़ा फ्रैतं ऐ परखी लै आईऐ।
मनुक्खी जीवना कन्नै मयूसी,
सदा जुड़ैत ऐ परखी लै आईऐ।
मिरे जीने दा टैंटा अल्ला–ताहल्ला,
तिरै प्रैतं ऐ परखी लै आईऐ।
मनुक्खी आतमा–परमातमा दा,
शुरू ऐतं ऐ, परखी लै आईऐ।
'वियोगी' मौती दा डर कावू करिऐ,
बड़ा निशचैतं ऐ परखी लै आईऐ।

वदकिसमती दा शरतिआ अलाज ऐ,
अपने आपे पर भ्रोसा चाही दा।

जीवन की अमुक साल की बात करो, ज़िंदगी के ज़र्रे–ज़र्रे की पहचान करो। पीड़ा भरा मन बोला– बात करने का यह मौका नहीं है। तुम कैसे थकान भरी 'मशक–मशक' की बात करते हो। जिन्होंने तुझे जींदे जी मरा समझा तो उनपर रीस करने से क्या होगा? मेरा व्यक्तित्व एक खुली किताब के समान है, उसमें कोई भी अच्छी–बुरी बात छुपी नहीं है।

छेड़ो नेईं गल्ल ओह्कड़े अमुक्क बर्हे दी,
नाका–कशी जिस कीती ऐ जीने दे दर्रे दी।
नज़रें दी दुनाली चली ही मुद्धतां पहलें
आल्ली बी पीड़ बाकी प छरे–छरे दी।
पनछान करो जिंदगी दे ज़रे–ज़रे दी।
पीड़ै गी जिगरा आखदा –मौका निं खजायो,
तुस कस्सी लैओ मशक–मशक हुट्टे–हरे दीं।
जे जींदे–जी करगे, तुसें गी मंतका समझाग
केह् फायदा ऐ रीस करिए मोये–मरे दी।
'वियोगी' दी शखसीयत ऐ इक खुल्ली दी कताब
छपैल निं कुसा थमां बी खुट्टे–खरे दी।

गरीब थकना क्या जाने? अर्थात गरीब को थकने का अधिकार नहीं है। वैसे ही सुखी लोग लुटना क्या जानें ? पीड़ा के ज़ख्मी मुसाफिर क्या जाने? मेरी फूटी किस्मत फूटना क्या जाने? मैं पाताल की थाह पहले ही पा गया था इसलिए जिंदगी को सूतना क्या?

गरीब जादे जानदे न हुट्टना ऐ केह?
परसे दा नंद साहव जादें लुट्टना ऐ केह?
ओ जानदे होई बी पुच्छै केह ऐ टुट्टया?
दिले हे सोआऽ ओहदै कारण टुट्टना ऐ केह?

जद पुट्टी ओड़ियां न जड़ां मेरियां उन्नै
किसमत नै दस्स होर मेरा पुट्टना ऐ केह?
पैंडे दा नंद लुट्टया जखमी मसाफरें
तमाश बी ने कंडै बैईऐ लुट्टना ऐ केह?

में पैहलें गै पातालै दी थाहें गी थागया
एहदे शा थल्लै जिंदगी नै सुट्टना ऐ केह?
झूरें गी इन्ना कुट्टया ब्हाऊ च उड्डेया
एहदे थमा बी महीन इसी कुट्टना ऐ केह?

तू मुझे छोड़कर कहां जा रही है? मैं भी तेरे साथ ही चलूंगा, जहां तू नहीं, वहां मुझे नहीं रहना है। तू मेरे मरूस्थलीय जीवन का नखलिस्तान है। लोगों के भीड़ भरे जंगल में मुझे नहीं रहना है।

मीं छोड़िऐ चली एं – तूं दस्स कोह्कै थ्हारै
मिम्मी ऐ उत्थें औना –तूं जाना जोह्कै थ्होरै
तिरै बगैर जीवन – में कट्टना ऐ कियां
जित्त्थें निं तूं, फी में बी– रौह्ना निं ओह्कै थ्हारै,

नखलेसतानी कुड़िये– मरूथलें च आईऐ
मेदें दी डाची चढ़िऐ– जागी तूं कोह्कै थ्हारै।

ओ आदमी ऐ असली– उसी मशहूर करदा–
औहं रमाईऐ धूनी–जेह्ड़ै भलोकै थ्हारै।

तूं जित्थें बी बुलागी– उत्थें गै आई जागा
जेह्दी मनाही करगी– जागा नि ओहकै थ्हारै।
मेरी लगन गी कोई– मेरे गुरूं गी दस्सै
में उत्थें उत्थें जन्नां–जंदे ओ जोहकै थ्होरे।

लुक्कें दे जंगलें च– रौह्ना निं में "वियोगी"
जम्मू गी छोड़ि देना– रौहना ऐ लौहकै थ्हारै।

जीवन रेगीस्थाना च में हिरणी हा तू चशमा ही
में तेरा खूजा हा मशूके तूं मेरी खुजाऊ ही
जीवन रेगीस्थाना दा नयाब तूं करिशमा ही
ते साढ़ी प्रीत–लीला सच्ची, छै लते टकाऊ ही
में जिन्ना कोल औन्दा हा तूं उन्नी दूर होन्दी ही

How I need a single frinzed night,
To take me out of myself without bar
To let my fancy roam far, a far
And not for ever with my worry fight.

हे ईश्वर! तूने मुझे थोड़े दिनों की खुशी देकर किश्तों में बेहिसाब पीड़ा दी है। पर वियोगी तो पीड़ा भोगकर भी इश्क करेगा।

खुदाबंद पीड़ देईऐ, बे–हसाबी किशतें च।
बुलांदा आदमी गी रलने तै फरिशतें च ।
मिरी, इस बाती दी पीड़ै, खलासी कद करनी
जिदा कोई जिकर हैन्नी बिदना दी फरिसतें च।
मिगी दो माह् देईऐ ईश्वर बड़ा खुश ऐ
ते मंगै करदा ऐ वापस इनें गी किशतें च।

'वियोगी' आखदा निं, ''उन्नै इशक नेईं करगा,
ओ पीड़ां भोगिऐ रलग जदूं फरिशतें च।"

सोचता हूं मेरी कहानी पंचतंत्र के उस तोते की कहानी है जो पेड़ की ऊँची डाली पर बैठकर टें–टें करता है। खुद एक पारस के समान है जिसको भी छूता है सोना बन जाता है पर खुद तो पत्थर ही है। बाहर से सारा बहुत खूबसूरत और आनंददायक लगता है पर अन्दर तो ख़िज़ाँ ही ख़िज़ाँ है।

सतचितानंद

ए कहानी ऐ पंज–तैतंरी उस तोते दै मुतल्लह्क
पर इसदा ऐ माहनू दे रिशतें नै गैहरा तल्लक
जीन हा, जिसनै बनना पारस, भक्ख बनाई दिंदे
अपने अलबम, आप दिक्खिऐ, आप–मुहारै हसदे
बाहरा–बाहरा ठीक–ठीक पर अदंर रोगी–रोगी
हामियां जिंदै अदंर होंदे खिंज–भ्रोचे झूरे
झूरे, जिंदै अदंर रौंह्दें मोये–मरे दे ड़ूरे
इस थमां बेहतर ऐ जे साथी इक दूये गी समझन
अपनी मरजी शा पहलें दूये दी मरजी पुच्छन
हिरखी मंगते बनने थ्हारै, बनन ओ हिरखी दानी
मैहरम दी लोड़ें गी पछानन, बोलन शीतल बानी
मैहरम दी मरजी गी समझन ओ अपनी गै मरजी
मैहरम गी नेईं अपने आप गी आखन ओ अलगरजी
किह्दे रौहन तां मरजी मताबक, मरजी मताबक वक्खरे
स्हारन इक दूये दे नोह्रे, इक दूये दे नखरे
ना गै बली चढ़ान ते नां गै बनन बली दे बक्करे
ना गै खौफ मनें बिच पाईयै करन मनै दे डक्करे
नमियें टाहलियें उप्पर बौंह्दे बैल्लै नेईं घवरान
कना–कना गी मेची–मेची सतचितनदं कमान।

ज़िंदगी में मुझे हमेशा पीड़ा, रंजिशें, घाटा ही घाटा मिला है। समाज में, रिश्तों में यारी में,हमेशा नुकसान ही उठाया है, कहीं कोई खुशी नहीं मिली है। पर एकमात्र इश्क ही है जहां थोड़ा सुकून मिला है। जहां मुझे स्वीकृति मिली है, अपने होने का अहसास हुआ है। रिश्ते, यार सभी मेरे पास आकर सोना हो गए पर मैं तो पत्थर ही रह गया, सिर्फ मां या इश्क ने ही मुझे सुख–शान्ति दी है पर अब ये क्षति यानी इस बीमारी से बहुत बड़ा नुकसान है। तेरा नुकसान, मेरा भी नुकसान है।

साधें गितै बरोबर होंदा ऐ बाद्धा–घाट्टा
तिरे गितै बरोबरः बाद्धा जां साधा, घाट्टा
मोई–मरी दी ईने रोना निहा दना बी
जे आप–इज्जती च पांदा निं बाधा, घाट्टा
में जद बी जिंदगी गी भागें सपुर्द कीता
मिरा तर्जुबा एह ऐ; मे म्हेशां खादा घाट्टा
तू मीं घोआलया तां चेतें शराप दित्ता
होऐ तुगी हमेशां ओ, ना–मुरादा घाट्टा
फलासफी दै ढाकै नेईं लाओ रंजशै गी
नफा–नफा ते घाटटा सिद्धा सादा घाट्टा
इक रोज यारियें दी मरदम शमारी करिऐ
मिगी पता हा लग्गा, वड़ा पवा दा घाट्टा
चट्टी भरी बथेरी, खटटी जरा नेईं कीती,
जुंगे दी हट्टी पाईए बड़ा गै खादा घाट्टा
इशकै दे ब्हा–वलूनें, राहने चा मीं वियोगी;
निही खवर जे होंदा, इन्ना ज्यादा घाट्टा।

सुनना दरकिनार सिर्फ दुखड़े बारै सोचियै,
दिल बगीचा सुक्कियै करादी ऐ के करचै।

अहमदाबाद

19. 10. 86

हे ईश्वर! मैं ख़ूबसूरत दुनिया देखना चाहता हूं, मैं कैंसर ग्रस्त श्रीमती को स्वस्थ देखना चाहता हूं , मैं इस कैंसर की पीड़ा की जगह हंसी–खुशी देखना चाहता हूं, मैं साथी के साथ सभी भोग चाहता हूं, अपने घर को सही सलामत देखना चाहता हूं, मैं अपनी त्याग–तपस्या से इस सती को फिर निरोग देखना चाहता हूं।

मती थमां मती गी दिक्कखना ऐ में
अती थमां अती अती गी दिक्खना ऐ में
थोड़ी गी दिक्खी ऐ मती गी दिक्खना ऐ में
दुनियां दी खूबसूरती गी दिक्खना ऐ में
कैंसर दा लाज तुप्पियै ब्रैहकड़ें बिच्चा
श्रीमत दी स्वस्थ मूरती गी दिक्खना ऐ में
जे लोड़ पौग, सुक्खने, सरीनियें राहें
कैंसर दी मुरदा मासती गी दिक्खना ऐ में
सड़कै दै गब्बै लेटिऐ बेहोश जन होईऐ
अपनी जरूरत दस्सनी ऐ में उसी जरूर
ते ओहदी बे–जरूरती गी दिक्खना ऐ में
इस देसै दी सलामती दिखदे निं बनेया घर
हुन घरै दी सलामती गी दिक्खना ऐ में
'वियोगी' दी तपस्सया दिखदे तां आखदे
जरूर इस सती–जती गी दिक्खना ऐ में

''जीवित चाबियों'' से सारे ताले खोले जा सकतें हैं वैसे ही ''जीन्दे तालों'' को किसी भी चाबी से खोला जा सकता है। ऐसे यार से मिलन पूरा आनंद देने वाला सच्चा प्यार होता है। सच्ची मोहब्बत में तन मिलना ही मन मिलना नहीं है वरन रूह मिलना ही मोहब्बत की चरम सीमा है।

तन ते मन

जिन्दी चाब्बिएं दै कन्नें साढ़े जन्दरे खु'ल्लन,
ते जिन्दे जन्दरें गी साढ़ियां सब चाब्बियां खोह्लन।
असेंगी मिलन ऐसे यार ते ऐसें गी अस मिलचै,
तां गै पूरा नन्द औन्दा ऐ हिरखी कलावे च।
सच्ची म्हबतें दी, रूह मलावा, चर्म सीमा ऐ,
बगैर रूह मलाबा होने दै म्हबत अधूरी ऐ।
तन होन्दा तां मन होन्दा, तन हैन्नी तां मन हैन्नी,
मन होन्दा तां तन होन्दा, मन हैन्नी तां तन हैन्नी।
में चुम्मी लेइयै पुच्छेआ केह हाल ऐ तुंदा
तां बोल्ले राजी–बाजी आं, आओ, फिरी करो।

अहमदाबाद

20–10–86

सप्तपदी– सात वचनों के निर्वाह की अक्षमता, पुरूषार्थ को लगी ठेस, मनुष्य को कितना व्याकुल, असहाय कर देती है, अपनी मर्दानगी पर भी शंका होती है। इक्कीस सालों का साथ एक संबल बनता है पर वही दुःख का कारण भी बन जाता हैं। जिसका मै मुहताज था आज वही मेरी मुहताज बनी है।

नामदरगी

(श्रीमत दे कैंसरी रोगै दै सामनै)

तेरा जिसम–तेरा जिसम
तेरी कसम–तेरा जिसम
त्रीमते–अकीमते
नमुल्लिये
ओ जिंदगी दी नेह्मते
जनानिये–मन–भानिये
असीमते
अल्लाह् दी मेहरबानिये!
तेरा जिसम–तेरा जिसम
तेरी कसम–तेरा जिसम
पंगोई आ–डंगोई आ
में केह करां ?
जेह्दा मुहताज आऊँ हा,
मेरा मुहताज होई आ।
तूं कदें ब्हौंदी निही
तूं कदें सौंदी निही
न चिल्लड़ी रौंहदी निही
मंगो तां थ्होंदी निही
ते टब्बरै ते टैंटें शा बेह्ली कदें होंदी निही

तेरा जिसम–तेरा जिसम
तेरी कसम–तेरा जिसम
पंगोई आ–डंगोई आ
में के करां
जेहदा मुहताज अऊँ हा
मेरा मुहताज होई आ।
कैसंरी रीड़ें दी भीड़
रीड़ा च भीड़े दी भीड़
भीड़ा दी नीड़ें दी भीड़
पीड़े गै पीड़ें दी भीड़
सिनका आंगू कैंसरी कीड़ें दी भीड़–
जिसमा बिच्च
तेरा जिसम–तेरा जिसम
तेरी कसम–तेरा जिसम

5.

तेरा जिसम–तेरा जिसम
तेरी कसम–तेरा जिसम
ओ जंगिये–ओ जुंविये
कदी मिये
ओ जिदगी दी संगिये
अदीमिये
'वियोगी' दी मूंह–मंगिय
तेरा जिसम–तेरा जिसम
तेरी कसम–तेरा जिसम
पंगोई आ–डगोई ओ
में केह् करां
जेहदा मुहताज अऊँ हा
मेरा मुहताज होई आ
तेरी निडर सपुर्दगी
चेतै ऐ तेरे मर्दगी
हमदर्द गी–हमदर्द गी
लेकन उदी नमर्दगी
करी नेंई सकदी दूरी तेरे एस धोगड़ दरद गी
नमर्दगी–नमर्दगी–नमर्दगी–नमर्दगी

अच्छी पत्नि गृहस्थी की आत्मा होती है। पत्नि हमेशा कुलतारिणी और भवतारिणी होती है। वहीं पति संसारतारिणी होता है।

धरिस्ती दी रूह

ओह्कड़ै दिन सारा ससतांदा ऐ ज्हान
कोई निं चौंनें च मैरू चारदा
कोई निं रूस्से मनांदा आह्नियै
जागतें गी कोई निं पुचकारदा
कोई निं सीना–परोना साम्भदा
कोई निं चुल्ले च अग्ग बालदा
जिंदड़ी दी टोरा दी रफतारा च
टोक आई जंदी ऐ ते सारा–समां
सेही होंदा ऐ कुसै गी बलगदा।
ज्हूदियें दे मज्हबा बिच इक्क–दिन,
हफते बिच होंदा ऐ विश्राम दा।
अपनी–अपनी अक्खियें गी मीटियै
ते ध्याड़ी दे सफर गी भुल्लिऐ
करदे न विश्राम जे जगालियां।
पर ओ मेरी भोलिये त्रीमते
तेरे तांई कोई बेहला वकत निं
ज्हूदियें आंगर कोई बी दिन निसो
मरदें आंगू सज़ा दा बिश्राम निं
वार निं, अवकाश निं, त्योहार निं
इक्क बी ते नामें तांई बार नेईं।
तेरी इस दुनियां गी चितां निं अखें
रात–दिन तूं हर घड़ी ते हर समै
टब्बरै दी गड्डिया गी रेड़नी
टब्बरै दे मूंहा उप्पर पर तिरा
भुल्लिऐ बी जिकर निं औंदा कदें

अशकें इसी तेरी बिलकुल लोड़ निं।
इक्क–दिन गै, प्यारिये, बस इक्क–दिन
कम्मा कोला हत्थ–पैर खिच्ची लै।
अपने हत्थें दे चिने दे तूं किले
अपनी अक्खियें नै हौंदे दिक्खी लै।
गल्ल में आखा ना बिलकुल साफ–साफ
नां कुंसै दे हक्कै च नां बरखलाफ
तूं गै साढ़ी जिदगी दी रूह एं
होर निं कोई, ऐ तूं गै तूं एं। -----

हिरखा दा इक तरल तोपा ऐसा किरया आनियै,
जीवन सागरै दी सारी कौड़तन पीन्दा गया।

सरके सरके सर से चुनरिया
लाज भरी अकखीयनें मे,
नैनो में निंदियां
निंदियां में सपने
सपनों में साजन जब से बसा
बहार आई जीवन में
नई शद्दत है तनम न में
इक रूप बसा है अक्खियों में।
–कुंवर वियोगी

भाई, बहन, नाते–रिश्तेदार, दोस्त और बरादरी वाले कहते हैं मुझे दुनियादारी नहीं आती है। पर मुझे जो ठीक लगा मैंने किया, अपने को नगण्य मानकर जीवन में अथक जूझता रहा, न मानो तो जांच लो...ओ बहनों, मैने पूरी ताकत से तुम्हें योग्य बनाने की कोशिश की, भाईयों तुम्हारे पोतड़े धोने से लेकर अफसर बनाने की अपने तरीके से कोशिश की, दोस्तों तुम्हारे साथ पूरी दोस्ती निभाई और हे

बरादरी वालों, तुम्हारी कमरतोड़ परंपराओं को मैने नहीं माना। आज तुम बड़े लोग हो गये हो, अब तो मेरे योगदान की छीछालेदारी मत करो, मैंने अपने जीने के साथ भले ही बेईमानी की पर तुम्हारे साथ अपने अनुसार अच्छा ही किया। पर यह तुम नहीं समझोगे। मै अकेला था, अकेला ही हूं पर अपने में सक्षम हूं। तुम अपने शहर में खुश रहो, तुम्हारा चारों तरफ यश फैले, और मुझे अपने अनुसार जीने दो। मेरे कर्मों का मैं ही जिम्मेदार हूं। मेरी कोई देनदारी नहीं है।

जवाबदारी

मिरे, भैहनो, भ्राओ , दोसतो, बरादरी–दारो
तुस जे आखा दे ओ ठीक गै तां आखा दे होगे

चलो मन्नी लेआ मीं जाच हैन्नी दुनियांदारी दी
चलो मन्नी ले आ जे मेरी कारी, ने हैन्नी कारी दी
चलो मन्नी ले आ, मेरे च त्रान, जोश हैन्नी सो
चलो मन्नी ले आ मीं जीने दी बी होश हैन्नी सो
तुस बालग ओ, सयाने ओ, बाल–बच्चें आले ओ

ओ भैहनो, मापे हे असें गी जेल्ले कल्ले छोड़ी गे
जदूं तंगी नै मेरी हसतिया दे हड्ड ठोले हे
जदूं मेरे शरीरा आसतै फट्टे दे टल्ले हे
जदूं मेरी सगीरी पर हे हसदे लोक म्हल्ले दे
तुसेंगी मैहंगें ते नेईं–छैल पर टल्ले लो आये हे
तुसाड़े वेश–वूशा पैहलें शा वेहतर वनाये हे
तुसाड़े लगन कीते खंदे ते पीदे घरें अंदर
तुसेई मान–मरयादा मिले जंदे घरें अंदर
में तुंदा मां–बब्ब हा,, में तुंदा बड्डा भाई हा
रवैईया मेरा, उस बेल्लै वी भैहनो पारसाई हा
हुन मेरी दुनियां दारी च ऐ कियां– खुट्टं आई आ

भ्राओ निक्के होंदे लै तुसाड़े नक्क बगदे हे
पजामें विच हे तुस मूतर दे, कच्छे च हगदे हे

तुसाड़े पोतड़े में अपने गै हत्थें नै धो दां हा
तुसे गी एहदी जाच दस्सने च नंद औंदा हा
तुसाड़े सुखने गी में संडिऐ बसीह कीता हा
तुसें गी बड्डी हीखियें हवालै फी कीता हा
ते हून, सारे तुस साहबे–जदैद–आऽला अफसर ओ
मुहताज नेईं कुसै दे, नां कुसै उप्पर मुनन्स्सर ओ
में तुंदा दोस्त ते फिलासफर ते–तुंदा राखा हा

ओह् मेरे दोसतो, इन्ना तुसेंगी याद गै होना
जे मेरी हीखी ही कवत्ता दे खुल्ले गासें च भौना
मीं लफजें दी परी नै अपने बस्सा बिच्च हा कीते दा
मिगी हा तोबरा चाढ़े दा उस सनी सलीते दे

मिरे बरादरीदारो तुस इन्ने तौले भुल्ली गे
में कियां तुंदी रूहे चा समाजी भोगड़ कडढे हे
ते कियां त्रोड़ेआ हा में कमर–त्रोड़ रसमें गी
आजाद इंदे शा कीता हा कियां तुंदी रूहें गी

मिरे, भनो, भराओ, दोस्तो, बरादरी–दारो
में तुंदा देनदार हैन्नी सो मेरे सुखी यारो
में पैह्लें बी छड़ा दित्ता ते हून मंगा दा किश निं
मिरे देने दे उप्पर हून बी लग्गे दा अंकुश निं
मिरी मरजी ऐ, तुस फुल्लो फलो धरिस्तियें अंदर
तुंदा यश फैली जा दुरेडी बसतियें अंदर
चिंता नेईं करो में, तुंदी बस्समें च नेई रौह्ना
में अपनी हसती गी नकारियै फक्कड़ निसो होना
तुसाड़ी सोझें शा परेडे कर्म–जोग न मेरे
रूहानी गुद्धे चेचे चिंतनी सजोंग न मेरे
'वियोगी' आं ते डाडे–डाडे सब 'वियोग' न मेरे

चलो मन्नी लेआ, मीं जीने दी बी होश हैन्नी सो
अवो बनो नां जडज, नां खडेरो मीं कटैहरे च
जद में आं अपनी बस्समां च तुस ओ अपने शैह्रें च
तुसें नां समझेआ, नां समझादे, नां समझना मिक्की
प बारै सोचियै तबीयत करेआं नेईं फिक्की

में आपूं–अपने आपैं तैं–अते आपें तै काफी आं
में जो किश आं ओ अपने होनी दी चेची तलाफी आं
छड़े चिंतमनी बनने दे तुस रवाजें गी भुल्लो
फिकरमंद मेरे तांईं रूहे दी बुआजें गी भुल्लो
तुस बालग ओ स्याने ओ बाल बच्चें आल्ले ओ
मिरे भैना, भराओ, दोसता–बरादरी दारो
रिजक मंगा, रिजक बदलै, बारीदार हैन्नी सो
में अपने कर्में तैं तुंदा जवावदार हैन्नी सो
जे औगे तुस तां सिर मत्थै–जे नेईं औगे तां ओ जाने -----

संसार ऐ इक गह्न भलेचा मिरे तांई,
दुयें गितै जो झूठे–सच्चा मिरे तांई।

कैंसर का मालूम होने पर वैसा ही धक्का लगा जैसे तबादले का सुनकर लगता है। हमारी आत्मा चोला बदलती है। जन्म होता है, शरीर फलता–फूलता है, अपना संसार बसाता है और समय आने पर पल–पल में क्षय होते अंततः शरीर छोड़ना पड़ता है। त्रिआयामी संसार से बहुआयामी संसार में प्रवेश करना होता है। एक जगह से दूसरी जगह जाना हरएक की नियति होती है। रेलयात्रा, जीवनयात्रा, नौकरी में एक स्थान से दूसरे स्थानांतरण–चाहे अल्पकालीन हों या दीर्घकालीन हों जाना होता है। बनाये मधुर संबंधों को छोड़ नयों के मध्य पुनः स्थापित करना होता है। तबादले का आदेश मिलते ही बैचेनी, विचलन और व्याकुलता घेर लेती है। फिर से बिस्तर बांधना कठिन, दुस्तर होता है। ऐसा क्यों? सर्वस्व लुटते देखना आसान नहीं होता है। इसे स्वीकारना ही कठिन परीक्षा है, एक बार स्वीकार करते ही परिदृश्य बदल जाता है। उस अवश्यंभावी को थोड़ा आसान बनाने में जुटना होता है। कैंसर का आभास होने की शंका सबसे कठिन घड़ियां होती हैं। आशा–निराशा के बीच संदेह, टैस्ट रिपोर्ट का इंतजार सबसे भयावह समय होता है। अनचाहे, क्रूर शत्रु से आंख मिलाने में डर लगता है, आंख बचाने का ही मन करता है।

पॉजिटिव रिपार्ट आते ही आंखों के सामने अंधेरा हो जाता है, निर्जीव हो जाते हैं, ज्ञान शून्य हो जाते हैं। कहीं कुछ गलत है? विश्वास नहीं होता है। कैंसर रिपोर्ट अस्सी–नब्बे के दशक में उस अवश्यंभावी का फरमान होता था। तबादला आदेश आ गया है उसे रोका नहीं जा सकता है, हां थोड़ा टाला जरूर जा सकता है। कैंसर के लिये शिक्षित करने वाले कैसेट्स में पहला वाक्य ही होता था.... मृत्यु का फरमान।

तबादला

भला होआ! भला होआ! भला होआ! भला होआ!
अखीर इत्थुआं "वियोगी" दा तबादला होआ।

एह् कोई थाह्र ऐ जित्थें कोई चंगी नौकरी करदा,
ते चंगी नौकरी करियै तबीयत रस–भरी करदा
ए ऐसा थाह्र ऐ जित्थें में जिन्नी बी खरी कीती,
भागें मेरै कन्नें बिलकुल उन्नी गै बुरी कीती।
में खुश आं एह्कड़े वतनै थमां तबादला होआ–!
भला होआ!
चौन्नैं–कूट्टें में खज्जल होआ तबादले तांई,
मगर कुसै निं कम्म कीता इस किसमत जले तांई।
जिसी बी आखां ओ पैह्लें, मिरा निशचा अटल दिक्ख।
फिरी र्हानगी कन्नै मिरी सूरत–शकल दिक्खै।
ते सुनियै नाह्–नकोरां दिला हा बेदिला होआ

जदूं मीं समझ आया जे तबादला अगर करना,
तां मरना चाही दा बंदे गी फ्ही जेकर पवै मरना।
फी तां गै अपने हत्थें गै में अपनी जान लेई लैती।
करनी पैह्लें जो करनी चाही दी ही करी लैती।
खतम तां मेरे पछोतायें दा सिलसला होआ।
भला होआ! ?
अखीर इत्थुआं "वियोगी" दा तबादला होआ।
भला होआ! भला होआ! भला होआ! भला होआ! --

जदूं दी मी सम्हाल ऐ, जदूं दी होश ऐ,
तसीर मेरी रुहा दी खानाबदोश ऐ।

सृष्टि जैसी है वैसी ही रहेगी, उसका आधार बदलता नहीं है। न ग्रह बदलेंगे न ग्रहपथ बदलेंगे, न धरती की धुरी बदलेगी। इसका केन्द्रबिंदु बनने की इच्छा हमेशा मनुष्य में बनी रहती है। समय के साथ दुनिया चलती रहती है, संसार रूकता नहीं, आना जाना लगा रहता है।

सिफर

सरिश्टी जियां ही रेही उआंगै
शरिश्टी दे अधार नेईं बदले
संसकारें दे निजम नेंईं बदले
निजमें दे संस्स्कार नेईं बदले
ग्रैहें बदलना निं ग्रैहयें पथें गी ते
धरती अपनी धुर बदलनी निं
एह् केंदर–बिंद् बनने दी ही हीखी
माह्नू दी सजीव रौहनी ऐ .....

धरती सूर्य का चक्कर लगाती है और चंद्रमा धरती का चक्कर लगाता है। सूरज की रोशनी ले चंद्रमा धरती को रोशन करता है और धरती पर चांदनी का सृजन होता है। ऐसे ही सच्चे प्रेम की रोशनी से मैं तुम्हें चांदनी देता हूं। मेरा सारा संसार तो तेरे इर्द–गिर्द ही घूमता है, तू ही मेरी धुरी है, तेरी ही रोशनी से मैं चमकता हूं। तू मेरी धरती, मै तेरा चांद हूं।

चाननी ते धरताननी..

धरत घुमदी चगिरद सूरज दै..
सूरजा दी रोशनी लेइयै,
चन्न ते धरतरी जियां,
चाननी–धरताननी सिर्जन,
अस दमैं हिरखै दे रिणकारी,
हिरख–भानू दी रोशनी लेइयै,
में तुगी आं चाननी दिन्नां,
तूं मिगी धरताननी दिन्नी,
हिरख–भानू दे गिरद तूं घुम्मैं,
गिरद तेरे में हर समै घुम्मां
चगिरद तेरे गै घुम्मने मूजब,
गिरद हिरखा दै फेरा पान्ना में,
पर तिरै चिगरद घुमदे लै,
हिरखा शा धरताननी लेइयै,
लैहंदे शा गै चाननी लेइयै,
लीकरा दा में तुगी चुम्मां,
मचन सारै हिरखै दियां धुम्मां।
तूं मिगी धरताननी दिन्नी,
हिरख–भानू दे गिरद हूं घुम्में,
गिरद तेरे में हर समै घुम्मां

जीवन की परीक्षायें यात्री को संबल देती हैं, कुछ पाने का अहसास कराती हैं। हर कठिनाई ऊँचे पहाड़ की चढ़ाई सी नज़र आती है, हर चढ़ाई दुनिया की सबसे ऊँची चढ़ाई लगती है पर चोटी पर पहुंचने पर लगता है नीचे खाई है पर अभी तो और ऊँची चढ़ाई पार करनी है। हर सफलता/असफलता आख़िरी नहीं होती है, उसके बाद भी बहुत कुछ है, जिसे पार करना है। कैंसर की लड़ाई भी ऐसी ही है, कभी लगता है ठीक हो रहा है, कभी फिर खाई में लुढ़क जाते हैं।

The day I looked up from its base, the cliff
Appeared to be, highest peak of earth.
Unconquered, unencircled, beau as if,
Admiring its own Hottentotish girth.

Me thought, to climb and conquer it was hard
But as my wish to do something was strong,
I started climbing yard by fearsome yard
Because I think inaction to be wrong.

Yard by dangerous yard as I climbed,
Uncounted higher cliffs came in view.
I felt my urge to climb was rightly timed
Because with sense of déjà vu I knew.

I wondered climbing, as the air cooled.
How easily can the ignorants be fooled.

(the mortals be befooled)

(“ when the curtains fall the best thing an actor can do is to go away.”)

हे भगवान! मेरी ज़िन्दगी के हर सफ़े पर पीड़ा के धब्बे क्यों हैं? तबादले के फरमान के बाद धीरे–धीरे लोग उस आघात से सम्हलते हैं । समय के साथ सत्य का परिचय होता है और हर हालत में उसे पचाने की अनजाने ही कोशिश शुरू हो जाती है। देवी–देवता से प्रश्नोत्तर होते हैं, अपनी गलतियों, कमियों को परखने का प्रयास होता है, सर्वशक्तिमान से शिकायतें होती हैं। धमकी दी जाती है, मनुहार की जाती है और आख़िर में समर्पण कर उसी पर सब छोड़ दिया जाता है।

दिक्खी लै काकलें दा ए थ'ब्बा मिरे यारा,
सफे–सफे पर पीड़ें दा धब्बा मिरे यारा।
लेई आंदा चुनियै जिंदगी दी बत्ता पर बगदे,
जो किश बी चंगा लग्गा ते लब्आ मिरे यारा।
तूं बड्डा ऐं सब्मनी थमां पर बोला ते हैन्नी,
की रीनी मेरी सुनदा निं, रब्बा मिरे यारा।
खब्बे गी पता दा होंदा निं आखदे,
सज्जा ऐ केह् नेईं जानदा खब्बा मिरे यारा।
मेरे दिला गी भुन्नियै, होन्नां ऐं की दुखी?
जेल्लै में एह्दा मारना चब्बा मिरे यारा

नगरोटा

31—12—1986

कैलेंडर, काल का हरबा है, ग्रह—पथ का लेखा है। अपने जीवन में इस कैलेंडर की कुछ तिथियों को यादकर हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव करते हैं, वहीं कुछ को हम जानना भी नहीं चाहते हैं। एक अगस्त को पम्मी और मेरा गठबंधन हुआ था उसके बाद लगभग पन्द्रह दिन शिमला में हनीमून मनाया था और मेरा घर बसा था। उसके बाद छब्बीस सितंबर आता है जो एक त्यौहार स्वरूप है, कारण वह पम्मी का जन्मदिन होता है। एक दिन और प्यारा दिन है—चार सितंबर, यह मेरा जन्मदिन है। 31 दिसंबर 86 की रात तारीख बदलने वाली है, नया साल आने वाला है। इसका स्वागत सारा संसार कर रहा है पर रणधीर के अशान्त मन में साल बदलने का स्वागत नहीं वरन् रोकने का भरसक मानसिक प्रयत्न हो रहा था। घड़ी की सुई को रोकने का मन हो रहा था, बस चले तो सुईयों की घूमने की दिशा बदल दे। सन् 1986 को ही अस्तित्वहीन कर दे। इस कैलेंडर को ही फाड़ दे। बिल्ली को सामने देख चूहा आंख बंदकर सोचे कि बिल्ली चली गई। कैंसर काल के हरबे कैलेंडर को ही रणधीर फाड़ डालना चाहते थे।

कलैंडर—1

छेआसी ईसवी दा सामने मेरे कलैंडर ऐ
तरीक कत्तरी ऐ अज्ज ते म्हीना दसम्बर ऐ
अद्धीं रातीं लै अज मिलना ऐ इन्नै सतासी गी
पचासी पिछलै साल जियां मिलेआ हा छेआसी गी

अद्धे काकला उप्पर छपे दा दक्ख शिमले दा
मिगी चेता करा करदा ऐ अज लक्ख शिमले दा
पंजी साल पैहलें लाड़ी कन्नै में गया उत्थें
अकल—भलकेरमे में पंद्रांह दिन हा रेहा उत्थें

सारा साल दिखदा आयां में नजारा शिमले दा

क जियां जानना में भेत–शेत सारा शिमले दा
मगर छब्बी सतम्बर गिरद इक पैंसल दा घेरा ऐ
ए जेह्दा जनम दिन ऐ अजकल ऊऐ हाकम मेरा ऐ

मिरे ललेह्डुयें जेहड़े मिगी तोह्फे पुजाए हे
में इस दिन एह्के धाडुऐ दै थानै प चढ़ाए हे

कलैंडर–2

सतम्बर चार इक ममूली दिन ऐ बाकियें तांई
अवो ऐ मेरे तैं मखसूस अम्बर टाकियें तांईं
में इस दिन जम्मिऐ, में मन्नना थरथल्ली निं पाई
समे दी जांगली बिल्ली दै गलमै टल्ली निं पाई

ते भामें मेरी कारकरदगी दा दकख केह्रा ऐ
ए दिन प्यारा लगदा ऐ, जनम दिन कीजे मेरा ऐ
जदूं जजबें दै कन्नै लफजें दा संयोग होया हा
जदूं अलोपता नैं मिलने दा संजोग होया हा

मिरा जी करदा ऐ जे एह्कड़े दिनें गी छांटी लैं
छयासी दे कलैडंरा चा किश हैसे ठोआंटी लैं
उनें गी फी सतासी दे कलैंडरा च पाई ओड़ां
सतासी दी पनीरी गी यें इंदी पयूंद लाई ओड़ां

छेआसी ईसवी दा सामनै मेरै कलैंडर ऐ
ए पिछले साल्ला दे बहु मंजले मैह्ला दा खंडर ऐ

कलैंडर–3

अद्धी रातीं लै में ए कलैंडर फाड़ी देना ऐ
इसी माजी दी काल कोठड़ी च बाढ़ी देना ऐ
सतासी ईसवी गी घोटिऐ गलै नै लाना ऐ
छेआसी गी पचासी आंगर में फी भुल्ली जाना ऐ -----

वर्ष 1962 में मैं छुट्टियों में घर आया हुआ था और पम्मी को पहली बार एक फंक्शन में देखा था। देखते ही लगा मैं इसी से शादी करूंगा। और छानबीन करते, दीवानों के समान कालेज के चक्कर लगाकर सब पता किया और अपने माता–पिता को

अपना निर्णय बतलाया पर उन्होंने इतने बड़े घर की लड़की के यहां रिश्ता भेजने के लिए मना कर दिया। तब मैं खुद ही उसके बड़े भाई से मिला, उन लोगों ने कुण्डली मिलाने को कहा। मेरे घरवाले राजी ही नहीं थे और मेरी कोई कुंडली थी ही नहीं । बहुत कहने पर मां ने कुंडली मंगवाई और मिलान के लिए बात की। कुंडली आ गई। कुंडली मिल ही जावे इसके लिए मैं खुद ही कुंडली लेकर पंडित के पास गया बोला–मेरी कुंडली नहीं है, आप ऐसी कुंडली बनावें जो इस कुंडली से मिल जावे। थोड़े पैसे देने पर वह मान गया, और मेरी कुंडली बन गई। सारे गुण मिल गए। पंडित ने पम्मी की कुंडली की ही कॉपी कर दी थी। सब आश्चर्यचकित थे पर मां सब समझ गई थी, अब किसी को भी मना करने का कोई कारण नहीं था और हमारी सगाई हो गई। फिर एक अगस्त 1965 को हम एक सूत्र में बंध गए।

हनीमून काल में हम मशोबरा भी गए थे।

MOSHOBRA (Simla hills)

Where great Himalayas with Shivaliks meet.
Engulfed by towering pines. I think of it.
I once with Pammi visited this retreat,
Where once again I come and brooding sit,

Recapture blissful moments with my spouse,
With sweet remembrance I my love enhance,
For one enamored moment. every grouse ,
Is buried in this lovely circumstance.

For what enlivens this, my baffled self,
Is this that once so easily I harpooned?
My fears of all wants and lack of pelf;

When I with Pammi came and honeymooned

When selfsame fears come, existence haunt,
I think of it and conquer all my want.

हरखा दा इक तरल तोपा ऐसा किरया आनियै,
जीवन सागरै दी सारी कौड़तन पीन्दा गया।

बाद में हम एक बार पत्निटॉप भी गए थे। बहुत ही खुशनुमा था।

VISIT TO PATNI TOP WITH HER

When hand in hand in lovely woods we roamed,
Of pines and furs and birches so serene,
We hugged and kissed and laughed and now entombed,
In memory lies this happy happy scene.

Was every nook and corner by us combed-
What heady moments, what wild vagrant mood
Was ours. This love-laden aptitude
By lisping whispers of these veterans groomed.

Though gnarled by roaring winds, they brooding stand;
Time- honored, leafy cushions at their feat;
And pointing needles skywards in the air-
We hidden in their shadows hand in hand:

You whispered this to me in that retreat,
"All things are lovely when my love is here".

प्रेयसी का दर्शन सुखकर होता है, देख–देख कर मन भरता ही नहीं। स्पर्श इतना सुखकर सुकून देने वाला होता है कि संसार की व्यथा–कथा काफूर हो जाती है।

LOVE POEM

If mere touch of your beloved fingers,
Is sufficient to make me years younger,
Perform this miracle and rejoice,
Erasing every wrinkled nagging worry.

Your many pleasured presence and its flurry,
Your musical and cooing, honeyed voice;
Your thousand pleasured breasts, and my hunger,
For everything, in which your fragrance lingers,

Are elements so strongly volatile,
That if you hold me closely for a while,
Then limping years, with a tread virile,
Would flit me back along the endless mile,

To regions ere my birth- wholly lost;
In getting you—beyond my pathless past.

1. Love, is not all- eat, drink nor sleep, nor roof,
   nor strws for drowning men.
2. Love cannot full lunge- breath- nor clean blood-nor
   our bones- yet men die for want of love.
3. In difficult hour, it is possible for me to- when heart
   moans- or nugged by lack of will- I will see love

4. It is possible but I don't think, I would do that ever.

मिथुन–मोसम च मस्त साहन मुशकां सिधियै भामें,.....
अवो मीं दिक्खियै जनैन्त, जे कोई मुस्करादी ऐ,
मिरी हस्ती च खशबुआं गै खशबुआं फलान्दी एं।

मिथुन मरजी दमागा च जनम लैन्दी ते मरजी ऐ,
शरीरक मरजियें कन्नै सदा खिलवाड़ करदी ऐ।

वियोगी सोचते हैं––जिस रोज तूं बनी मिरी शरीक जिन्दगी,
उस रोजा थमां होई ठीक मेरी जिन्दगी।

पम्मी सोचती है कि हे बाबुल!–– मलंग वियोगी से मेरा ब्याह कराया जो बेपरवाह, नादान है पर मेरे को लाड़ से गले लगाया, उसे परखा तो वही मेरे जीवन का आधार बन गया है।

अपने हत्थें कन्नें बाबल जी तुसें व्याहियै मीं;
कीता हा हवालै सिरफिरे कुंवर वियोगी दै।
कुंवर वियोगी नैं सिरफेरमा वजद सखाईऐ मीं,
सपुर्द कीता हा अनमुक्कमी संभोग अग्गी दै।
नदीदा व्हाऊ नैं, मीं लाडै कन्नें मारियै जप्फी;
अपनी कुग्घली, मलूक गुणवृति गी देई दित्ता।
नतीजा एह् होआ जे हून ''वियोगी'' डौरा–भौरा ऐ,
ओह्दा जीन, जीन हैन्नी सो, जीने दा छौरा ऐ।

मेरी शादी एक मलंग से करवा दी, जिसे दुनियावी चीज़ों की परवाह नहीं है तो मुझे भी इन दुनियावी चीज़ों की जरूरत नहीं है। जैसे धरती–आकाश का जुड़ना है वैसा ही मेरा उसकी फकीरी पर फिदा होना है। उसे अपने को सौंपकर अब मुझे किसी दौलत की जरूरत नहीं है।

मदगमता

मिगी व्याहाया ऐ जद इक मंलगै कन्नें पापा जी,
मिगी जिमीं, जदैद, चीजें, वस्तें दी जयरत निं।
मिरे पर आशे ऐ ओह् अंगै–संगै कन्नें पापाजी;
मिगी दुनियावी ते दरूस्त रस्तें दी जरूरत निं।
जियां जुड़दी ऐ उफ्कै प धारती अम्बरै कन्नें,
बिलकुल उआं गै में आशक आं ओह्दी फकीरी प।
ओह्दे होन्दे होई मीं दौलतें दी लोड़ निं पौन्दी,
मैथुन प्रेमी, पुलिंग, नर मिरा, सिंधी, संभोगी ऐ,
ते ओह्दा पूरा नां रणधीर सिंह कुंवर वियोगी ऐ।

प्रेम में भीगे एकमात्र साथी तक दुनिया सीमित होने से जंगल में भी मंगल होता है, महल हो या झोंपड़ी हो कोई फर्क नहीं पड़ता है।

Ah! Once upon a time, there lived a chief
Who had a beautiful and charming wife
Who with her very presence made his life
A dreamy blissful heaven . To be brief

There was no lady like her in his life
Who loved so want only and played the fife
To banish all his wory and his grief
This legend is believed to be rife

Till to-day. People say this charming wife
Was able to defeat the greatest Thief
This world possesses-Time and filled his life
With honeyed happiness and reliefe.

Her love was like a double edged knife
Which cut away all his minds' senseless strife.

प्रेम, प्यार, मोहब्बत, लव, असली प्रीति, प्रणय, पसंद, इश्क, सबका मतलब प्रेम है, पर क्या ये प्रेम के पर्यायवाची हैं? प्रेम के कई रूप हैं, अपने उदात्त रूप में प्रेम सिर्फ देना जानता है, कुछ पाना नहीं। प्रेम करना कठिन है। अपने सर्वोत्तम रूप में हर प्रेम कहानी में देह नगण्य हो जाती है और भावना प्रधान होती है।
कबीर के अनुसार प्रेमी में एकाकार हो जाना ही प्रेम की पराकाष्ठा है। प्रेम क्या त्याग मांगता है? या अपने आपको भूल जाना? क्या प्रेम में देना ही देना है? या कुछ पाने की उम्मीद करना प्रेम का अनादर है। प्रेम में एकाकार होना ही प्रेम की चरम सीमा है।

MOON AND LOVERS

Like moon to moonlight, love to lovers is,
And moonlight like a dazzling arch, sprays
The lovers meeting in the night. Love gives
Such high intensity to its surveys
That without love, the lovers are forlorn,
Like bamboos not yet hewn to make the flutes
And without moonlight, moon of beauty shorn,
Like trees uprooted have all withering roots.

प्रेम में हमेशा रस ही नहीं बरसता है, मान–मन्नुवल, रूसा–रूसी भी होती है पर ये सब उपरी सतह पर ही होता

हैं। नीचे के तल हमेशा शान्त–गंभीर ही रहते हैं, कोई हलचल नहीं होती है।

Love, hold your dagger, let me count my wounds,
Some closed, some closing and few still agape
With – hold and leash your furious, snarling hounds
Till I apply some balm and find some tape.
Love give me such a brisk and tireless pen
That when I write – I write of love of men.

चकोरदिल

तेरे चेते –तेरे चेते–तेरे चेते संवारा नां
में अपनी कल्लियें घड़ियें गी इस चाली गजारा नां
ओ मेरा रात रात भर कतावें च मगन रौह्ना
ते तेरा उड्डी उड्डी रातीं लाटू सालना चेता
ते मेरा भुल्ली जाना चीज धरिऐ वेध्यानी च
ते तेरा खिन्जी खिन्जी चीजें गी समालना चेतो
विजन तेरै ते घर ते भूतें दा वन्गला वनी जन्दा
सज़ीली चीज तेरी हर मिगी दिक्खां ते खन्दी ऐ
मिगी निरजीव लगदी ऐ घरा दी चूक हर कल्ली
चली जन्नी एं तूं इत्थू तां सब रौनक वी जन्दी ऐ

My GODESS
I owe
You know thing is there
That leaps from in
And outward goes
And rolls and rolls and rolls
And rolls and----------

BLUNDER

My love is with me sore and much annoyed,
With pristine anger flushed. Her shallow breathing,
connotes that in her heart she sure is seething,
With blazing eyes she stares. I avoid
Well! I was deep in her love and proud of you,
I made an ass of my myself what to do?

हम मिले, साथी बने, प्रेमी बने, गृहस्थ बने, ''घर'' बनाया जहां अधिकतर समस्याएं सुलझाई जाती थीं, सब बड़ा अनोखा, आश्चर्यजनक रूप से सफल लगा। सोचने लगा भविष्य में जो भी विपदा, अड़चनें आयेंगी सबसे निबट लूंगा। पम्मी को भी मेरे पर अन्धविश्वास होने से सोचती थी कि मैं भाग्य भी बदल सकता हूं। पर भाग्य ने एक ही वार में ऐसी ताड़ना दी कि होश फाख्ता हो गए। और हमें अलग कर दिया, बिछुड़ने पर मजबूर कर दिया। उस तक पहुंचने का कोई तरीका भी नहीं है।

We met and lovely home, together made,

In which we lived and loved and then evolved,
A system with which difficulties were solved,
A system in which happiness stayed.

In spite of this I cautioned you not,
Start thinking I can conquer everything.
But in a foolish way, I also thought,
That I can beat whatever fate can bring.

But loathsome fate's single tiny sting,
Has taken you away from me forever,
And although I have handled know and king.
Yet fate has shattered us and one endeavour,

This is a room for which I have no key,
This is a wall, past which I can not see.

रणधीर द्वारा लिखित पुस्तक ''घर'' को बहुत सराहा गया था। ये मुझे समझाते थे कि 'घर' कैसे लिखी गई थी। उनको आइडिया कैसे आया? जब एक जोड़ा बनता है तो अपने घोंसले के बारे में सोचता है। अपने भावी परिवार के लिए सोचता है। घर कैसा होगा? एकान्तिक विचार और परिस्थितियां ऐसी बनी थीं कि भविष्य में अपना घर बनाने का सपना टूट गया। चालीस पार होने पर आदमी के पास इतनी उर्जा और शक्ति, धनार्जन की क्षमता नहीं बचती कि वह घर बना सके, कारण अपनी तीन लड़कियों का भविष्य भी देखना था।

आदमी जब कठिनाईयों–आपदाओं से त्रस्त हो जाता है, तो वह आध्यात्मिकता की ओर मुड़ जाता है। आकांक्षाओं के बाधित होने से मन आत्मदर्शन की ओर झुकता है, जो है उसी में संतोष कर मन को समझाता है। ''घर'' क्या है? चारदीवारी, 'घर' नहीं है, तो घर क्या है?..... उत्तर है, पुस्तक ''घर''।

HOME

A home is like a temple, diocese
And from its bowels men are outward hurled
To tackle fangled fury of the world
And opportunities, made and seize

With witlessness or with skillful ease
Like unrestricted giggling flight of geese
Or sauntering doggedness of mighty hons
Who give and take the blows, as they please.

And bleeding, from *enceinte's* girding lions
Return to waiting homesteads in the end
Where families lick their wounds. give release
From vigilance and caution and extend.

Exhort them to for the moment cease
To delve in world affairs – live in ease.

घर, दरबदर होई जाने दे डरै दी देन ऐ,
डर ते–दर–बदर होने दा पर घरै दी देन ऐ।

FAMILY

A wife is like a lioness in the cave
Who suckles snarling cubs while the lion
Is like a husband, who must daily brave
The fury of the world and then join

The lioness and the cubs, with the food

To assuage their hunger, with their eyes
They love the lion an' this happy brood
Is satiated. These heavenly ties

Are stuff, which does impart some little worth
To lives of human beings. Meaningless
Would otherwise be all this worldly strife
And with each passing moment, less and less.

Would mean to human beings. Than their life
What countless combinations must have tried.

तुम्हें, मेरा प्यार कुछ लेना नहीं, देना चाहता है और तुम्हारा प्यार भी मेरे से कुछ पाने की जगह देना चाहता है। प्यार में देना–पावना न होने से जब भी तुम्हें देखता हूं तो एक अग्नि भड़क उठती है। तुम नदी के समान बहती रहती हो, हमने आवश्यकता से अधिक पाया और एक दूसरे को दिया है, हमारी कोई बड़ी महत्कांक्षायें भी नहीं है। इसलिए लगता है जीवन में सब ठीक ही है।

Life is Fair

My love for you is undemanding, simple
And you are hidden, in me, as desire.
And when you smile, your deeply etched dimple,
Starts, in me, a leaping, flaming fire.

Your love is simple undemanding too,
Like the liquid murmur of the river,
On which you ply the lover's sleek canoe,
And like the river, is abundant giver.

Enough is what we give and what we get.
Of, what we give and get, we are fond.
No hopeless hopes, we cherish or abet,
No reaching for impossible beyond.

And as you comb and braid your lovely hair,
I look at you and feel that life is fair.

वर्ष 1965, शिमला में हमारे हनीमून के समय हमने सोचा था कि हम जम्मू में एक घर बनायेंगे जिसमें ऐसा ही कुछ गवाक्ष होगा। पर अब 1978 में हम दोनों को मालूम है कि ऐसा नहीं हो सकता है। भविष्य के दूसरे कामों के बाद अब ऐसा सोचना असंभव सा है।

HOLY CASTLE

Under the same Gazebo , in 1965 A.D
We spent a few moments of our honeymoon baby.
And dreamt that in some future day in Jammu
We will build a house which shall have one such Gazebo.

And now in 1978 A.D. my sweet baby
We sit and know that it could never be,
One moment was so heady and enthralled,
That castles thin built by both of us,
What castles were then built by both of us
The moment was so heady and enthralled
By future prospect but now in mute distress
We look at life time-ravaged and made bald

And lacking so completely the caress
Of love. And feeling and appalled.

मै जानता हूं कि अब घर बन नहीं सकेगा, पर फिर मैंने अपनी पूरी शक्ति से कोशिश की, बार–बार कोशिश की पर नतीजा नहीं आया। मेरी सारी शक्ति चुक गई, मेरी मेहनत बेकार हुई। जानता हूं मेरी यह हार मानना ठीक नहीं है तो मैंने हवाई महल बनाना शरू कर दिया। बच्चों ने भी पूछा –घर क्यों नहीं बनाते हो? जिसका उत्तर नहीं था।

BUILD MY CASTLES IN THE AIR

Once I tried to walk my dreams
And put my mind to only flesh and bone.
And overt physicality's of schemes,
But after a few steps, I fell down.

All my muscles, sinews, nerves and will,
Were powerless to put me on my feet,
I tried and tried and tried and tried but still,
I found myself squarely on my seat.

All my efforts, having all my sweat
Which I had pre-invested were futile
But I had learnt that frustration and fret
Are never helpful even for a while,

Hence I started dreaming then and there
And bent to build my castles in the air.

कई बार रूढियों–परंपराओं के बहाने व्यक्ति को समाज के कर्ता बाध्य करते हैं परंपराऐं निभाने के लिए पर मैं इसके लिए प्रस्तुत नहीं हूं । आप मेरे जीवन को हांक नहीं सकते हो। मैं अपने अनुसार ही कर्म करूंगा।

You want to run my life, I in turn,
Enrage you by my independent ways,
Oh! Brahmin all your rituals are stern,
We agree to disagree and the days.
I do not interfere in affaire,
Where God hood is involved, leave alone,
I agree you are made of sterner stuff,
But for me worldly pleasures are enough.

आदमी के जीवन में जन्म से मृत्यु तक एक औरत का बहुत बड़ा योगदान होता है। मां की छत्रछाया में सुरक्षित बड़ा होता है , बड़ा होने पर पत्नि के आंचल में फलता–फूलता है। पुरूष का किसी नारी द्वारा स्वीकारा जाना और पूर्ण समर्पण, दुनिया की सबसे अमूल्य घटना होती है और पुरूष मानो नारी का ज़रख़रीद गुलाम हो जाता है

The love of women is an endless wheel,
From womb to grave it doesn't human's leave.
We busy busy men this do not feel,
It keeps on hanging lightly to our sleeve

We take for granted cooing lullaby
And mothers hen- like fight, on our behest
When faced with fangless wrath of time. Then we

Come scampering back and on her bosom rest.

And in our married bliss, we much envied
With wry sarcasm do our blessing grant
But least know, how this very blessing need,
All men, though know not this for want of want.

I also came to know this in a flash,
My spouse when kissed me oddly ere my crash.

Man finds his wife and armor in necked embrace.
Show of anger. Throws him out.
Outside he gives him lift.
Pretence of Manhood.

नींद में मैंने कुछ सुना और हड़बड़ाकर उठ बैठा, दिल ज़ोरों से धड़क रहा था, बैचेनी हो गई थी। कोई आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी, पम्मी और बच्चे सुखपूर्वक सो रहे थे, फिर ये आवाज़ कैसी थी? शायद मेरे अवचेतन मन ने मुझे किसी घटना का आभास दिया है। (1978–79)

WARNING

I heard something and woke up with a start,
From deepest depth of slumber, gravely vexed,
What startled me, demands my throbbing heart
And made me so uneasy, unrelaxed.

My children are asleep, calm and quiet,

My spouse is smiling in her dreamful sleep
And silent, soundless, windless, is the night,
Why restless demons on me vigil keep,

Why in my chest, my heart so loudly pounds,
I feel no lurking danger, threatening noise;
Discern no rustling movement, outward sounds,
But something has still shattered all my poise.

Ah! may be my sub-conscious future sees.
And wants to warn me with its prophecies.

पम्मी, तुम्हारा आंतरिक सौंदर्य बाह्य सौंदर्य से अधिक है, तुम एक अच्छी पत्नि होने के साथ कला प्रेमी भी हो। युवावस्था में हीरोईन बनने का ख्वाब भी था। अभिनय करना शौक था, सभी सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेती थीं। बहुत साड़ियां न होने पर भी उन्हें ठीक से रखने और सलीके से पहनने का कौशल था, लगता था नयी ही पहनी है। सबके सामने धीर–गंभीर रहती थीं पर एकान्त में हरएक की नकल कर बतलाती थीं।बच्चों को दुनिया की तेरी–मेरी से दूर रखा था। उसके साथ समय की गति तीव्र हो जाती थी।

LOSING GAME

In your presence, time so quickly flies
That no account is kept or can be kept,
And in these exercises not a dept,
I fail to check my well-contented sighs.

Ah! dancing lashes and your gleaning eyes

Do make my blood flow richer in my veins,
And lend a verdant luster to the scenes
Impart a luminous color to the skies.

I pinch myself to find that wide awake
Are all my quick reactions and my cries,
And evidence of wakefulness. I take
A vow to keep awake. Slumber vies

With wakefulness and through, I make
Great effort, but my effort quickly dies.

शादी से पहले और शादी के बाद भी आर्थिक तंगी हमेशा रही। मैं तीनों तरह की सेनाओं में चुना गया था पर वायुसेना का चुनाव सिर्फ इसलिए किया क्योंकि 250 रूपये ज्यादा थे। शादी से पहले वेतन 775 रूपये में से 250 रूपये घर भेजते थे, तब 100 रूपये insurance और 250 रूपये mess (no free ration) कट जाता था। माता–पिता की मृत्यु के बाद छः भाई–बहनों को अपने साथ आगरा ले आए। तब Flight Lt. बन गए थे । तब भी आर्थिक तंगी जबरदस्त बनी रही। तब एक ही जुनून था, सबको ऑफिसर बनाना है, बहनों को पोस्टग्रेजुएट बनाना और शादी करवानी है। बहनों की शादी भी ऑफिसर रैंक वालों से होनी चाहिए। माता–पिता ने अपनी बड़ी लड़की के लिए कुछ रिश्ते देखे थे पर वो कमतर थे और रणधीर को पसन्द नहीं थे। ये चुनौती उन्हे मंजूर थी और पूरी क्षमता से पूरा भी किया। पर संतोष धन ही बड़ा धन होता है। बहुत तंगी में भी बहनों को पढ़ाया, भाईयों को अपने तरीके से सेना में अफसर बनाने की तैयारी करवायी और अफसर बनाकर ही छोड़ा।

"गुजारा बेतना च म्हीने दा करना अति मुशकल"

गुजारा बेतना नें म्हीने दा करना अति मुशकल।
करोड़ां लोक अजकल रूज्झे दे न ईऐ करने च।
शुरू होने शा पैह्ले जतन उंदे होंदे न अप्फल
ते बेतन मुक्की जंदा ऐ मसां हफता गुजरने च।
एह उलझन समझीं निं जंदी,
बड़ी मुशकल बनी जंदी
ते बाकी दे दिनें दा साल्ला आंगर लगदा ऐ पल–पल।
"संदोख कुंजी ऐ इस जंदरे दी"–पुरखें दा कैह्ना,
संदोख जिन्दगी गी जीने दै काबल बनांदा ऐ।''
बड़े सतकारा कन्ने वाक एह् मिम्मी सुनी लैन्नां।
गुंजारा पर जो अपने बेतना च करना चांह्दा ऐ,——

जिन्दगी च जीना जीना सखत ऐ
जिन्दगी दा मूड़ राजा वकत ऐ

WAITING

The hardship that is waiting is like hell
An eerie sense of doom Oh dear! prevails
From dawn to dusk – each hour tolls the bell
Of wired torments, courage badly fails.

कई बार अहमदाबाद गए। कैमोथेरेपी कष्टमय होती है, किसी कारण से तारीख टल जाती थी तो पम्मी को राहत मिलती थी। डॉक्टरों की सलाह से पेन किलर दिए जाते थे जिससे कम से कम दर्द महसूस होवे। पर रोग शरीर को ही नहीं मन में भी झंझावात ला रहा था। इलाज में कोई भी कमी नहीं होने देना चाहता था। पर पैसों का ध्यान रखना पड़ रहा था। जीवन के कठिनतम अवसरों पर भी उन्होंने किसी से सहायता नहीं ली थी। आर्थिक सहायता भी नहीं ली। नौकरी से

जितना भी लोन आदि उठा सकते थे, उठा रहे थे । उधार कभी लेना पसन्द नहीं किया। खर्च कम से कम होवे तो अकेले ही पम्मी के साथ हर जगह जाते थे। किसी को भी दूसरे शहर आने से मना किया था। कारण वो पम्मी का ध्यान रखें या मेहमानों का ख्याल रखें? जो समय और अर्थ दोनो मांगता है। पम्मी बहुत खुद्दार थीं, अपने घर की अपने धनी–ओह्देदार बहनों व भाई को कभी भी कुछ बतलाती नहीं थीं। अपने बच्चों को भी जाने नहीं देती थीं। पर वह अपने पूरे परिवार में सबसे ज्यादा सुखी थीं। एक दीवाना, समर्पित पति जो साथ था। रणधीर ने उसे देवी के समान पूजा और केयर की थी। पम्मी दवाई भी रणधीर के हाथ से लेती थी। हॉस्पिटल में नर्सों के हाथ से भी नहीं। नर्सें दोनों के इस प्रेममय व्यवहार को देखकर बोलती थीं आपका पति आपको बहुत प्यार करता है। सुनकर खूब खुश होती थी ओर खुश हो रणधीर को ही नहीं दूसरों को भी बतलाती थीं। स्थिति कठिनतर होती जा रही थी। जीवन की इस आपाधापी में अब और नौकरी करने की इच्छा नहीं है। आर्थीक रूप से भी नौकरी छोड़ना ठीक होगा। शुरू से मैं नौकरी करना नहीं चाहता था। मैं अंग्रेजी का प्रोफेसर बनना चाहता था और बस लिखना चाहता था। अपने लिखन कौशल को आजमाना चाहता हूं। बस अब पेंशन ले लेना चाहता हूं।

अक्के दा मन

मन करदा ऐ मेरा जे में पैनशन टुरी आमां,
विन आल–माल कीते दे फौरन टुरी आमां।
इनामशुदा फौजी होने वावजूद बी,
बरदी त्यागिऐ करा दा मन, टुरी आमां।

फौजै च रेहियै मन होआ अजीरन ऐ मेरा,
जरनैली बी लगै दी औन्गन टुरी आमां।
में कैल्ली करां नौकरी मिगी निं चाही दियां ,
जगीरां, शान–शौकतां ते धन, टुरी आमा।

'वियोगी' भरथी फौजे च हा इस करी,

परदेसा दा शायद हा खाना अन्न, टुरी आमां।
में इस करी गी फौजी कम्म छोड़ना चाहन्ना,
सोआरने तैं लेखनी दा फन, टुरी आमां।

आह्ली ऐ तेरां साल मेरी नौकरी बाकी,
जी करदा फ्ही बी छोड़ियै में रण , टुरी आमां।

Pammi's treatment--

When I look back on that bubbly,
cherubic, aquiline nasal dove
eyed picture of good health
I think illness would not attack
Someone like her. But it did.
Dry-eyed and dignified as ever.
A social dynamo became a recluse overnight.
Characteristic refusal to be cowed.
Alchemies disaster with infections hopefulness.

सुनना दरकिनार सिर्फ दुखड़े बारै सोचियै,

दिल बगीचा सुक्कियै करादी ऐ केह् करचै।

दोनों एक दूसरे को ढाढस देते थे। घर की कठिनाईयां कम हों इसलिए एक लड़की को होस्टल में रखा। इस बीच बड़ी लड़की के लिए रिश्ता आया तो बहुत सोच समझकर हां कर दी और फरवरी '88 में शादी करवाई। पम्मी शादी में भी ज्यादा देर बैठ नही सकीं तो घर भिजवा दिया। हालत दिन पर दिन खराब हो रही थी। तभी प्रमोशन भी हो गया। पम्मी सब समझ रही थीं। अपना लुटता संसार देख रहीं थीं,

मन में विश्वास था आखिर तक कि रणधीर बचा ही लेगा। बस रणधीर को देखती रहती थीं। रणधीर को उसका इस तरह देखना बहुत ही मर्मान्तक था, अपनी इस अक्षमता, निरीहता पर कोई जोर नहीं था। उसे बचा नहीं पाने की, उसे निरोगी करने की, खुश करने की कोई विधि नहीं थी । कोई उपाय होता तो रणधीर अपनी प्रियतमा के लिए जान भी कुर्बान कर देता, पर एक नपुसंक क्रोध, अक्षमता, अपने तुच्छ होने का अहसास बार बार हो रहा था। पम्मी शारीरिक पीड़ा के साथ मानसिक रूप से भी तड़फ रही थी। यह तड़फना देखा नहीं जा रहा था। मेरी गोद में सर रखे तू मेरी तरफ फटी आखों से देखती है, विश्वास करती है कि मैं कोई करिश्मा करके तुझे बचा लूंगा पर मैं कोई जादूगर नहीं हूं। तू जानती है कि कैंसर से तू अब बच नहीं पायेगी, मृत्यु से ही छुटकारा मिलेगा। पर हमारे प्रेम और अपनी गृहस्थी से अलग होने की सोच से ही तू व्याकुल है, तेरी छाती पर कैंसर का ''आदमखोर बूटा'' लगा है। जिसके सामने तेरा प्रेमी अक्षम है, तुझे घोर कष्टों से मैं छुटकारा नहीं दिला सकता हूं। कैंसर से मात्र घोर शारीरिक कष्ट ही नहीं है , उससे भी बड़ा मानसिक त्रास है। हर वक्त अपनों के बीच रहते भी उन्हें खोने का डर, हाथ से छूटते जीवन स्रोतों को पकड़े रहने की कोशिश कितनी त्रासदगी है, यह भुक्तभोगी ही समझ सकता है। पम्मी बतला मैं तुझे इस दर्द से कैसे आराम दिलाऊं, शारीरिक दर्द से तो डॉक्टरों की मदद से थोड़ा आराम होता है, यही मेरे हाथ में है। पर बिछुड़ने की मर्मान्तक पीड़ा, इस व्यथा का कोई उपचार नहीं है। इसमें हम दोनों डूबते जा रहे हैं। पर संतोष रख कि हमारा प्रेम सातवें आसमान जितना ऊँचा है, शरीर का बिछुड़ना कुछ अर्थ नहीं रखता है। मैं तेरे साथ प्राण दे सकता हूं पर तू ही मुझे रोक रही है। इस विपत्ति का निवारण यमराज ही कर सकते हैं। तुझे सौगन्ध है, अब तू अपने कष्ट निवारण के लिए अपने प्राण छोड़ दे।

ओ मेरी गीदै बिच्च रक्खियै सिर सैह्कदी कलिये,
ए तेरे फेफड़े पर कैन्सरा नै मल्ल पाई दी,
ओ मेरी जिन्दगानियां च मैह्को मैह्कदी कलिये,
ब्हाऊ थ्हार आदमखोर इक बूटी उगाई दी।

ओ मेरी जिन्दगी दी मखमली मजूदगिये तूं,
मिरे गल्ल फट्टी–फट्टी नजरें कन्नै दिक्खा करनी ऐं,
'वियोगी' गी तूं म्हेशां समझदी आई ऐं परसानूं,
उदे शा अज्ज ता तूं कोई करिशमां हिक्खा करनीं ऐं।

प तेरा आशक तेरे आंह्गर गै मासा दा,
बड़ा मजबूर ऐ, बे–युगत ऐ ते प्रारथना–गो ऐ,
भैंकर कैंसर जमराजा–ए–ला–इलाज हुतला ऐ,
एह्दे सामनै 'वियोगी' इक बे–सोध परतो ऐ,

तुगी सगन्ध ऐ मेरे प अपना मान त्यागी दे,
अपने कश्टै दे नवारण तांई प्राण त्यागी दे।

पुरोह्त आखदा सुहागन मौत, मौत–ऐ उत्तम
पिछले जनमें दे करमें दा उत्तम फल ऐ 'वियोगी'।
सुआह्नी दे मरी जाने दा कैह्ल्ली करना एं मातम,
कैह्ल्ली जिन्दगी च पाए दा खलल ऐ 'वियोगी'।

पन्त आखदा मनिशियें ऐ निशचत कीते दा,
सुहागन–मौत मरदियां न सिर्फ देवियां नारां,
उन्दी सद्गती दा रस्ता ए स्थापत कीते दा,
सुहागन मरदियां न सिर्फ जन्नत–जेवियां नारां।

ससज्जत गैहनें कन्नै लोथ दिक्खनां तां सेही होन्दा,
क जियां चीथड़ें प कड्ढे दा चमकीला गोट्टा ऐ,
मिरे शा फलसफा मनीशियें दा समझन नेंईं होन्दा,
की जे मेरा ए होना होये दा टोटा–टोटा ऐ।

ओ लोको आखो देवते गी मेरी 'पम्मी' परताओ,

नितां कलपन देओ मीं ते मिरा फाता पढ़ी जाओ।

''वियोगी'' दी त्रीमत पुछदी ऐ– दस्सआं मिगी सज्जना
इस मारू रोगा नै मेरी गै कैह्ल्ली चोन कीती ऐ
मेरा पूजा–पाठी ते सतीत्व बैसमा जीवन .....

पता निं

इक पीड़त प्रीतमै दी मौती दी आपू दुआऽ करना ऐ,
अनुपम चुन्न होन्दा ऐ जां घोर पाप होन्दा एं?
नां उस थाहारै मरी सकना, नां पीड़ेगी सरी सकना,
इनें दौन्नी नमरदगिये दा पश्चाताप होन्दा ऐ।

अनुपम पुन्न कीता ऐ जां घोर पाप कीता ऐ?
मलूक सज्जना, निं फैसला करी सकदा में।
नां मेरे कोला खुलदा पच्छोताएं दा पलीता ऐ
ते नां गै जीन्दे रेही सकदा, नां मरी सकदा में।

तेरी सदगती तैं पानी चाढ़दे में सोचै नां–
तिरी असैह्मती पीड़ें गी दूर जे खुदाऽ करदा;
में अपने हड्डें दे अनुकूनें तिक्कर मसूसै नां;
में ओह्दा नास्तक होन्दे होई बी शुक्रिया करदा!

पता निं अल्लाह् नैं मेरी दुआऽ कबूल कीती ही?
जां जियां होनी ही होनी, ओह् उन्नै होन दित्ती ही?

नगरोटा

01.04.1988

" भगवान तुम्हें ज़िन्दगी से लड़ते देख रहा था और कोई इलाज संभव नहीं था तो उसने सुझाया– ''मेरे पास आ जावो।''

– ते मसीहा कोई नेईं–

ते मसीहा कोई नी तेरा मसीहा कोई नी
जीवन अन्दर छाई किश ऐसी कुह्लैनी मान्दगी
दिल दलौचै पीड़ा कन्नें–दरद किन्नी बे–थवी
वेबसी कच्ची मान्दगी हेली हेली इन्नी पी
जीऽ करा दा रिशते नाते छोड़ां–छोड़ां जिन्द वी
घोर काले गुप्प न्हेरे थोन्दा दियां कोई नी
ते मसीहा कोई नी, तेरा मसीहा कोई नी।

दो बार VRS के लिये आवेदन करने पर अस्वीकृत कर दिया गया एवज में HQ ने अहमदाबाद के पास मार्च में रणधीर का प्रमोशन व ट्रासंफर जोधपुर किया। 2 अप्रेल 88 को जोधपुर के लिए रिजर्वेशन हो गया, चार्ज दिया जा रहा था, पैकिंग हो गयी थी। बसेरा छोड़ने की पूरी तैयारी थी। एक अप्रेल '88 को सुबह ऑफिस गए, अन्तिम औपचारिकता पूरी करनी थी, घर पर सब सामान्य था। थोड़ी देर में फोन आया, पापा जल्दी आवो! मम्मी को क्या हो रहा है? तुरंत घर पहुंचा तो देखा पम्मी sink कर रही थी या शायद sink कर चुकी थी। तुरतं CPR किया, पर कुछ नहीं हुआ तो mouth to mouth resuscitation किया तो ढेर सारा पानी उनके मुंह में आ गया, फेफड़ों में पानी भर गया था। यह प्रयास भी विफल हुआ। सब खत्म हो गया। विपत्ति में वायुसैनिक अधिकारी के धैर्य की परीक्षा होती है।

यंत्रवत सारे आवश्यक कार्य किए। अकेले ही ड्यूटी पर जोधपुर आए। बच्चों को साथ नहीं ले गए, अपने परिवार वालों के पास थोड़े समय के लिए छोड़ा।

नेतर–दान

तूं नेतर–दान हा कीते दा, इस कारण तिरे नेतर,
तिरे मरने दै फौरन बाद विशेश अग्गें गी में दित्ते,
तिरे मरने परैन्त दस्स हां मीं एह्दे शा बेह्तर,
मिगी पनछाने दा होर साधन केह् हा मन–मीते।

तिरे जिसमा दे बेश–कीमत बेहतरीन ओह् दो हिस्से,
अक्खें दे विशेश अग्गें इक अन्नी अक्ला गी लाऐ,
ते तेरे हिरन–नैतर जद में ओह्दे चेहरे प दिक्खे,
तां उन्दे सर्ब–संभोगी शोर सोट चेतै मीं आऐ।

प उस मशबेर औरत नै मिगी जद दिक्खेआ दिखदे,
तां ओह्दी ए पछानू नजरें च सुआली बि डूह्रा हा,
ते मेरे चित्ता च अनहोनियां ए हीखिये हिख दे,
मनै गी झित्था करने आह्ला देवकाये झुरा हा।

ओ हिरन नेतर तेरे भाएं तिरे जिसमा दे हिस्से न,
प बिन तेरै, मिरे ताईं दौऊँ पथरीले शीशे न।

जगीन्दे सुखनें च औन्दी

जगीन्दे सुखनें च औन्दी
घड़ी की दूर निं होन्दी
आखदी गल्ला सुन मेरी
चलन दे थोड़ी हुन मेरी
में तेरी धुन छुड़ी ओड़ी
छुड़ी दे तुम्मी धुन मेरी
आखदी समझी लै मल्ला
तूं सद्धर बन जां बन झल्ला
मिरा मुक्की गेआ छौरा
ते तूं ऐं भड़कना कल्ला

मेरी त्रीमत दी मौती दे निग्गर बटटे दै कन्नै
जीवन–शीश मैहल किसमता ने भन्नेआ मेरा
यकम अप्रैल सन्न ठासी अपने अटटे दै कन्नै
कलापें घोटी घोटी निग्गर नीरन बन्नेआ मेरा

चिता शा निकलदे लोरें दी गरमी कोला बचने तैं
प्रशन चि'न्न बनियै यार–रिशतेदार हे खड़ोते दे
एह् काफी हा मिरे तांईं अन्दरूनी कैहर मचने तैं
कीजे असलीयत लगी गलाना ए खड़ोते दे

भुलावा सुई दा नक्काः परोईयै जेह्दी म्होरी च,
धागा साहें दा, तूं त्रीमता गी भुल्ली जाना ऐ
तेरे बच्चड़ें जिन्दगी दी होरो–होरी च
तुक्की बी, तेरे साह जदूं मुकङन तां भुलाना ऐ

Randhir believed in-----

O! Priests, What is on Fire ?

1- All things, O, priests are on fire-
But what are these things which are on fire.
The eye O prists is on fire
Forms are on fire
Impressions are on fire
Eye conscious is on fire
Whatever sensation (pleasant or unpleasant, or indifferent)
Originates in dependence on unpresions received

by the fire, is on fire.

2. And with what are these on fire?

With the fire of passion,I say.

With the fire of hatred.

With the fire of Infatuation.

With birth

With old age

With death

With sorrow

With temptation

With misery

With grief

And with grief are these on fire

3 The ear is on fire

The tongue is on fire

Tests are on fire

The body is on fire

Things Tangible are on fire

The mind is on fire

Ideas are on fire

Mind-consciousness is on fire

Impressions received by the mind are on fire

Whatever sensation (pleasant or unpleasant, or indifferent)
Originates in dependence on impressions received by the
Mind that also is on fire.

4 And with what are these on fire?

5 Perceiving this O prists the learned on noble disciple

Conceives on aversion for the eye

Conceives on aversion for the forms

Conceives on aversion for the eye consciousness

Conceives on aversion for impressions received by the eye.
And whatever sensation (pleasant or unpleasant, or indifferent) Originates in dependence on impressions received form that also he Conceives on aversion
Conceives on aversion for the ear
Conceives on aversion for the nose
Conceives on aversion for the odour
Conceives on aversion for the toungue
Conceives on aversion for the tastes
Conceives on aversion for the body
Conceives on aversion for the thing tangible
Conceives on aversion for the mind
Conceives on aversion for the ideas
Conceives on aversion for the mind-consciousness
Conceives on aversion impressions received by the mind

6 And in Conceiving this aversion he becomes divested of passion
And by the absence of passion he becomes free
And when he is free, he becomes aware that he is free
And he knows that rebirth is exhausted
That he has lived the holy life
That he has done what it behooved him to do
And that he is no more for the world.

शरीर थक्की आ मेरी ते रूह बी हुट्टी आ मेरा
एह् सुखना दिक्खा करना में जे सुखना टुट्टी आ मेरा

जद पखेरू उड़ान बदलदा ऐ,
उसलै अपना शमान बदलदा ऐ।
हत्थ रक्खियै धरम पोथी पर,
माह्नू किन्ने ब्यान बदलदा ऐ?
टटैह्ने दै स्हारै सूरजा दा,
कुन भला खानदान बदलदा ऐ?
नेईं खुंझने आह्ले तीरें तगरा,
तबका–तबका कमान बदलदा ऐ।
मशूक सूरत ते बदलदा नेईं,
गल्ला–गल्ला पर जुबान बदलदा ऐ।
चहरें–मोहरें गी बदलने तांईं,
न्हक माह्नु मकान बदलना ऐ।
''वियोगी'' आपूं गे अज्ज गोआचे दा–
आखदा हा ओह् ज्हान बदलदा ऐ।

में रोया करलाया लेकन फिकर कुसा नै नेईं कीता।
मेरा सुनियै, कट्ट मनै दा गुबर कुसा नै नेईं कीता।।
शिवजी दे विषपान दा किस्सा लिखया पुरखें वेदें च
में कीता बिषपान तां ओह्दा ज़िकर कुसा नै नेईं कीता।

जिन्ना ज्यादा तंग, मीं मेरी अन्तरात्मा करदी ऐ
मेरै उप्पर इन्नां ज्यादा जबर कुसा ने नेईं कीता।
दिला दे तौर हे डिरगे फ्ही बी साथ नभाया रूहा नै
बोल्ली– तेरे माफक हिरखी "हुनर" कुसा नै नेईं कीता।

मेरै बरोबर बौह्ने दी भामें ही मरजी सारे दी
मेरै आंह्गर पर रत्ता भी–सबर कुसा नै नेईं कीता।
"गालब" दी गज़लें इच खूबी ऐ लफजें ते मैह्नें दी
ओह्दे आंह्गर गज़लगोई गी अमर कुसा नै नेईं कीता।

जेल्लै लोकें मिगी पुच्छेआ –कारण मेरी शोह्रत दा
जैह्र प्याला दिक्खियै अग्गें अधर कुसा नै नेईं कीता।

अरबें पीड़ें दी शमशीरें इसी छाननी कीता हा,
पर चित्ता दा तेरै आंह्गर 'हशर' कुसा ने नेईं कीता।
रामनाथ शास्त्री दे सील सुआतम दा औं आशक आं–
इन्नां जैदै मेरे मना पर असर कुसा नै नेईं कीता।

यारें मेरे फुल्ल चुने ते गंगा इच्च संट्टी ओड़े–
मैरे गितै पर अपना 'हिरदा' डबर कुसा नै नेईं कीता।
किच्चर इनें बर्जुगें साढ़ी बोल्ली टाह्कै लानी ऐ
मेरी सुनियै मूंडा अग्गें मगर कुसा नै नेईं कीता।

मां बोली दी रेख–देख दा कम्म निं ठीक चला करदा
आखर मीं गै करनां पौना, अगर कुसा नै नेईं कीता।
गाफल होईऐ, बुरे–भले शा, लिखने दी लहा उप्पर
तेरै आन्गू चित्त "वियोगी"– नज़र कुसा नै नेंईं कीता

मीं मारियै , मेरे प उनें स्हानं हा कीता,
में खाह्–मखाह् गै चित्ता गी हलकान हा कीता।

– झड़प्प–

माह्नु नैं परमातमा गी आखया–
''जिन्दगी च छाई दी ऐ लागरी।''
परमातमा नैं माह्नु गी दित्ता जवाब–
''एंट छैंट बोलने दी लोड़ निं–
बस्स मीं दस्सी दे इन्नी गल्ल तूं–
मेरा खैड़ा तूं कदूं ऐ छोड़ना?''
माह्नु नैं खंगूरिऐ फ़ही आखया–
''में तुगी दस्सा ना अपना हाल–शाल–
कीजे तूं ऐं हा बनाये दा मिगी–
ते मठोन्दे लै तूं मेरै अंग–सगं
इक छौरा मेरा दुआ तेरा ।
खुशिएं–हास्सें–खेड़ें च रलियै सदा,
ढारसां, मसारखां बी दित्तियां।
छौरे आंगर विचरदा चलदा रेहा,
लेकन जेल्लै मुशकलें मीं घेरया–

मतलबी यारें जन गैब होई आ।
बिन तेरे छौरे दै अऊं गरसाल आं–
परमातमा नैं माह्नु गी फटकारया–
मुशकलें च में तुगी चुक्की लेआ।
दौऊं छौरे इक्क–मिक्क होई गए।
तूं मेरे कनाड़े उप्पर हा सुआर।
इसकरी गै जीन्दा–पौन्दा तूं रेहा।''
माह्नु नै सुनिऐ एह् गल्ल आखया–
'' में जीन्दा आं ते ठीक आं परमातमा–''?
परमातमा नै माह्नु गी दित्ता जवाब–
''तूं जीन्दा एं ते ठीक एं में केह् करां?
परमातमा मसरूफ ऐ अपनी जगह!
ते अपनै थ्हार चित्थमचित्था आदमी!

ओ शिकारी(मौत)! क्या तू नहीं जानता कि क्रोंच जोड़े में यदि एक भी मर जाता है तो क्या दूसरा भी अपने प्राण दे देता है? दो तीर की जगह एक तीर से ही दो का शिकार किया जा सकता है?

शकारी

कुंजे दे शकारियो तुम सरफा मौती शा सिक्खो;
तङाणे मैहन्गे कारतूस जाया करदे ओ कैल्ली
जोड़ा कूंजे दा लब्बै तां इक्क मारियै दिक्खो
जे कियां दुई मरदी ऐ, मोई दी दिक्खियै पैहली
असल शकारियें गी हुतली काहली शोभा नि दिन्दी
असल शकारियें दा सवर ते डूगी उवर होन्दा
शकार विध्या विलकुल सम्पूरण होन्दी ऐ इन्दी
सवर शकारी विशेषज्ञें दागै असली सवर होन्दा
"वियोगी" कूजंड़े गी दिक्खो जोहदी "प्रेम" कूंजा गी
शकारी मौती नै इक बार करियै मारया ते फी
लगी बलगन उदी जकीनमी वियोग मौता गी
कूंजा दे बछोड़ें मारया फौरन वियोगी बी

इक्क बार करियै दो पखेरू जियां इस मारे
इदे कोला शकारियो शकार सिक्खयो सारे

ज़िंदगी परिवर्तन का दूसरा नाम है। जिंदगी में कोई भी संबंध स्थायी नहीं होता , जो संबंध बनता है वह खत्म भी होता है। जन्म और मरण का साथ है। सृजन से विसर्जन, creation to destruction नित्य नियम है। ज़िंदगी क्या चीज है, उसके बारे में कोई भी नहीं जानता है।

He believes in----Nothing is permanent Except Change

हर कुसा दी बत्त होन्दी ऐ जुदा,
कोई भी रिश्ता नैईं रौंह्दा सदा।
कोई नि दस्सी सकै केह् ठीक ऐ,
गलत मुलत हर कोई ऐ सोचदा ।
अलविदा यारा, अगर म्हेशां लेई,
तां फिरी म्हेशां लेई गै अलविदा।
जिन्दड़ी दी बत्ता उप्पर में ते तूं,
गामज़न रौह्गे अगर मन्नग खुदा।
रूप बे–फौन्दे प जान इक्क ही,
इक्कबारी गै मड़ो होन्दी फिदा।
के "वियोगी"? जिन्दड़ी के चीज ऐ?
कोई भी निं कोई भी निं जानदा।

..... तुम.....

जोधपुर

13 अप्रैल 1988

जोधपुर आकर 4-tech के Officer Commander पद पर जॉइन किया। किन्ही भिन्न स्थितियों में यह उत्सव मनाने का अवसर होता। लोग उच्चपद पर प्रमोशन सेलिब्रेट करते हैं। पर रणधीर के लिए यह महज एक रूटीन की आवश्यक क्रिया मात्र थी। यंत्रवत् नौकरी की ड्यूटी थी। लगन और ईमानदारी योग्यता का पुरस्कार था। वायुसेना पहले दो बार VRS के लिये मना कर चुकी थी पर अब मान लिया गया था।अगले 13 सालों की बची नौकरी में बहुत उज्जवल भविष्य था। 48 वर्ष की उम्र में मनुष्य अपनी सफलताओं का रसास्वादन करता है। आदमी यह सब अपनों के लिए करता है, एक सुखद भविष्य के लिए करता है। पर सुखद भविष्य को तो पंचतत्व में अर्पित कर आए थे। उम्र के इस पड़ाव पर जहां मनुष्य अपने पुरूषार्थ से घर–परिवार के लिए जूझते हुए कुछ सकारात्मक फलों की अपेक्षा करता है,उन फलों को भोगने का अवसर आता है, तभी नियति एक ही वार में सब छीन लेती है। मन का सुख–चैन काफूर हो गया। भविष्य घोर अंधकारमय, अनिश्चित, कड़वा हो गया था। जीवन का प्रेम, विश्वास, आधार, आस्था सभी एकसाथ धुआं–धुआं हो गए थे। प्रेम–पम्मी, मात्र पत्नि ही नहीं थी, जीवन की धुरी थी। रणधीर के लिए वो सामान्य पत्नि नहीं थी। बचपन से बेनामी पीड़ा, मां के बिछोह के बाद, घोर अकेलेपन की साथी थी। अन्दर से अकेलापन, undefined अभाव, अक्षमता से जूझते जीवन में मिली एक साथी थी । वह प्रेम–पम्मी न होकर कोई और भी होती जो रणधीर को भावनात्मक सहारा देती,तो वह भी उतनी ही कीमती, अनमोल रत्न होती। एक पुरूष का बचपन से मां के साथ

आत्मिक सबंध, संसार में बेगानापन, निपट अकेले होने का अहसास, विलक्षण बुद्धि, ईमानदार, जीवन के उच्च मूल्यों का स्वामी जब किसी आकर्षक ''स्त्री'' से मिलता है तो वो सबंध, सामान्य पति–पत्नि का न होकर , एक दैविक, पवित्र, आस्था की पूजा का प्रतीक बन जाता है। दैहिक संबंधों से उपर आत्मिक परमानंद का प्रतीक होता है। ऐसे में ''वह स्त्री'', जीवन का आधार बन जाती है। वही सर्वस्व होती है। जीवन की, दुनिया की सारी धुरी होती है, ऐसे में पम्मी–पम्मी शब्द ही, जीवन मंत्र हो जाता है।

जिस रोज तूं बनी मिरी शरीक जिन्दगी,
उस रोजा थमां होई ठीक मेरी जिन्दगी।

बदकिसमती ने पहले मेरी जान तो लेली
लेकन परेशानी में अब भटके है अकेली
इतराती थी दिखला के जिन लकीरों को पहले,
छिपा के बन्द मुट्ठि अब में रखती है हथेली ।

अभी तलक जीने के लिये कहती है हमको
लड़कपने में हम ने इक सूघीं थी चमेली
चूंके हम समझते हैं जिन्दगी को सहेली
हर बात इसकी इसलिये खुशी खुशी झेली

किसमत ने अजीयत जो मुझे देनी थी दे ली,
बदकिसमती ने अबके मेरी जान ही ले ली।
होकर जुदा मुझ से वो अब भटकेगी अकेली,
बदकिसमती ने गरचे जान ही ले ली।

मुझको गंवा कर वो भी तो भटकेगी अकेली,
बदकिसमती ने अबके मेरी जान ही ले ली।

कुसै चित्ता दी भड़कन, जेह्दै बिच्च जज़बे मकदेन,
निसो दिक्खी दी लेकन जज़बे दा आवेग सब जानन।
कीजे जज़बे गै माह्नू–शकन्जे कस्सी रखदे न,
ते माह्नू कम्म ओह् करदा उदे जज़बे जिड़ा ठानन।

कुसै इशकै दी शकल, जिसगी नेईं ब्याखेआ जन्दा,
निसो दिक्खी दी फ्ही शकल एह् सारें गी भाखी ऐ।
मशूक रूबरू होए तां किश निं आखेआ जन्दा,
ते में पछतांग भामें सामने तेरै व्याखी ऐ,

प फ्ही बी आखगा तूं खूबसूरत एं मिरी जिन्दे।
तूं मेरै आस्तै शुभशगना म्हूरत एं मिरी जिन्दे।

रणधीर कहते हैं कि 'प्रेम' ने उन्हे वो दिया है जो शायद जन्नत में भी न हो। कारण जब जन्नत ही उन पर मुस्कुरा दे तो सब तरफ खुशबू ही खूशबू फैली है।

जनैन्त जे कोई मुस्कादी ऐ

मैथुन मोसम च मस्त साह्न मुश्का सिंगियै भामें,
गमां गरमोई दीआं तुप्पियै हुल्लड़ मचान्दे न,
मोर मोरनिएं दी मरजिएं गी समझियै भामें,
भोगै तांई मनवाने गितै गै पालां पान्दे न।

मिगी जनैन्त कोई दिक्खियै जे मुस्करान्दी ऐ।
मिरी हस्ती दै उप्पर खुशगवारी हावी होन्दी ऐ।
नादीदा व्हाऽ जियां चानचक्क पत्तर ल्हान्दी ऐ,
खुरम ख्यालें दी मनै च आवा–जावी होन्दी ऐ।

खलूसी झुनक लगदी ऐ, अवो कुसै बी किसमै दी,

हवस जां वासना दी जिसमै बिच्च अग्ग लगदी निं,
ते बन्ना त्रोड़ियै सतीसर झील सील जिसमै दी,
त्रारे ग्रैह्न करियै, जेह्लमा दै आंगर बगदी निं।

अवो मीं दिक्खियै जनैंन्त जे कोई मुस्करादी ऐ,
मिरी हस्ती खशबोई गै खशबोई फैलान्दी ऐ।

पुरूष के जीवन में ऐसी स्त्री का थोड़ा भी कष्ट परेशान करने वाला होता है। उस स्त्री को यदि महारोग ''कैंसर'' हो जाए तो स्थिति शोचनीय हो जाएगी। पुरूष ऐसे में अपनी पत्नि को रोगमुक्त करने के लिए कुछ भी कर सकता है। रणधीर अपने तन,मन, धन, सारी क्षमताओं के साथ रोग के सम्मुख चट्टान के समान खड़े रहे। अपनी परम् मां वैष्णव दैवी को जो हरवक्त साथ रहती हैं को बहुत मिन्नत की , हर मन्दिर , spiritual healing सबको नमन किया। मन में आता था कि ''मैंने ऐसा क्या किया जो मेरे साथ ऐसा हो रहा है?''

''वियोगी'' दी त्रीमत पुछदी ऐ– दस्सयां मिगी सज्जनन
इस मारू रोगा नै मेरी गै कैल्ली चोन कीती ऐ
मेरा पूजा–पाठी ते सतीत्व बैसमा जीवन .....

पम्मी को कभी कोई रोग नहीं हुआ, तो यह महारोग क्यों हो गया? हमेशा पूजा–पाठ किया, सतीत्व पर कायम रही, तो ऐसा क्यों हो रहा है?

कैंसर के इस भूकम्प ने रणधीर का सारा जीवन '' नेस्तनाबूद'' कर दिया। सब खत्म हो गया। फिर यह प्रमोशन क्या अर्थ रखता है।

तड़फदिएं मच्छिएं आंगर

पूरे बाई साल गुज़रे प्रीत जप्फा लाए दे,
अवो, इयां ब झोन्दा हा, अखें अस कल्ल व्होए आं।
अजें इक म्हीना बी निं लग्गेआ तुगी गुआए दे,
फिरी बी लगदा एं जे सदियां होईआं न खंडोए दे।

पता निं वक्तै नैं अपनी गति गी बदली लैता ऐ
जां ढगं मेचने दा बदलेआ, मनै दे फीते नै?
जां दर्द दित्ते दा तेरी जुदाई दा असैह्ता ऐ,
ते वक्तै गी खडेरी रक्खे दा कनीते नैं?

शशोपंजें ते जक्को–तक्कें बिच्च मुब्तला होईऐ,
मेरी सोच डौर–भौर, लूरो–लूर फिरदी ऐ।
ते सुज्झ–बुज्झ झक्कें–शक्कें बिच मुब्तला होईऐ,
तिरी मजूदगी दे बेल्ले दी गति सिमरदी ऐ।

ते जिन्दगानी ऐ गंजलोई दीयें लच्छियें आंह्गर;
बगैर पानिया दै तड़फदियें मच्छिएं आंह्गर।

अनलिखे मरसिये–1

फुल्ल कुस उगाए मेरे जजबें दी झलैटें च,
जिन्दै कारणवश में सारै खशबुआं फलाई सकेआ?
ते बटटे कु'न्नै लाइए वक्ते दी व्यापक तलह्टें च,
विजन चकड़ोये दे में दलदलें दै पार जाई सकेआ?

कुन्नै साथ दित्ता मेरा, मेरी इक्कलताई च
ते कु'न्नै किश करी जाने दी मीं प्रेरणा दित्ती?
ते कु'न्नै सारथी बनियै मिरा, तेरी जुदाई इच,
मिगी गीह्ट–म–गीह्टा जिन्दगी कठेरना दित्ती?

सुआल सुनियै लोकेंदे में हस्सी ओड़ना की जे,

वफा दे मरसिये गै थ्होने हे, मेरे शा, लोकें गी
सुआल वाजवी ते कुदरती ऐ इक–इक इन्दा
अवो मीं दस्सू केह दस्सां में पाठकें भलोंकें गीं

तिरे लताड़ने मगरा मिगी स्हारा थ्होआ जिन्दा
वफा दे मरसिये कि'यां सुनाऽ में ऐसे लोकें गी!

अनलिखे मरसिये–2

मतेबारी, मतेबारी, मतेबारी, मिथी–मिथियै
मतेबारी–मतेबारी, मियें मनसूबे ते हुट्टियै
मिरा किश गैरमामूली करनियां करने दा मन कीता
मतेबारी–मतेबारी–मतेबारी, मरी मरियै–मिटियै

मनोमन करनियां मन–हरनियां करने दा मन कीता
मतेबारी मतेबारी मिरा मरने दां मन कीता
मतेवारी–मतेबारी मगर मरने शा में डरया
मते बारी–मतेबारी मिरा डरने दा मन कीता

मगर मरने शा डरने च अते डरने शा डरने च
मनै मलूकै नै मनसूबें गी निं दरगुजर कीता
कसर छोड़ी नि कोई करनियां करी गुजरने इच
मिथी दी लामें दे किलें दे मोरचें गी सर कीता

किला में मुशकलें दा मोरच सर करिये में सरेआ
इ'दे च शक्क निं एह् करदे बेल्लै में मन बड़ा डरेआ।

प्रेम में पागल रणधीर प्यार को पाने के लिये वो कुछ भी करने को तैयार है। गिरते घर से निकलना पड़ रहा है पर मैं तो वापस उसी अपने घर जाने की जिद़ पर हूं।

मैं नहीं वोला तो अन्दर से मर जाऊँ गा
और अगर वोला तो वाहर से मर जाऊँ गा

मुशकलतरीं राहगुजरों से भी गुज़र जाऊँ गा
जिस सिममत प्यार से भेजोगे उधर जाऊँ गा

अभी हूं गोतागू जीवन के समुन्दर में चाहे
मुझे यकीन है इस गहराई से उभर जाऊँगा
दुनियादारी ओ अकल लाख मुझे रोकें–टोकें
तै शुदा वफा के रस्तों पर ही मगर जाऊँ गा

कुंवर 'वियोगी'गिरते हुए घर से नकाला तो
सब से कहता है मुझे छोड़ो में घर जाऊंगा।
मेरी सादालूह बफा पर गर गौर करो
सोचों के जीने से दिल में उतर जाऊँ गा

गलाया हिरदे नै अकला गी, ''ओ अकले समझदारे''
में मन्ना जां जे तेरा पल्ल होन्दा भारी ऐ।
– कुंवर वियोगी

रणधीर के जीवन में, उनकी इच्छा से विवाह और फिर जीवन में आये झंझावातों, जलजलों, सुनामियों में बगैर थके ''प्रेम'' मात्र पत्नि ही नहीं, हमेशा सामाजिक और मानसिक रूप से बराबरी से सहयोग में तत्पर रहनें से एक अनमोल पत्नि बनी जिसने रणधीर को अन्दर तक छू लिया था।

भौतिक अस्तित्व न होने पर भी दिल दिमाग पर छाई रही।.....

.

कश्मीर दी वादी चः 'कल्हन' दी कथाकारी,
'लल्ला' दी नज़म–गोई, 'महजूर' दी बाणी ऐ।

इनसान दे हर कम्मै, विच फानी पन होंदा,
इनसान लफानी नेंई, इनसान ते फानी ऐ।

जम्मू दा गोआंडी हा, "इकवाल" गलान्दे न,
तां गै खरै जम्मू दी तासीर रूहानी ऐ।

बंदूक छुड़ी दित्ती, कान्नी गी फड़ी लैत्ता,
एह् मेरी अकलमन्दी जां मूक नदानी ऐ।

सैल्लें दे घमन्डी हे, पत–झड़ै न पर आईयै,
बूह्टें दी करी ओड़ी नंगी हर टाह्नी ऐ।

में तुंदे रूपा दा वर्णन एह् करी सकना,
हर लीकर मिसरी ऐ हर नकश यूनानी ऐ।

'पम्मी' ऐ, मिरी जिन्ने, हर औख कटाई ऐ,
अनमोल त्रीमत ऐ, अनमोल जनानी ऐ।

लोई दा सरापा ऐ, अकलै दा खजाना ऐ,
भगवान दे क्या कैह्ने, ओ सिद्ध–गेआनी ऐ।

लफज़ें इच रूहा दी पीड़ें गी भरी भरियै,
में थोड़ा शुगल करना, इक गज़ल गलानी ऐ।

मनदा में तुगी पन्ता जे ठोस सलाह् दिंदा,
तप–त्याग हा रस्ता ते भान्दा मीं ज़रा निं ऐ।

कन्ना च सुनो आईयै–एह गल्ल गै ऐसी ऐ,
दूरा इसी सुनने च रत्ती बी मज़ा निं ऐ।

में रोज़, बिला नागा, औन्नां तुगी मिलने गी
एह् जानदे होई बी, तूं रूह गै जलानी ऐ।

तुस आये तां भुल्ली आं, में गल्ल केह् करनी ही–
तुं'दे थमां में तुंदी केह् चीज चुरानी ऐ

तुस सामनै आये–ओ, एह् सच्च जां सुखना ऐ
मीं अपनी अक्खीं 'प आवै दा बसाह् निं ऐ।

में मरद उसी मन्नां, भगवान गी जो पुच्छै
तूं मेरी दुनियां चा केह् चीज नुआनी ऐ?

दुनियावी जखमें दे मिसरें दे गै शेऽर न एह्
दुनियां थमां में इंदी तसदीक करानी ऐ

इक याद मिगी आईयै, चींढू ऐ भोड़ा दी,
ते य़ाद कराऽ करदी कोई गल्ल पुरानी ऐ।

आखन जे 'वियोगी' गी इशकै नै तबाह् कीता–
एह झूठ सरासर ऐ, एह् गल्त–ब्यानी ऐ।

कल रात कुछ देखा जो दिव्य रूप से रोचक, मनभावन, मन प्रसन्न करने वाला था। पर उसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता है, सिर्फ आत्मिक रूप से अनुभव किया जा सकता है।

अक्षमता

कल रातीं, में सुखनें दे समानै च तरा दा हा,
जे केह् लब्बा जे धरती बी समानै च तरा दी ऐ,
पयून्दी बैरा जिन्ना कद्ध–बुत्त इस धरा दा हा,
जिसी खाने तैं इक देवी मिगी शारे करा दी ऐ,

उसी खद्धा तां इन्नी जैदै मीं सोआदली लग्गी,
जे तन–मन–चित्तै, मज्जे ते मसामें गी भली लग्गी,
उदे व्यंजना च वस्तें दा ऐसा चंगापा हा,
अखें सोआदै च बिराजमान मेरा आपा हा।

कुसैगी अपना दिव्व हाल में समझाई निं सकदा,
उदा ब्यान सीमत लफ्ज़ें बिच्च बस्सी निं सकदा,
ओह् जजबा सुर्गी खुशहाली दा में भुलाई निं सकदा,
अगरचे उसगी में जीभै जरिए दस्सी निं सकदा

मैह्दूदी भाषा एह् मिक्की बड़ा मयूस करदी ऐ,
ते दस्सन होन्दा निं जो आतमा मैह्सूस करदी ऐ।

पम्मी! मुझे ऐसा लगता है कि मेरे मन में इस सृष्टि का मानवीकरण हो गया है और मेरा शरीर खाली–खाली लग रहा है।

बे उनवान–1

त्रीमत मोई तां ऐसा मिगी मैह्सूस होन्दा हा,
जे श्रृष्टि दे खले दा मानवीकरण ऐ मन मेरा।
मीं अपना आप सारा बिलकुल सक्खना ब झोन्दा हा,
ते खाल्ली लगदा हा आला–दोआल तन–बदन मेरा।

तेरे मरने के बाद तेरे से मिलने के लिए किताबों से जानना चाहा पर कोई जवाब नहीं है। मनमरजी से जीना, नसीहतें या शराब में डूबकर जीया नहीं जा सकता है। मर्दानगी के जोर में दुनिया में इच्छा पूरी करने के तरीके हैं पर तेरे बगैर कुछ भी ठीक नहीं है। तेरे बिना जीना नहीं है।

जब सारा संसार चुप है,
सोया है,पर आंखें नम और गला सूखा है,
तुम रोना चाहते हो,
श्वांस ओर नहीं लेना चाहते,
ओर जानते हो,
तुम्हारा प्रिय अब चला गया है।

—कुंवर वियोगी

मरजी गै हैन्नी ऐ

तिरे मरने परैन्त, में, तिरा घाट्टा घटाने तैं,
एह् मन मसरूफ कीता मन्नी—परमन्नी कतावें च।
सोआल पुच्छे ते परमाण तुप्पे अपने लानें तैं,
प मीं निं शान्ति थ्होई कुसै दे बी जवाबें च।

नसीह्तां थ्होन्दियां न बेहिसाबियां खरावें च,
तरीके होन्दे न मनमरजी मताबक जीने दे लक्खां।
अपना आपा माह्नु डोबी सकदा ऐ शरावें च,
ते भक्खां भक्खने तांई न भांत—संभांतियां भक्खां।

प मेरी बिच्छड़ी मशूकने इस दाऽऊ दुनियां च,
तेरै थाह्र किश बी चक्खने दी खाइश मीं हैन्नी।
मिरी मरदानगी दी धार ते बड़ी गै पैन्नी ऐ,
अवो तेरै बगैर जीने दी मरजी गै हैन्नी ऐ।------

रोज़ शाम को खाली कमरे में कुर्सी पर बैठ तेरी फोटो के आगे ज़ोर—ज़ोर से रोना है, शुक्र है कमरे में अकेला हूं। मेरे से अलग करना ही था तो भगवान ने मिलाया ही क्यों? रात को दवाई या दारू पीके सोने पर सपने में तुझे देख बिलख—बिलखकर रोता हूं। पहले एकान्तवासी था, तुझसे मिलने के बाद आबाद हुआ पर तेरे जाने ने अकेला कर दिया है।

Men and women who come into your line of vision from nowhere. And vanish into nowhere.

रोनी

रोजाना सञ औन्दी, ऐ रोजाना सञ औन्दे गै,
में अपने सक्खने कमरे च आईऐ कुर्सी प बौह्न्नां,
ते तेरे फोटू उप्पर सरसरी जन नज़र पौन्दे गै,
में आगा–पीछा भुल्ली जन्ना, फट्टि–फट्टियै रोन्ना।

शुकर ऐ सक्खनें कमरे च अ'ऊँ इक्कले रौह्न्नां,
नितां मीं आप तरसगी दा लोकें ताह्न्ना देना हा।
फ्ही जां मीं हा अपने अत्थरूएं गी रोकना पौना,
जिनें दुख बिच्चो–बिच्च फूकिऐ मनमान्ना देना हा।

अवो अल्लाह् नै तुई मेरे शा जे परेडै लेना हा,
तां तेरा मेरै कन्नें कैह्ल्ली उस मलाप कीता हा?
मिरे प सुट्टी ओह्दा ओ फ्ही करोप जिन्ना हा;
मिरे शा खुस्सियै तुगी प घोर पाप कीता हा।
दवा– दारू दा स्हारा लेईऐ जेल्लै रात्तीं लै सौन्नां,
तुगी सुखनें च दीक्खियै में बि'लकी–बि'ल्कियै रोन्नां।

मिरी दिनचर्या

तिरे परतोने तगरा बलगने तांई जे बड्डेलै,
मिरी मरजी करै तां रोन्नां पैह्ली बारी जीऽ भरियै।
ते दुईबारी रोन्नां डुसकी–डुस्कियै में उस बेल्लै,
जेल्लै तुं निं परतोन्दी पराजत मौतै गी करियै।

अन–परतोनमी समझी करी रवानगी तेरी,
शिकल दपैह्रियै लै त्रिआ रोदन घटदा ऐ मेरा।
बड़ी खराब हालत, तरसै जोग होन्दी ऐ मेरी,
हकीकत जान्नियै जेल्लै कलेजा फटदा ऐ मेरा।

मीं चौथी बारी रोना औन्दा सञा इक्कले बैईयै,
जेल्लै तेरी खशबोई दे चेते मीं सतान्दे न।
तिरे मरने दै वाह्द की में जीन्नां, झूरदे रैहियै,
मिरै कच्छ, बेवफाईयां, आइयै, मेरियां गनान्दे न।

फ्ही रातीं लै में रोन्नां खीरली बारी मिरी जिन्दे,
मिरी दिनचर्या ऐ रोनी लगातारी मिरी जिन्दे।

मेरा, तेरे को मांगना प्रेमीपना था और तेरा, मेरा होना तेरा अपने से बेगानापन था। परमात्मा का अचानक तेरे को बुलाना बेवक्त–बेइन्साफी थी। जैसे अचानक हम मिले उसी तरह अचानक बिछड़ भी गए।

If you are thinking this then think again
This thinking moment you may never gain
That life is full of pain and pain and pain.

चान चक्कता

मिरे, तुगी मंग्गने च प्रेमिया बेसाख्तापन हा;
तिरी सपुर्दगी न झक्की ही ते वालेहानी ही,
तुगी अपनाने च जिन्दे मिरी आतमा–समर्पण हा,
मिगी अपनान्दे लै तूं अपने आपे शा बगानी ही।

तेरा खिंडना बी मेरे कोला मेरिए जिन्दे;
बेवक्ता, बिन बुलाया, बेइनसाफा, चानचक्का ऐ,
मसाली एके च परमातमा दे पाए दे छिन्डे;
जमान्ना दिक्खियै, तेरी सगन्ध, हक्का–बक्का ऐ।

जियां चान–चक्के इक्क–दुए गी अताऽ होए;
ऊ'यां गै अस इक्क–दुए तांई लापता होए।

जीवन,आत्मा और शरीर का मिश्रित संगीत है।
''वियोगी'' आतमा गी मोये दे अरसा होआ ऐ पर ,
जिसम बट्टा समें दी ढाला मूजब रिढ़का करदा ऐ।
– कुंवर वियोगी

अकेलापन

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, उसे समूह में रहने की आदत है जहां वह अपने को सुरक्षित अनुभव करता है। मन अपनी इन्द्रियों से सुख–दुःख अनुभव करता है। मन के दो साधन हैं– शरीर और बुद्धि। मन का विस्तार होता है–भावनाओं ओर विचार से। भावनाओं और विचारों की अभिव्यक्ति से मन को, मनुष्य को आनंद, तृप्ति, संतोष मिलता है। यही दोस्त, परिवार,समाज बनाता है। संतुष्टि के बगैर धन, यश, पद कोई अर्थ नहीं रखता है। मूलरूप से मनुष्य अपनी बात, क्रिया, कर्म की स्वीकृति, अपनों से पाने पर ही संतुष्ट होता है। अपने निजी सुखों–दुःखों को भी अपनों के साथ शेयर करना चाहता है। मन की बात कहने–सुनने वाला न हो तो आन्तरिक रूप से असंतुष्टि होती है। मन की बात करने वाला दोस्त, पति–पत्नि, भाई–बहन, या माता–पिता हो सकते हैं, पर यह आवश्यक है कि दोनों का interest एक ही हो।

अकेलापन दो तरह का होता है। एकान्त में व्यक्ति अकेला होता है पर वह अकेलापन मन को सन्तुष्ट करने वाला होता है। यह सकारात्मक व सृजनात्मक होता है। ध्यान में व्यक्ति लीन होता है तब एकान्त ही चाहता है, काम में तल्लीनता भी एकान्त मांगती है। एकान्त सृजनात्मक होता है। नए विचार प्रस्फुटित होते हैं। कई खोजों के कारण भी 'एकान्त' ही रहे हैं। वहीं अकेलेपन में एक नकारात्मकता होती है। भीड़ में भी व्यक्ति अकेला हो सकता है। अधूरेपन का एहसास, अपूर्णता की अनूभूति एक बैचेनी उत्पन्न करती है। अकेलेपन का प्रहार उसके निजी परिवेश पर होता है और जो वातावरण जीवन शक्ति देता था वह सिमट जाता है।

बाह्य रूप से खुशी पर आन्तरिक रूप से व्याकुलता और बैचेनी होती है जो मन के भावनात्मक पक्ष को बाधित करती है। आन्तरिक आनंद को बाधित करता है। भावों की अभिव्यक्ति बाधित होने से मन का कोमल व्यापार बंद हो जाता है। व्यक्ति शीर्ष पर होने पर या घर का मुखिया होने पर भी अपने मन के निजी कोमल भावों को अभिव्यक्त नहीं कर पाता है। यह घुटन मन को मथती है, जो व्यक्तित्व पर प्रभाव डालती है। इसे कुंठा–निराशा का नाम देते हैं जो गंभीर होने पर अवसाद मे परिवर्तित हो सकती है।

मूक, पूरा मूक... खाली कमरे के एकान्त को सन्नाटे की खामोशी ने भर दिया है। चिंताग्रस्त, चुप, बेकरार, बेसबरे वियोगी को अकेलेपन ने घेरा हुआ है। लोहे की कुर्सी टेबल है जिसपर किताबें फैली पड़ी हैं। अन्दरूनी तड़फ, मसानी इच्छायें, मसान हो रहीं है। पैन–पेन्सिल, एकान्त, अकेलापन सब बस खतम होने के इंतजार में है।

मेरे वामांग में तुम हो,
तुम मेरी गुप्त शक्ति हो,
कितनी ही लंबी छलांग लगा सकता हूं,
अपने लक्ष्य को भेद सकता हूं,
अपनी जिम्मेदारियां निभा सकता हूं,
जब सिर्फ तुम मेरे साथ हो,

तुम्हारी सलाह, तुम्हारी बातें,
तुम्हारी आवाज, तुम्हारी हिरणी सी आंखें,
तुम्हे हंसता देखना चाहता हूं,
तुम्हारा आलिंगन,
तुम्हारा स्पर्श फिर चाहता हूं।
– कुंवर वियोगी

चुप्पी, निःशब्दता, निस्तब्धता, नीरवता, मौन, शब्दाभाव, शान्ति, सन्नाटा, खामोशी सभी silence के पर्यायवाची हैं। घर आने पर, जहां क्वार्टर थे सब दूर निःशब्दता थी। अन्दर के भयानक शोर को बाहर की खामोशी, चुप्पी और नीरवता हरा नहीं पाती थी, बल्कि और उत्तेजित करती थी। ध्यान बंटाने वाला कोई नहीं होता था जो उन्हें उस vishe vicious circle से बाहर निकाल सके ।

अखीरी इन्तजारी

मूक, बिलकुल मूक, बिलकुल मूक, सक्खना कमरा;
अकांतै ते सन्नाटे ते खमोशी नैं भरोचे दा।
'वियोगी' निम्मोझान, चुप्प, बेकरार, बेसबरा;
इक्कलताई दे प्रेतै फगड़ियै दबोचे दा!

मंज्झा झिक्कम–झिक्का, इक्क कुर्सी, टेबल लोहे दा;
कताबां खिल्लरियां दरजनां, खलार पाए दा।
कुसै मसानी जुस्तजुऐ च मसान होए दा,
कुसै अन्दरूनी तड़फनै दै मूजब बित्तोताए दा।

पैन्न,पैन्सलां, कागद ते सोचां पेचान्दर–पेचा,
ते गुन्गी जीभ, सुज्झै–बुज्झै दी खड़ोत मनटुक्कू।
संतापी चौबिएं घैंटें पलेच पाए दा चेचा–
अकांत, इक्कलताई, मूकता ते वक्त अनमुक्कू।

एह् इक्कै खेड़ा दे हिस्से न ते इक्कै खडारी ऐ,
ते सबने गी एह् खेड मुक्कने दी इन्तजारी ऐ।

मिरी आदत गुम–सुम रौह्ने दी
जीवन दे रूक्खा दै थल्लै
इस रूक्खा दी पर छाईं ऐ
ए चंगा थ्हार ऐ बौह्ने तैं
ए थ्हारा मेरे तांईं ऐ

नां हीखी टीसी बौह्ने दी
नां टाह्लें नै पल मौनें दी
मिरी आदत गुम–सुम रौह्ने दी
में गुम–सुम आया हा इत्थें
ते गुम–सुम खीर मुड़ी जाना
में छुपली–छुपली टोरा नै
वकतै कन्नै ऐ जुड़ी जाना
नां आस ऐ अम्बर छोने दी
नां कुसै दै पैरें पौने दी
मिरी आदत गुम–सुम रौह्ने दी
में जून टपानी ऐ ऐसी
जेहदै बिच छोर–छडापा निं
जेहदै बिच हवस निं शोहरत दी
ते बखलापन जां आपां निं
नां लोड ऐ दर–दर होने दी
नां बेईऐ रोने–धोने दी
मिरी आदत गुम–सुम रौह्ने दी
मिरा समतल–सैह्ज सुआतम ऐ
मेरे जीवन विच वलवा निं
ते कुसै कचज्जी मुशका दा
मेरे मगजै पर गलवा निं
नां लोड़ ऐ जादू–टूने दी
नां वजह दुखी बी होने दी
मिरी आदत गुम–सुम रौह्ने दी

– कुंवर वियोगी

इक्क जीवनी

मिरी औकात ऐन्नी ही इच इन्द बी, कीजे,
औं पतला त्रिड्डा हा,
औं मैला त्रिड्डा हा,
औं लौह्का त्रिड्डा हा,
औं लिस्सा त्रिड्डा हा
ते औं डींगा त्रिड्डा हा,

मिगी स्यानें फड़ी लैता ते पत्तें पर ढकाइ दित्ता
में पूरे कर्म जद कीते ते पालन धर्मा दा कीता
ते पीड़े दी ध्रेड़ें गी सबूरा मैं जदन सीत्ता
मिरी रंगत गेइ बदली, मिगी चमकीला तन थोया
सन्गीती ताल्लें कन्ने खेढने आल्ला मी मन थोया
स्याने तद खड़ोइयै मी चबाता नें लगे दिक्खन
गलाइयै खूबसूरत मी लगे ओ बूटे'रा तुआरन
में बोह्त तड़फेया– में फड़फडाये फन्गडू अपने
स्याने हे चतेरे ते अतिअंत मन्ने–परमन्ने
उनें मी खुर्दबीनी नजरें दै राहें पढ़ी लैता,
मिगी कैदी बनाइयै, शीशे अन्दर मी मढ़ी लैता।
ते हून इस्सै मूजब औं स्याना होई आं, कीजे
औऊं मुट्टा त्रिड्डा आं
औऊं चिट्टा त्रिड्डा आं
औऊं बड्डा त्रिड्डा आं
औऊं तगड़ा त्रिड्डा आं
प आल्ली बी त्रिड्डा आं

प्रेम! तुम्हारे रिश्तेदार यह चर्चा करते हैं कि तुम मेरे साथ तंगदस्ती (अभावों)में रहती हो, यह इनामशुदा फौजी तेरा हुक्म का गुलाम है। पर तूने इस वियोगी का कण–कण प्रसन्नता से भर उसे धन्य कर दिया है।

नजरिए

तिरी पेठा दे रिश्तेदार जिन्दे करदे हे चरचे
जे व्होईऐ मेरै कन्नें रेही तुं म्हेशां तन्गदस्ती च।
मिगी हा तेरै कन्नें वालेहाना इश्क अगरचे
प फ्ही बी तूं दुखी रेही ही मेरी सरपरस्ती च ।

मिरी भेठा दे रिशतेदारें दा जकीन हा पक्का,
जे एह् तगमा–शुदा फौजी कवि गुलाम हा तेरा,

ते तेरी कुंग्घली हस्ती च हा मशगूल बेझक्का,
इदे कनै–कनै प हुकमरान काम हा तेरा।

तिरी सपुर्दगी लेकन मिगी जवाब दिन्दी ही,
जे तुक्की मेरै छुट्ट बाकी दुनियां दी फिकर हैन्नी।
तूं जि'यां मेरै बिच्च आपा छोड़ियै समीन्दी ही,
उदे शा नन्ददार कोई संभोगी शिखर हैन्नी।

'कुवंर वियोगी' दा जीना तूं जिन्दे धन्न कीता हा,
ते कैन्तर–कैन्तर ओह्दे होने गी प्रसन्न कीता हा।

रणधीर जानते थे कि किसी भी ज़ख्म–सदमे के लिए वक्त एक औषधि है पर यह वक्त काटना भी एक सदमे से कम नहीं है। यह स्वयं का अनुभव है।

वक्तै दा हरबा

सरासर गल्त–ब्यानी, झूठ, धोख, बरगलावा ऐ,
जे वक्त डूंह्गे शा डूंह्गे जखम बी ऐ भरी दिन्दा।
झूठै दा सचाई गिर्द साह्–घोटू कलावा ऐ,
जे वक्त सदमें दा कसरीपुना राज़ी करी दिन्दा।

जेह्ड़े आखदे जे वक्त सदमें दा मदावा ऐ,
उ'नें लोकें गी मेरा दोस्तो खु'ल्ला बुलावा ऐ।
मुआइना करन आईयै मेरे सारे अ'ल्ले जखमें दा,
ते स्हाब लान आईयै वक्तै दे बेस्हाब सदमें दा।

मिगी जकीन ऐ एह्लोक इस नतीजे पर पुजंङन,
जे जेह्ड़े सदमें ठीक ते जखम भलोए दे होङन,
ओह् सदमें छिछलियें मलाटियें दियां घसीटां न,
ते जखम चम्मै प उपरलियां लघू घरीटां न।

ते सदमें ते जखम छपैलना वक्तै दा हरबा ऐ,
'वियोगी' गी पता ऐ, एह् उदा निजी तजर्बा ऐ।

लोग अपने किए वादे अक्सर भूल जाते हैं, तेरे पास आने के लिए मैं खुदकशी करूं पर डर लगता है कहीं भूत–प्रेत बना तो ? दुनिया त्यागकर भी तेरी मौजूदगी महसूस की जा सकती है। इसलिए अपना वादा भूल न जाऊँ तो लिख देना चाहता हूं।

इस करियै लिखा करनां

जुबानी वा'यदे करियै लोक अकसर भूल्ली जन्दे ना,
में अपने कीते दे वा'यदे गी इस करियै लिखा करनां।
तिरे मरने परैन्त जीवन दे जेह्ड़े चकन्धे न,
उन्दे चा निकलने दे तरीकें गी मिथा करनां।

जे में खुदकशी करियै मरी जाने दी सोचां तां,
मीं भूत बनियै दर–दर भटकने थमां ऐ डर लगदा।
जे ढेरी ढाईऐ आपा बिस्सरी जाने दी सोचां तां,
मी अपनी इन्द्रियें दे भड़कने थमां ऐ डर लगदा।

मन आखे पांडुएं आंह्गर बिजन जिस्म त्यागे दे,
त्यागी ओड़ां दुनियां गी ते तेरै कोल आई पुज्जां,
लाने लान्दे रौह्न्नां अज्जकल एह् गै सुत्ते जागे दे,
जे तेरी मखमली मजूदगी कियां करीं बुज्झां?

लुकाई आखै निं 'वियोगी' नैं पूरा निहो करना,
में अपने कीते दे वा'यदे गी इस करियै लिखा करना।

ओ प्रेम! मरने की जगह जीने की भट्टी में गमगीन होना, काम में तुझे भुलाने, अपने दर्द की आवाज को अनसुना कर जीना चुना है। इसलिए मुझे बेवफा मत समझना।

जकीनन बेवफा समझग

तुक्की बिस्सरने च अप्फल होईऐ आखेआ दरदै,
कीह् निं यारे–बेल्लियें दी सिक्खें मात्तें गी सुनचै।
ते तेरी यादें गी छपैलियै कम्में दै दरपर दै,
कीह् निं रिश्तें दीयां नमियां–नमियां बुनतरां बुनचै?

कीह् निं मरने दी मरजी दै थ्हार जिन्दगी चुनचै,
नराशा छोड़ियै, आशा दे इशकै च मगन होचै।
ते जीने दी भखी दी भट्ठी च गमगीनियां भुनचै,
मशूकै दी तपाशै च कुसै मशूकै गी थ्होचै?

'वियोगी'' गी जदूं बी दर्दे दी एह् वाज़ सनोचै,
सुनीगी अनसुनी करियै नज़र अन्दाज करदा ऐ।
कीजे सोचदा ऐ सुनियै खबरै यार केह् सोचै?
मनोमन अन्दरो–अन्दर गचोन्दा ऐ ते डरदा ऐ।

गोआचे दे मशूकै गी उदी एह् सोच जे सुनचग,
जकीनन ओह् 'वियोगी' गी ,जकीनन बेवफा समझग।

ओ मेरी माशूक़ा आ, मैं माचिस की तीली और तू चन्दन की अगरबत्ती है, हम एक दूसरे के पूरक हैं पर बड़ा अन्तर है। मैं अपनी पीड़ा के कूड़े को जलाता हूं जो रोशन हो भस्म हो जाता है पर तू जलती है तो हर तरफ खुशबू फैलाती है। पर तू जलती तो मेरी पीड़ा से ही है। मेरी पीड़ा पर तू खुशबू का

परदा डाल सकती है तो क्या जुदाई का इलाज ऐसा तिलिस्म हो सकता है?

एह् करिशमा होई सकदा ऐ!

में तीली माचसा दी आं, तुं संद्धली अगरबत्ती,
आ फ्ही चेतें दी अग्गै च अस बलन–धुखन लगचै।
ते बलदे–धुखदे रौह्चै हिसले बिन इकदुए दी सत्ती,
मिरी गोआची दी मशूकने, आ अज्ज एह् करचै।

में कूड़ें च जलां ते जलियै पीड़ें गी करां रोशन,
तुं जलियै पूजा आह्ली थाली च डोआरें खुशबुआं।
करें खुशबुएं कन्नें पीड़ें दा तुं पालन ते पोशन,
में अपनी पीड़ें कन्नें तेरियें खुशबुएं गी छुआं।

फ्ही जेल्लै अस भसम होचै ते मेरी रोशनी हिसलै,
तां शायद मज्जा चूसू न्हेरा पीड़ा गी लकाई छोड़ै।
जां जेल्लै तेरी खशबोई सुहामी चारसू फैल्लै,
तां शायद मेरियें पीड़ें दै उप्पर परदा पाई छोड़ै।

अजें ते हो या निं पर एह् करिशमा होई सकदा ऐ,
जुदाईऐ दा इलाज एह् तलिसमा होई सकदा ऐ।

अथर्ववेद में चकवा–चकवी के जोड़े का विशेष वर्णन है। जीवों की जोड़ी की निष्ठा व अप्रतिम प्रेम के प्रतीक चकवा–चकवी माने गए हैं। प्राचीनकाल से ही कवियों द्वारा वियोग और संयोग के प्रतिबिंब के रूप में लिए जाते हैं। माना जाता है कि दिन में इनका जोड़ा साथ में रहता है पर रात को बिछुड़ जाता है और रात भर चकवा, चकवी को पुकारता रहता है। प्यासे चकवे की चीत्कार स्वाति नक्षत्र की एक बून्द के लिए भी होती है। स्वाति नक्षत्र से गिरी पानी की बून्द यदि सीप में गिरती है तो मोती

बनती है, यदि सांप के मुंह मे गिरती है तो जहर बनती है पर अगर चकवे के मुंह में गिरती है तो उसको तृप्त करती है।

मेरा चित्त चकवे के समान स्वाति नक्षत्र की अमृत की बून्द की तलाश में भटकता है। चकवी के मिलते ही दुनिया स्वर्ग के सागर के समान लगती है। पर चकवी का स्वाद चखने पर यह सागर भी खाली लगता है। तेरी तलाश में यह चकवा ''चश्मे'' का चक्कर लगाता रहेगा, न मिलने पर मर मिटेगा।

चेची तपाश

मिरा चित्त चकवे आंगर लूरमलूर ऐ तपाशै च,
ते तेरी दोसती दी चासनी दे तोपे तुप्पा दा।
प नां नशान हैन्नी डिग्गलें दा सुन्ने गासै च,
ते बोलबाल्ला ऐ सारे कड़ाकेदार धुप्पा दा।
एह् मन, तरेआए दा चकवा, जदूं दिखदा जिमीं बक्खी,
तां दुनियां लबदी ऐ सोह्नी जनैन्तें दा वसीह् सागर।
प इन्नै जिस दिनै थमां तिरी मिठास ऐ चक्खी,
जनैन्तें दे वसीह् सागर च, एह्दी खाली ऐ गागर।
उडदे रौह्ना इस चकवे नैं गासै च अदूं तिक्कर,
जदूं तिक्कर तिरी प्रीतै दा इन्नै पातर निं होना।
इन्नै लान्दे रौह्ना छल–छल बगदे चशमें दे चक्कर,
मरी जाना, तिरै बगैर इस तरेआए दे रौह्ना।

ग़मों का अन्त नहीं है पर सुखों का स्तोत्र भी कभी सूखता नहीं है। यार दोस्त इस गम से बाहर आने को कहते हैं, ज़िन्दगी कभी फीकी नहीं रहती है। पर मैं तेरी याद भुला नहीं सकता हूं, तेरे बिना जीवन मौत से भी बद्तर होगा।

मौती कोला बी बदतर

बगाईऐ अत्थरूं कदें गमें दा सौन मुकदा निं।
सगूं डूंह्गे जखम जीने दै उप्पर उक्करदे न एह्।
इक सुखना मरै तां सुखनें दा सरोत सुकदा निं।
सगूं मुगते गमें दे खेतरें च उस्सर दे न एह्।

तिरै मरने दै बाह्द यार–बेल्ली घेरियै मिक्की,
नसीतां दिन्दे न जे लोककियां इक्कले होईऐ।
अपनी जिन्दगी गी रौह्न निं दिन्दे सदा फिक्की?
कियां मैह्नी खेज़ होन्दे न अनरगले होईऐ?

कदें मलामतां करदे, कदें खरियां गलान्देन,
मगरमें डुसकदा रौह्न्नां ओ मेरे यारै दे प्रेता।
कत्थां तिलसमातियां ते रसभरीयां सुनान्दे न,
मगर मीं नीरनें च बन्नी रखदा ऐ तिरा चेता।

तिरै आंगर त्रीमत बिन ऐ जे मिगी पेआ जीना।
कसम तेरी,ऐ मौती कोलाबी बदतर नेआ जीना।

तेरे बगैर जीने की मैंने कोशिश की, जितनी मैं कर सकता था। तू जहां भी है, जैसी भी है, मेरी 'मिश्री' सुन–शरीर थकने लगा है।

जेल्लै मरजी हुट्टी जा

तिरै बगैर जीने दीआं तरकीबां करी चुकेआं।
में कोशश कीती ऐ जिन्नी मिरे शा कोशश होन्दीही।
तुं जित्थें बी एं, जैसी बी ऐं, मेरी मिशरिए सुनेआं,
जियां सुनदी ही मन लाईऐ जेल्लै जीन्दी–भौन्दी ही–

शरीर हुट्टियै बी लग्गा रौह्न्दा भाएं त्रुट्टी जा,
प माह्नु किश करी सकदा निं जेल्लै मरजी हुट्टी जा! ----

हे ईश्वर! पहले तो उस हूर को मुझसे मिलाया, फिर अचानक उसे दूर कर दिया। तूने मुझे लिखने का हुनर दिया है कि मैं दुःखों के गीत लिखता रहूं और तेरे इस निर्दयी मातम में कैद रहूं। मर्मान्तक पीड़ा दी, संगीन गम दिए, बतला क्या मैंने कभी बगावत की? तू ही सजा देता है तू ही फैसला देता है पर अब अगर तू ये समझे कि मै सहमा–सहमा सब सहता रहूंगा तो यह तेरी गलतफहमी है।

कुफर

पैहलें आपूं तूं मेरे गितै इक हूर ताल्ली ही
ते उसगी चाहनें तांई तूऐं मीं मजबूर कीता हा
उसी लेई जाने दी फ्ही दस्स हा कीह् इन्नी काह्ली ही?
उसी की चानचक्क मेरे कोला दूर कीता हा?

मिगी आपूं गै तुं लिखने दा हुनर बख्शियै पुच्छें,
''गमें दे गीत लिखियै कैह्ल्ली में रोआन्नां लोकें गी?''
मिगी आपूं गै जिंदगी च क़ैद रक्खियै पुच्छें,
''में कैल्ली घोखदा रौह्न्नां तिरे निरदेई शोकें गी?''

मिरी बगावतै दी इक्कली मसाल देईऐ तूं
मिगी ज़ालम गलाईयै आपूं तूं मजलूम वनना एं!
पीड़ां अनगिनत, संगीन ते विकराल देईयै तूं,
आपूं फैसला गोह्, आपूं गै हजूम बनना एं!

तुं जेकर सोचना एं जे में जीन्नां सैह्मी–सैहमी ऐ–
एह् तेरा वैह्म ऐ बिलकुल, सरासर गल्त–फैहमी ऐ।

ओ गहरे सागर बता तेरे में कितना पानी है? ओ आकाश बता तेरे में कितने तूफान हैं? ओ मन! तेरे में कितनी सोचें हैं?

ओ आत्मा, तू क्यों इस शरीर में आयी? तुझे किसकी तलाश है? हे ईश्वर तूने मनुष्य क्यों बनाया? नर/मादा क्यों बनाया? बनाया तो बिछुड़ा क्यों दिया? सारा तहस–नहस क्यों किया? वियोगी तू ही प्रश्न करता है, तू ही जवाब देता है।

?

डूंह्गे सागरा, तेरे च दस्स पानी ऐ किन्ना?
वशाल अम्बरा, तेरे च दस्स डुंह्ग ऐ किन्नी?
मना, मीं दस्स हां तेरे च गौह् तुफानी ऐ किन्नां?
अकले, तेरै बिच्च सोचने दी चूग ऐ किन्नी?

रूहे, दस्स हां शरीरै बिच्च कैहल्ली तुं आई?
सोझे, दस्स हां तुगी असल तपाश कैह्दी ऐ?
लोड़, दस्स मीं, की इन्नी बधियै हड़बड़ी पाई?
नराशा, बोल ना असलै च तुक्की आस कैह्दी ऐ?

अल्लाह्–ताल्ला, दस्स की मनुक्खै गी बनाया ई?
अगर जरूरी हा तां कैह्ल्ली माह्नु–मादा गी घड़ेआ?
अगर इब्बी जरूर हा तां की बछोड़ा पाया ई?
जीना नास्तोनाबूद कैह्ल्ली कीता ई अड़ेआ?

'वियोगी' की सोआल आपूं, आपूं गै सोआली ऐ?
उसी अपनी सोआह्नी कन्नैं कीह् रलने दी काह्ली ऐ?

ओ चिड़िया! ये जानते हुए भी कि चिड़े खुदगर्ज होते हैं, तू अपने चूजों को उसके भरोसे छोड़ गई। ऐसा अनर्थ क्यों किया? वो भूखे हैं। कहीं बाज शिकारी उनसे अपनी भूख न मिटा ले। वियोगी तो अपने गम में लीन है, तेरे बगैर पंखहीन चूजे शिकार होगें या भूख से मर न जायेगें?

मां–म्हेटर बोट

तुं अपने बोटें गी छोड़ी करी उड्डी गेई चिड़िए,
एह् क्हीकत जानदे बीं जे चिड़े खुदगर्ज़ होन्दे न।
चिढ़े दै स्हारै छोड़ियै तुं नर्थ कीता ऐ अड़िए,
तां गै बोट तेरे अज्जकल भुक्खे– भाने रौह्न्दे न।

तिरे बोटें गी डर कांएं, इल्लें, बाजें, शिकरें दा,
प अपनी भुक्खें फ्ही बी ओह् करलाऽ करदे न।
नवारण करनें तांई अपनी जान–लेवा भुक्खें दा,
इनें शकारियें गी आह्लड़ा दरशाऽ करदे न।

एह् तेरे भुक्खे–भाने फंघ–हीन बोट न व्याकुल।
तिरे चिड़ेगी अपनी सुर्त ते उन्दी फिकर हैन्नी।
'वियोगी' आपूं अपनी रोनी च गलतान ऐ बिलकुल।
उसी एह् लत कबूलने च हालांके फखर हैन्नी।

तिरै बगैर बोटें गी ऐ जां शकारियें खाना ।
जां एह् होने शा पैह्लें उनें भुक्खे मरी जाना।

मैं अपने को खाली बोरी सा अनुभव करता हूं। तेरे होने से मैं कीमती था पर अब तेरे न होने से बोरी 'ढिल्ली' हो गई है। तेरे आने से पहले मैं मामूली था।

खाल्ली बोरी

में इक बोरी आंगर आं। जदूं खाल्ली–मखूली हा,
तां पुखता हा ते मैह्न्गा हा, अबो ढिल्ला, नाकारा हा।
मिरै बिच्च तेरे भरने पेशतर ते में ममूली हा,
ते मेरी गैर–ममूलियत दा नां मूजब, नां चारा हा।-----

मैं भुलक्कड़ शख्स नहीं हूं , अपनी तिलोत्तमा जैसी मादा के सानिध्य में रत हो हर बेवजह चीज भी वजह बन जाती थी।

में भुलक्कड़ शख्स हैन्नी सो

मिरी तिलोतमा आंह्गर परिपूरण जो मादा ही,
उदा सोआद, बेसोआदला करै सोआदें गी।
इक्क–मिक्कता मेरी ते ओह्दी इन्नी जादा ही,
जे मौका उस्सरने दा मिलदा निं नमीं मुरादें गी।-----

खुदकशी करियै

तेरै गोचर जो होया हा, सब किश जाननी एं तूं।
अगोचर होया जो तेरै, ओह् तुगी सुनान्नां में।
ते तेरे प्रेतै गी, दुआ जनम कोई लैने शा पैह्लूं,
मुड़ियै मेरा होई जाने दा मतला शी बनान्नां में।-----

तेरे निधन के बाद तेरी सारी चिट्ठियां एकबार पढ़कर जला दीं कि कहीं दूसरा पढ़ न ले। ये नितान्त निजी हैं। ये प्रेमकोट है।

साढ़ियां चिट्ठियां

तिरे निधन परैन्त; अपने ते तेरे ट्रैंकें चा,
में, साढ़ै मन्झ लखोई दीयां, सब चिट्ठियां लेईयै
उ'नें गी फूकने शा पेशतर इक बारी फ्ही पढ़ेआ
ते फ्ही ओह् फूकियां मत्थै छुआईऐ–मिट्ठियां लेईऐ।

इ'नें गी निन्दै निं लुकाई, जिन्दे, इस डरै मूजब;
में फूकी ओड़े न पुलन्दे इन्दे, इस डरै मुजब।----

तेरी चिट्ठियां

तेरी चिट्ठियां दे अक्खर–अ,क्खर, लफ्जै–लफ्जै च,
तिरी पूरी सपूर्दगी दा कासमां कलावा ऐ।
इन्दे लैह्जें ते मजमूनें; लफ्जें ते तलफजै च,
मजूद सील लाडै कन्नो कन्नी तत्ता लावा ऐ।

लेकन फ्ही बी जेल्लै तेरियां में चिट्ठियां पड़नां,
हमेशां हामिएं ते डूरें दे उच्चे किले चढ़ना। ----

'प्रेमकोट'

तेरी चिट्ठिएं गी लाख–मोह्रबन्द करो आईये,
पूरे चाह्लिएं साल्लें प्रेन्त खोह्लने तांई;
वसीयत नामे बिच एह् हदायत पक्की लखोआईऐ
इ'नेंगी अगली पीड़ियें गितै अनमोलने तांईं,

मेरी इक्क बारी जोरदार मरजी कीती ही
अतें में करन बी लगा हा पर एह् करने शा पैह्लें,
तिरे खुद्दारमे नि जीपनै एह् मत्त दित्ती ही
जियां दिन्दी ही तुं म्हेशां अपने मरने शा पैह्लें।

'वियोगी' शोशे बाजिएं, तरीफें, दादें दै तांई,
तुं अपनी प्रीतै दे निजीपनै गी फाश निं करेआं।
ज्हान गोचरता होन्दी ऐ जैह्र यादें दै तांई,
इ'नेंगी गोचरियै यादें दा सत्ते आ नाश निं करेआं।

उ'दा बनाए दा एह् प्रेमकोट त्रोड़ी निं सकेआ।
में अगली पीड़िएं गितै एह् विरसा छोड़ी निं सकेआ।

ध्रुवतारा स्थायित्व, नित्य, स्थिरता, अचल, अनंतता का प्रतीक है। वियोगी जी ने व्यक्ति को स्वंय को ध्रुवतारा बनने को कहा है। व्यक्ति स्वंय का ध्रुवतारा बनता है का अर्थ स्वंय की आत्मा को पहचानना है। तब वह आत्मा ही उसकी ध्रुवतारा बन जाती है। आत्मज्ञान या आध्यात्म का ज्ञान होने से संसार में कुछ भी नहीं बचता है। कुछ भी जानना बाकी नहीं रहता, आत्म सहारा होने पर किसी बाह्य सहारे की जरूरत नहीं होती, किस्मत पर आधारित न होकर खुद ही अपनी किस्मत बनाता है, होनी उसकी चाकरी करती है, देवता–दानव के प्रभावों से दूर रहता है। मनुष्य के डर–शक, भूत–भविष्य के कर्म सभी अप्रभावी हो जाते हैं। आकाश में चमकते ध्रुवतारे के समान मनुष्य का आत्मज्ञान ही जीवन की धुरी, स्थिरता, अचलता, अनंतता और नित्यता है। इसलिए मनुष्य को स्वयं का ध्रुव तारा बनना चाहिए। (लगता है इस तरह के विचारों का प्रस्फुटन वियोगी जी की जीवन धारा को उनके वर्तमान दौर से निकलने का इशारा हो सकता है)

चमकदा रौह्न्दा ऐ ध्रुवतारा

बनी सकै मनुक्ख जेकर आपूं अपना ध्रुवतारा,
तां उसगी सिक्खें, सखलाईयें दी लोड़ पौन्दी निं बिलकुल।
देऐ मनुक्खैगी जो ओह्दी अपनी आत्मा स्हारा;
उसी तां बाह्रले स्हारें दी लोड़ होन्दी निं बिलकुल।

मनुक्खी किसमतें, असरें ते हास्सें, रोनिएं उप्पर,
तां ऐसी आत्मा मुकम्मल हुकमरानी करदी ऐ।
ते ओह्दी चलदी ऐ अनहोनीयें ते होनियें उप्पर;
फरिशतें ते शतानें कन्नें ओह् मनमानी करदी ऐ।

डरें ते शक्कें दे छौरे निं खैह्ड़ा छोड़दे भामें,
ते कर्मे दे कबत्तें भूतनू मजूद रौह्न्दे न।
ते लोभी कारियां निं छोड़दे चाहें दे परछामें;
कन्नें च मूल ते मनें च बनियै मूल रौह्न्दे न।

मनुक्खै गी एह् घेरी रक्खन भामें अन्दरा–बाह्रा,
फिरी बी अपनै थाह्रै चमकदा रौह्न्दा ऐ ध्रुवतारा।

सुबह उठकर तैयार हो नौकरी पर जाना ,वहां से आकर मेस का खाना खाना। सूने कमरे में फिर वही अकेलापन, निर्जन एकान्त, आखिर किताबें भी कब तक पढ़ी जा सकती हैं? टीवी कब तक देखा जा सकता है? बीच में कभी ऑफिस का काम होता, शाम–रात का ऊबाने वाला सन्नाटा, न कोई संगी न साथी, यूनिट के लोगों से मेल–मिलाप सीमित ही होता है। मन कितना ही दुखी क्यों न हो पर करीबी लोगों से संवाद मन को हल्का करता है। परिवार के सदस्य यदि अपनी सुविधानुसार बारी–बारी साथ रहते तो शायद स्थिति इतनी भयानक नहीं होती। अवसाद में आदमी कुछ भी कर सकता है। पत्नि की मृत्यु के चंद दिनों बाद ही निपट एकान्त/सन्नाटा/घर का तितर–बितर होना/उम्र के इस पड़ाव पर सारे रास्ते बंद होना/अनिश्चित भविष्य, किसी भी व्यक्ति को पागल होने या खुदकशी करने को मजबूर कर सकता है। ऐसे में आदमी खुद भी निकलने की कोशिश करे तो स्वयं का मन ही कचोटता है । मन के ये दो विपरीत भाव आदमी को विचलित करते हैं। ये स्वयं को ऐसे वातावरण में कैद करना है। कहीं सुना था.....

कल खो दिया आज के लिये
आज खो दिया कल के लिये
कभी जी न सके हम आज
आज के लिये
बीत रही है जिन्दगी, कल आज और कल के लिये

लोग पूछते हैं कि तेरा चक्काजाम क्यों है? मैं बोलता हूं कि मेरा जीवन एकतरह से लकवाग्रस्त है। मेरा जीवन इस मायूसी की गिरफ्त में है। मेरे जीवन के कलपुरजे गड़बड़ा गये हैं। जीवन समुद्र की मायूसी किसी तरह न बाहर निकलती है न पिघलती है। मैं इसमें उलझ गया हूं इस कारण चक्काजाम है।

चक्काजाम

कोई पुच्छै तां दस्सां–कैह्ल्ली चक्का जाम ऐ मेरा,
ते कैहल्ली मेरी जिन्दगी ऐ लकवे दी गरिफ्ता च?
संगोड़ोन्दा जा'रदा ऐ कैहल्ली मेरा जीने दा घेरा?
में बन्द की आं, इस घेरे दे रकबे दी गरिफ्तां च?

खड़ोतां मेरिएं सरगर्मियें प कैहल्ली हावी न?
मनै उप्पर मजूसिएं दी कैहल्ली हुक्मरानी ऐ?
मिरे कलपुरजें अन्दर आई दी कैसी खराबी ऐ?
मिरे खराबे दे समुन्दरै च किन्ना पानी ऐ?

कोई पुच्छै तां दस्सां मि'म्मी इस परागन्दगी बाबत,
जिसगी बाह्र निकलने दा कोई मौका निं मिलदा।
पुच्छै, घेरें च विराजदी उस तीरगी बाबत,
जिदे च गुब्बर पिरघलने दा कोई मौका निं मिलदा।

कोई पुच्छै तां दस्सां कैह्ल्ली चक्काजाम ऐ मेरा?
बगैर ओसदै केह् हाल, केह् अंजाम ऐ मेरा?

प्रसिद्ध पचतंत्र की कहानी है... लालच का सातवां घड़ा, जो कभी नहीं भरता। इच्छाओं के सभी घड़े भर जाते हैं पर लोभ का घड़ा कभी नहीं भरता है। कारण, एक इच्छा पूरी होते ही दूसरी इच्छा जन्म ले लेती है। इस तरह अनंत इच्छायें एक के बाद एक पूरी होने पर भी मन कभी भरता ही नहीं। आदमी

सारी मान–मर्यादा, धर्म–कर्म को तिलांजलि दे देने पर भी अपने लालच को पूरा नहीं कर पाता है। ऐसे ही पम्मी तू मेरे लिए सातवां घड़ा बन गई है। इसको भरने का मेरे पास कोई साधन नहीं है। तेरी आकांक्षा कभी पूरी नहीं होती है।

सतमा घड़ा

सुने दा ऐ जिनें पंज तैन्तर, पक्क जानदे होने,
जे कियां राजे दे नाईआ दा घर–कुल्ला तबाह् होया।
खुशी होई परेशानी, बिकी गए लाड़ी दे गैह्ने,
प फ़्ही बी भरन ओह्दे शा निहा सतमा घड़ा होया।
ई'आं गै , हां ई'आं गै, हां बिलकुल ई'आं गै कुड़िए,
तुं मरियै, मेरे तैं, पंज तैन्तरी सतमा घड़ा होई।
में इसगी भरने दे जतने च आं मसरूफ जिन्दड़िए,
प इसगी भरने दा साधन मिगी लब्बा निसो कोई।
प फ़्ही गी मानवी रूपै च, में जिन्दे, मुहाली आं,
ते पंज तैन्तरी सतमे घड़े दै आंगर खाल्ली आं।------

वियोगी कहते हैं कि उनकी गृहस्थी पांच चीजों से बनी माला थी। उनकी श्रीमती एक धागा थी, पुत्रियां तीन हीरे थीं और स्वयं बट्टा थे। जिसने सबको संगठित रक्खा था। गृहस्थी में हंसी–खुशी का आलम था, आनंद अपने चरम पर था, तभी अचानक सुनामी का जलजला आया और ''पंजवसतमी'' माला नष्ट हो गई। धागा भस्म हो गया, अपनी काया ही बदल ली और धागे के नष्ट होते ही सब बिखर गए। हीरे माला से बिछुड़ गये। बट्टा मरसिंया लिखता रह गया।

इक माला दा दुखान्त

मेरी घ्रह्स्ती ही इक नेही पंजवसतमी माला,
जेह्दे च इक्क बट्टा, इक्क धागा, त्रै हीरे हे।
मेरी घ्रह्सती च लग्गे हा चर्म नन्दें दा ठाला,
हास्सें, गुड़कनिएं दे ते गड़ाकें दे जखीरे हे।

घागा मेरी त्रीह्मत ही ते हीरे मेरियां धीआं,
इनें हा मेरी जिन्दगानियां घेरी रक्खे दा।
अमुल्ली वसतें मंझ बट्टा कुंवर वियोगी हा मियां,
जुसी हा वाकिएं संभालिऐ खडेरी रक्खे दा।

इक दिन दिल कम्वाने आह्ला भैंकर जलजला आया,
पंजवसतमी घ्रह्तीमाला त्रुट्टी–फुट्टी गई।
फकोई ऐ राख होई गया हा धागा बदलिऐ काया,
सुनामी भीमकाय आईऐ सब किश लुट्टी–सुट्टी गई।

हीरे सत्तबखले थाह्रें हारें च मढ़ोई गए,
लेकन बट्टे दे दो चार मरसिए लखोई गए।

तेरे मरने के बाद दोस्त मिलकर समझाते हैं कि ज़िन्दगी को अकेले काटना ठीक नहीं है। आंसू बहाते, अपने जख्मों को जिन्दगी का नासूर बनाते जीने का कोई अर्थ नहीं है। एक की मृत्यु होने से सुखों के स्त्रोत सूखते नहीं हैं। प्रेम तेरे साथ मरने से ज्यादा दुःख तेरे बगैर ऐसे जीने में है।

वगाईऐ अत्थरूं कदें गमें दा सौन मुकदा निं
सगूं डूह्गे जखम जीने दे उप्पर उक्करदे न एह्
इक सुखना मरै तां सुखनें दा सरोत सुकदा नि
सगूं मुगतें गमें दे खेतरें च उस्सरदे न एह्

तिरे मरने दै बा यार–बेली घेरियै मिक्की
नसीह्तां दिन्दें न जे लोक कियां इक्कले होईयै
अपनी जिन्दगी गी रौह्न नि दिन्दे सदा फिक्की
कियां मैह्नी खेज होन्दें न अनरगले होईयै?

कदें मलामता करदे, कदें खरियां गलान्दें न
मगर में डुसकदा रौह्न्ना ओ मेरी "प्रेमी" दे प्रेता
कत्थां तिलमातियां ते रसभरियां सुनांदे न

मगर मी नीरनें च ब'न्नी रखदा ऐ तिरा चेता

तिरे आह्गंर श्रीमत बिन ऐ जो मिगी पेआ जीना
तिरी सगंरू ऐ मौती थमा बदतर नेहा जीना

तुझे भुलाने की कितनी ही कोशिश की है, जो तुझसे छुपा नहीं है, पर भुला नहीं पाया हूं। तुझे चाहने की इच्छा अभी भी मन की गहराईयों में कहीं रोशन है। पुनर्जन्म में विश्वास नहीं करता हूं। मै ज़िन्दा ही तेरा इन्तजार करता हूं। जानता हूं मेरी खुशी के लिए यह ज़हर है।

रेहा वायदा.....

अपनी खिंडी दी त्रीमता गी सुरगा च मिलियै,
में दिखगा मेरे कोला खिंडियै के करा दी ऐ।
जीन्दे वेलै हर जनमा च इक रौह्ने दा दम भरियै,
मनुक्खी दम–दलासे बिच किन्नी कुसचाई ऐ।

अगरचे जैह्र ऐ

तुगी भुलाने दी मुद्धत थमां साज़श करा करनां,
तिरे शा परदा निं कोई, कोई छपैल हैन्नी सो।
तुगी भुलाई निं सकेआ,अवो कोशश करा करनां,
तिरै आंगर मशूकन गी भुलाना सैह्ल हैन्नी सो।
में, जिन्दे बलगै करना शायद तेरी वापसी तांईं,
अगरचे जैह्र ऐ एह् बलगना मेरी खुशी तांईं।

अधूरापन

मीं हास्सिये कम्मै जां हिक्ख कम्म हा केवल
अजें तक आई निं सकेआ एह मेरी समझ च पूरा

कदें हिरखै कीता मेरे सारे कम्मे गी अप्फल
कदे अमुक्क कम्में बखभोआ हा हिक्खै गी झुरा
मीं इस अधूरेपन नै दित्ती ही अनैत खिन चित्ती
ते मेरी रूहा दै उप्पर हा कीता कासमां गलवा
नेक किसमतै नै मीं अति मसरूफियत दित्ती
ते मिक्की सोच औंदी ऐ मना इस्सै करी कुशवा
अजें तक अंतर आतमा दे सम्मन टालदा आयां
ते एहदी दालता च अपनी होन दित्ती निं पेशी
वो अज्ज जिदंगी दी अद्ध मझाटै आइयै सोचा नां
जे परखां अपने हिरखा दी ते कम्मैं दी कमी–वेशी

जोधपुर
12–9–88

गमों के अंधकार में उम्मीद की किरण नजर आती है। रोशनी की किरण को कोई भी रोक नहीं सकता है। इश्क की आग, पीड़ा की हूक और प्रकाश की किरण को जमाना रोक नहीं सकता है, किसी न किसी छिद्र से प्रवेश कर ही जाती हैं। गम और खुशी का अटल संबंध है, इनका चक्र है। गम के बाद खुशी आती है।

रिशमा जे अमादा होन औने प, मनुक्ख रोकी निं सकदा
वित्थें चा, दराड़े चा, झरोकें शा ओ आई जाङन
मजूद अगनियें गी कक्ख–कुक्ख रोकी निं सकदा
सगूं कक्खें देर कद्व अगनियां मतियां बधाई जाङन

रिशम उमेदा दी, इशका दी अग्ग, हूक पीड़ा दी
टोकी सकदा ऐ जमाना लेकन रोकी निं सकदा
टोह् दिक्खी सकदा ऐ रिशमें ते अग्गें दी क्रीड़ा गी
मगर नतीजिया सकोन–सेकन रोकी निं सकदा

दुखें दे न्हेरें विच रोशनी दा होना ऐ लाजम
गमें दें पाले विच्च अग्ग बी मजूद होन्दी ऐ
सुखें दी रोशनी दा न्हेरे च वदलोना ऐ लाजम
खुशी विच सरदी गरमैशै दे वावजूद होन्दी ऐ

अटल असूल ए लोको कदें बी उक्की निं सकदा
गमें ते खुशियें दा अमुक्क रिशता मुक्की नि

अपने गमों से बाहर आने के प्रयास में वियोगी अपने को थोड़ा बेवफा अनुभव करते हैं। अपने ध्यान को दूसरी तरफ मोड़ने पर उन्हें लगता है कहीं ये गलत तो नहीं? हर वक्त गम में डूबे रहने, हर समय आंसू बहाने की दिनचर्या से उबरने की कोशिश में उन्हें लगता है कि वो उसे अपने से दूर कर रहे हैं। व्यापार में हर वक्त हानि को रोने से काम नहीं चलता है, उससे उबरने के प्रयास करने पड़ते हैं। एक स्वस्थ व्यक्ति जलजले के बाद जीवन में अपने को पुनर्स्थापित करता है, इसमें मूल्य–मान्यताएं–संस्कार उसकी सहायता करते हैं। पत्नि बिछोह के गम से बाहर आने के प्रयास में वियोगी जी अपने से ही खफा होते हैं, कई जगह उन्होंने अपने हृदय के मांस को खाना बतलाया है। बार–बार अपने जख्मों को हरा किया है, इस मानसिकता में दुख से उबरना भी खुदग़र्जी लगती है। पर बारबार उबरने के इस प्रयास में उन्हे सफलता मिलती है और तैर कर किनारे पर आना चाहते हैं। अपनी पत्नि से अपने को कृतघ्न नहीं मानने को कहते हैं।

निं समझें बेवफा जिन्दे

भरन लगनां में जेल्लै अपना खाल्ली होए दा जीवन,
तां समझन लगना अपने आपा गी में बेवफा जिन्दे।
लबालब होन्दा ऐ खुदगर्जिएं कन्नें मिरा कन–कन
ते आपूं गै में अपने आपै नैं होन्नां खफा जिन्दे।
मिरी अनकीती करनी गी गलाने तैं जफा जिन्दे,
तूं जीन्दी निं प में मैह्सूसना तेरी मयूसी गी,

करन लगना जदूं एह् जज्वा में रफा–दफा जिन्दे,
करी सकदा परें निं बेवफाइयें दी मैह्सूसी गी।
कुदै समझें निं मीं तूं किर्तघान, बेवफा जिन्दे,
में तां गै ली केआ अज्ज एह् कोरा सफा जिन्दे।

उसे एकटक निहारना, उससे स्वर्गीय आनंद भोगना, उसका मेरे अंश–अंश को स्वीकारना, यही जीवन था। इस अल्पकाल के बाद असामयिक मृत्यु ने जीवन रोक दिया। धर्मसूत्र कहते हैं– यह विधि का विधान है, यह किस्मत में लिखा था। मैंने तो कुछ अधर्म नहीं किया फिर ऐसा क्यों हुआ? हे गुरूजनों! हे मित्रों! हे धर्म में विश्वास रखने वालों! बताओ मै ज़िंदगी कैसे बिताऊँ?

कियां कट्टै जिन्दगानी?

लड़ी दिक्खी करी में , मोतिए दी, ओह्दे जूड़े इच,
उसी दिखदा रेहा टऊ होईऐ, होठ खोली निं सकेआ।
मिरा सब गालड़ूपन गुम्मी आ लाखै दे चूड़े इच,
ते जो किश बोलना चाह्न्दा हा, ओह् में बोली निं सकेआ।

अवो, किश बोलने दी लोड़ बी हैन्नी ही बिलकुल गै,
की जे मेरे अंशै–अंशै हा स्वीकारेआ उसगी।
बहिश्ती काम–नन्द लैता हा लेकन घड़ी पल गै,
जदूं बेवक्ती मौतै नैं हा आईऐ मारेआ उसगी।

धर्म–सूतरें अनुसार ऐ एह् करनी किसमत दी,
मिरी समझा च नेईं औन्दा जे सूतरें गी केह् आखां?
काम–कांड मौकै सिफ़्त सौ करदा में जिन्दी,
उनें गी कोह्कै मूंह् कूड़ा–मकूड़ा, भक्ख, खेह् आखां?

ओ मेरे दोस्तो, शरदालुओ, गुरूजनो दस्सो,
'वियोगी' कियां कट्टै जिन्दगानी सज्जनो दस्सो?

ज़िंदगी बीतनी थी बीत गई, मौत ने भी काम कर दिया, गहन दुख से सराबोर भी किया। स्यापा भी हार गया, जीवन फिर जीत गया। खुशी–गम का चक्र चलता रहता है। ग़मों के अंधेरे बादलों में खुशी की किरण ने प्रवेश किया है।

बीतनी ही जिन्दगी– बीती गई,
मौत बाजी खीरली जित्ती गई।
माढ़ी करनियें ए ऐ चेचगी,
मूहां जो आखी सदा कीती गई।
स्यानपें दी सीलमा हारी गई,
इशकें दी दीवान गी जित्ती गई।
गल्ल ए होई तुसाड़ै सामनै,
गल्ल निं साढ़े थमा कीती गई।

क्या ऐसा नहीं हो सकता कि मैं अपने आने वाले सारे कल के बदले पिछले कल को पा लूं? मैं अब और जीना नहीं चाहता हूं, मेरी सारी उम्र ले लो पर फिर ''वो'' ही दिन लौटा दो।

" Could one make a deal like that,
Trade all his tomorrows for a single yesterday".

संतुष्टि के बगैर धन, यश, पद कोई अर्थ नहीं रखता है। मूलरूप से मनुष्य अपनी बात, क्रिया, कर्म की स्वीकृति, अपनों से पाने पर ही संतुष्ट होता है। अपने निजी सुखों–दुःखों को भी अपनों के साथ साझा करना चाहता है। मन की बात कहने–सुनने वाला न हो तो आन्तरिक रूप से असंतुष्टि होती

है। विचारों के प्रभावी होने न होने के पीछे भावनायें ही होती हैं। जीवन के लगभग सभी कार्य भावनाओं पर आधारित होते हैं। तर्क और बुद्धि से निर्णय भी होते हैं। भावनाओं की दो मुख्य श्रेणियां हैं–डर और इच्छा। किसी भी चीज़ की इच्छा करने या डरने से मनुष्य उतना ही ज्यादा आकर्षित होता है और उस विचार या परिस्थिति का जीवन पर उतना ही ज्यादा असर होता है। किसी सकारात्मक या नकारात्मक विचार के साथ डर या इच्छा जुड़ी है तो अवश्य ही मन को आकर्षित कर सकती है।

नफैसलमियां सोचां

चले दे रस्तें उप्पर चलना मीं ममूली लगदा ऐ,
प इस जज़्बे बर–अक्स चलने कन्नें इश्क ऐ मिक्की,
दमागी गुंज्जल एह् दिलै गी बांग सूली लगदा ऐ,
की जे पैरूएं दी करनियें पर रश्क ऐ मिक्की,
मिरा मन करदा ऐ चले दे रस्ते छोड़ियै इक दिन,
में जाड़े, जंग्गलें, डंडकारें च बड़िये गोआची जां,
प डर लगदा दुनियां जाचग इसगी मेरा पागलपन,
ते इस डरै दै मूजब जित्थूं में टुरेआ हा उत्थें आं।

ओ दोस्तों! तुम्हारी सलाह ठीक नहीं है, कारण अपने जीवन साथी को गंवाकर कोई कैसे ज़िंदा रह सकता है? इस पर बहुत लिखा गया है। पर किताबें मेरे अकेलेपन का इलाज नहीं हैं। नये रिश्ते जोड़ना याने पहले रिश्ते को भूलना है। यह भूलना ही तो बिसराना है। दोस्तों, तुम्हारा शुक्रिया।

आश्वासन निं देओ यारो

तुन्दा फर्ज़ ऐ, तुस आश्वासन ओ मिगी दिन्दे,
ते तुन्दा दोश निं जे तुन्दे आश्वासन थोथे न।
गोआईए जीवन साथियें गी कियां रौह्न्दे न जीन्दे?
इदै बारै लिखे दे पुरखें ढेरम–ढेर पोथे न।
तुस हमदर्दियां करै दे ओ सच्चे दिलै कन्नै,
मगर मदावा मेरी पीड़े दा सदभावें च हैन्नी।
नमें नकोर रिश्ते जोड़ियै में केह्करी लैता,
एह् रिश्ते जोड़ने जां त्रोड़ने दा मामला हैन्नी।
तुसाड़ा शुकरिया हमदर्दो, सच्चे–सुच्चेओ यारो,
मिगी पर हून होर आश्वासन निं देओ यारो।------

अगर में बचदा निं

आंऊँ शीशे दी फींगर हा, प तेरी रोशनी कारण,
मिरी मैली–कुचैली जिन्दगी होई ही सतरंगी।
ते इस रंगीनी दै कारण गै दुनियां ही लगी समझन,
जे तेरा जीना ऐ खुशबाश, मेरी डौलऐ चंगी।
प जेल्लै तेरी रोशनी गी खुस्सी लैता विदमा नैं,
तां फींगर शीशे दी मैली–कुचैली में होआ मुड़ियै।
मिगी चमकाया जिस संजीवनी प्रीतै दी रिशमा नैं,
उदे स्हिलदे गै फींगर बेरूपैह्ली में होआ मुड़ियै।
मिगी पुछदे न लोक पैह्लें आंह्गर की धमकदा निं?
में अपने हिसलने दा कारण अज्ज तां लिखं करनां।
अगर मि'म्मी तिरै आंगर मरी जन्दा ते बचदा निं,
तां राज़ फाश एह् निजी, असें कदें निसा करनां।-----

रणधीर दिल–दिमाग से अपने अकेलेपन से निबटने के कई रास्ते खुलने की बाट जोह रहे थे पर उन रास्तों के दरवाजे खोलने की सोचकर भी नहीं खोल पा रहे थे। कोई भी रास्ता खोलने का अर्थ बिछुड़ी साथिन से अलगाव, बेवफाई, दूरी बनाना कहीं मेरे लिए शर्मिंदगी का सबब तो नहीं होगा? यह

डर अपने आपको परखना, जांचना और निश्चित करना कि क्या नया रिश्ता ठीक होगा?

छोटे भाई की शादी जोधपुर में ही कर दी थी। बहू के रिश्तेदार रणधीर के लिए matchmaking कर रहे थे। दो रिश्ते भी आये। पर रणधीर दूसरी तरफ भी सोचने लगे थे।

डर दा ऐ मन मेरा

इक्कलताई च अजब खेआल उज्जै करदे न;
ओह् रस्ता फगड़ने दे, जेह्ड़ा में अपनाया निं आह्ली।
दमागै चा, दिलै बिच्च आईऐ लफ्ज गूंजै करदे न;
ओह् द्वार खोह्लने दे, जो में खोह्ल्ली पाया निं हाल्ली।

किर्तघान पैंचें, बेवफा मुसकानें दै आंह्गर
जां अपने आपें च गुआचे दे गर्ज़ी मलापें जन;
तिफल–तसल्लिएं, बेमतलबे ब्यानें दै आंह्गर;
कलापें दे स्यापें कोल डरदे–डरदे आपें जन–

मीं डर ऐ इक्क भेठा, बिच्छड़ी दी साथनै कन्नें,
करियै बेवफाई आप कोखू शर्मनाकी दा
ते दुआ डर ऐ मीं– नवीन रिश्ते गंड्डने कन्नें–
अगामी रिश्तें दे सेआदें दी मारू सफाकी दा।

नमें रिश्ते बनाने दा करै करदा ऐ मन मेरा,
प शर्मनाकी ते सफाकी शा डरदा ऐ मन मेरा।

जोधपुर

23 –11.–88

वियोगी की खुशी का वास्ता है, ओ दोस्तों, कुछ तो सहायता करो। मुझे सहारा दो, अपनी सच्ची दोस्ती से मुझे राहत दो, कुछ आराम दो।

गैरें निं करना गौर पर तुस ते करो यारो
दिन्नां खुदा दा वासता किश ते करो यारो
हिरखा दा निग्घा मूंढा, मेरी ठंडें गी देईऐ
कूले फुल्ला पर दा त्रिक्खे कंठें गी देईऐ

मिगी छपैली लैओ जप्फी दे घेरे अन्दर
लोई दी तिफ़्ल–तसल्ली–देओ मीं न्हेरे अन्दर
मेरे हम दर्द साथियो साथा दा सेक देओ मीं
सच्चे लाडै दे स्हारै आसना टेक देओ मीं

भामें ए तुन्दा करना मिगी बचाई निं सकदा
कोई दुएं दियां पीड़ां भाए अपनाई निं सकदा
प नेक तसल्ली देईयै खुश ते करो यारो
दिन्नां खुदा दा वासता, कुश ते करो यारो

गैरें निं करना गौर पर तुस ते करो यारो
वियोगी खुशीदा वास्ता, किश ने करो यारों

जोधपुर
9–12–89
वियोगी जी को उनकी साथिन मिलने का अहसास हुआ तो मन में कुछ अपेक्षा की कि उस स्त्री का मन भी प्रेम से भर दें। कोई मुझे बेवफा भी कहे तो ध्यान मत देना।

मशवरा

मिगी आखन लगी मरदे लै, ''बलमा! इक कम्म करेआं;
कुसै जनानी कन्ने जोड़ेआ संग जे मिरे मगरा,
उसी बी मेरै आंह्गर गै लबालब हिरखै नें भरेआं–
ओह्दी हस्ती दी शरूआतै शा लेईऐ इती तगरा।

कोई जे बेवफा आखग तां बिलकुल ध्यान निं धरेआं।
कैम रक्खेआं अपना तुं खालस, चोनमां जिगरा।
जे ऐसा करनें तैं मरना पवै, तां बालमा मरेआं,
अवो निं जरकेआ रत्ती तुं मेरी दस्सी दी डगरा।

तिरी सगंध ऐ मिक्की, तुगी एह् मशवरा दिन्दे;
मेरी हस्ती उप्पर मेरी खुदगर्जी दा गलावा ऐ।
कुसै दुई जनैन्तै दे जे सोके कारगा तु थिन्दे,
तां उ'न्नैं सोचना ऐ; मिरा जकीनी दाह्वा ऐ–

बड़ी गै भागशाली ही उदी साकन, तिरी प्रेमी,
तुगी ऐ मशवरा एह्का देआ दी तां करी प्रेमी।''

मिथून मरजी दमागा च जनम लैन्दी ते मरदी ऐ,
शरीरिक मरजीयें कन्नैं सदा खिलवाड़ करदी ऐ।

ओ सप्त–ऋशियों, जैसे तुम गुरूत्वाकर्षण से ध्रुवतारे के आसपास घूमते हो उसी तरह मेरा जीवन भी मेरे ध्रुवतारे के

आसपास घूमता है। पर जिस दिन मेरा ध्रुवतारा भस्म हो गया, तब मेरी दिशा बेमानी हो गई। हे सप्त ऋशयों सुबह होने से पहले मेरा मार्गदर्शन करो।

सप्त–रिशियो मिगी सद्दो, मिगी पकड़ो? मिगी साम्भो,
दशा–दरशत करो तुस मेरे ध्रुव मरकज दी मेरे तैं
मेरी सर्वव्यापी इक्कलताई पासै तुस हांभो
गुरूत्वाकर्षन मरकज दस्सो मीं तुस मेरे घेरे तैं

में पुरकशश मरकज दै, गिर्द घुम्मा करदा हा
ओ मरकज जिस दिना कोला गुआचे दा खतम होया
मेरा जिन जिस दे कारण नच्चा–झुम्मा करदा हा
आहे् मरकज जिस दिन कोला हिसली आ, भसम होया

ऐन उस दिना कोला मिगी बत्तें दी थौ हैन्नी
ऐन उस दिना कोला मिरा जीना बे मकसद ऐ
जदूं शा मेरी जिन्दगानियां च शामल ओ हैन्नी
रोजमर्रा दी जीना मिगी लगदा, तरद्दद ऐ

सप्त रिशयो मिगी दस्सो अगर तुस दस्सी सकदे ओ
सवेरा होने शा पह्लें डगर तुस दस्सी सकदे ओ

जब भी मैंने किसी को चाहा तो तेरी याद आयी, कभी खुश हुआ तो तेरी याद आयी, किसी को अपना कहा तो याद आयी, अकेले बैठे मन घबराया तो तेरी याद आयी, सब जगह, सब समय तेरी याद आयी।

कुसै नैं बी चाहे्आ तां तेरा चेता मीं आया,
कोई बी मीं भाया तां तेरा चेता मीं आया।
मंजलै दै कोल पुज्जियै, कलापे शा डरियै,
परतोना में लाया तां तेरा चेता मीं आया।
अपने चा बाहर निकलियै, बरतोईयै, बरतियै,

अन्दर जदूं आया तां तेरा चेता मीं आया।
तेरै अलावा होर बी अज़ीज न मेरे,
अज़ीज़ें जतलाया तां तेरा चेता मीं आया।
कल्ले–मकुल्ले बैठे दे केंईं बारी झान–चक्क,
मन पैन्छी घबराया तां तेरा चेता मीं आया।

—मैं—

उपरोक्त परिवार और उनके जीवन में कैंसर के कारण आई सुनामी से परिवार तितर–बितर हो गया था। मानसिक और आर्थिक रूप से गहरा आघात लगा था। सबके अपने–अपने अकेलेपन थे। सबको सींचने वाली जड़ सूख गयी थी। मनुष्य के जीवन में मां और पत्नि नारी के वे रूप हैं जो उसको कायम रखने के लिए धुरी हैं। नारी घर की रूह होती है।

LOVE OF WOMEN

I loved them in my childhood, youth and now,
I love them more and myself for this preen
With women I conspire (I have balls),
These beautiful creations always make

Me helpless, I heed their heated calls,
And after this am ready for the stake,
Like one who wants the honey must prepare
For stings of honey – bees gone berserk.

You made them , Father, and your work is good,
I love you Father and your womenhood.

अगर किसी तरह वो मिल जायें तो उन्हें फिर से जाने नहीं दूंगा।

आए तां वापस जान निं देना में ऐ गति,
कोई बहान्ना–शान्ना लान निं देना में ऐ गती।

दित्ती दी चिज वापस लैना पाप ऐ चन्ना,
दित्ते दा दिल परतान निं देना में ऐ गती।

रणधीर अपने दुःखों, वेदना से व्यथित थे पर उनकी स्वाभाविक आत्मविश्वास, धैर्य, साहस और जिजीविषा ने उनका साथ नहीं छोड़ा था। जब इच्छाएं थीं तब साधन नहीं थे और जब साधन हैं तो इच्छाएं मुरझा गई हैं। पर तब भी वो हैं, वो जीवित हैं।

It always works like this, when friends I want,
In loneliness I roam, but I am not mobbed,
When slumber comes, they come to me. I can't
Employ to salvage prestige. I am robbed
Unwept. In languid slumber say goodbye
And in my gutless state, I, this conceive,
This life is so ramshackle and ransacked,
It sure is devil's ploy shameless plot.
This thought upon the brain is like a cyst
which ties my life in knots but I exist.

कितनी ही विपदायें आयें, प्रलय हों पर सृष्टि का प्रवाह अनवरत बहता ही रहता है। समय बदलता है, स्थितियां बदलती हैं, मनोदशा भी बदलती है, जीवन में जूझता आदमी छटपटाता है और अपने को बनाये रखने के लिए प्रयास करता है। यह प्रयास सायास नहीं होते, एकतरह से प्रतिवर्त क्रिया होते हैं। इस सब के लिए सिर्फ एक लम्हा चाहिए, एक क्षण में ही सब बदल जाता है।

MOMENTS

You came to me on tiptoe, unannounced,
The fleeting Time was frozen in its tracks
The beauty of that lovely, perfect moment.
(That neither had a future, nor, no past,
Which rustled like a dream in its ferment;
And like a dream was, in a moment, lost),
Has lived with me forever, ever lingers,
And probs my senses with its velvet fingers. ---

रणधीर सोचते हैं... कि आधा जीवन बीत चुका है, शतरंज की बाजी जम गई है। भविष्य की रूपरेखा बन गई है। अंधकार ही अंधकार है। जीवन की योजनाओं के आधार तक नहीं बने हैं। इन घोर ऊँचे पहाड़ों के पार शायद मनभावने हरे–भरे मैदान हों।

TENUOUS HOPE

My forty springs are gone; half my life
Is buried and entombed in the past,
And tunes emanating from my life,
Are shallow like my breathing, fading fast.

Ah! I have come to understand, at last,
My chances have been taken, choices made-
And for this every die has been cast.
And time has come to sing the serenade.
And future seems a puppet on parade.
Connected to the past, and pre-empted
Are all my great ambitions . Every raid,

Which I had planned for this is unattempted.

But just beyond this grey and towering hill,
New vistas may be waiting for me still.

जीवन के हर स्तर पर अपने–अपने भावों, अपेक्षाओं के भंडार होते हैं। अपने प्रारब्ध के अनुसार हर व्यक्ति जीवन जीता है। उस प्रारब्ध को बदला नहीं जा सकता पर थोड़ा परिवर्तन अवश्य किया जा सकता है। व्यक्ति अपने पुरूषार्थ से आध्यात्मिक आस्थाओं के संबल से अपने प्रयोजन को सार्थक कर सकता है।

CACHE

I have often talked of empty homes,
Where children are grown up gone away,
But also often, I surmise and think,
That every soul is pre-destined to run,
His lonely lonely race-sail or sink,
And carve his privet niche in the sun.
I shed my personal needs, selfish grouse,
And further in my estimation grow.
Ah! every stage of life has different cache,
Which you can use with pleasure if you wish. ----

अधिकतर हम सब अपने भूतकाल को वर्तमान से खूब बढ़ा–चढ़ाकर सोचते और बतलाते हैं। वर्तमान को कमतर मानते हैं। इस तरह वर्तमान के मूल्यवान समय व परिप्रेक्ष्य को भूतकाल पर न्यौछावर कर देते हैं। हाथ में न वर्तमान आता है न भूत ही रहता है।

SHADOWS OF PAST

Sometimes I think, the past is glorified,
Unjustly, its importance is inflated.
And preset is unjustly denigrated
Mysteriously berated and decried.
Or is it possible we reminiscence
With pleasure battles joined fears won
To appreciate their hidden excellence
And tend to forget pains and done
And this way are then able to retreat,
To shadows of the past- bitter sweet. ----

मनुष्य भूत और भविष्य के साये में वर्तमान में जीना भूल जाता है जबकि सबसे महत्वपूर्ण आज में जीना है। रणधीर भी जाने–अनजाने में अपने भूत की यादों को अपने वर्तमान पर छाते देख रहे थे।

IN PRAISE OF PRESENT

Let future come, O! as it might.
In darkness hidden or with dazzling light,
And let the past remain buried deep,
Below the dormant hopes' rising heap.

And let no past or future touch your brow,
And all connections with them disavow,
And live in present moment unsubdued,
And never on the past or future brood.

O! if you, with your present rightly cope,
And do not in the past or future grope,
Then unobstructed you will make a name,
For caution doesn't ever win the game .

And only those who plunge in raging waves,
Can live like kings and not like cowering slaves.

मेरा जीवन सामान्य लड़कियों के समान सरल नहीं रहा है। समाज की सामान्य रीति–रिवाजों , मान्यताओं से परे ही कुछ करने का रहा है। भरे–पूरे संयुक्त परिवार ने अनजाने में ही लाड़–प्यार से एक dominating personality को जन्म दे दिया था। घर में सभी डॉक्टर–वैद्य थे, मैने साइंस–मैथ्स् लिया। फर्स्टइयर के बाद सहेली का इंजिनियरिंग में एडमिशन न होने से मैने इंजिनियरींग में जॉइन नहीं किया। बीएससी के बाद विदिशा इंजिनियरिंग कॉलेज में एडमिशन हुआ, तब मेरी सहेली का बीएआरसी में हो गया, घरवालों ने मुझे 1968 में ट्राम्बे जाने नहीं दिया और वह चली गयी। मैंने इन्दौर ही छोड़ दिया, होल्कर कॉलेज में सहेली के बिना कैसे पढ़ती ? हमारे घर का वातावरण बड़ा ही सात्विक था। बहुतसे उपन्यास,पत्र–पत्रिकायें

आतीं थीं। पति–पत्नि का संबध ज्ञान चुंबन तक सीमित था। परिवार ने मुझे स्वतंत्र व्यक्तित्व, एरोगेंस और सही–गलत की पहचान दी थी। सच और ईमानदारी के लिये किसी भी सीमा तक जाने का माद्दा दिया था। फिजिक्स में तब कम ही लड़कियां होती थीं । गर्वमेंट कॉलेज में M.Sc.में दो ही लड़कियां थीं, पहले दिन ही उसने अपनी एमसी की परेशानी बतलाई, तो मन में निश्चित हो गया कि यह सहेली बनाने लायक नहीं है। हमारे यहां लड़के–लड़की का भेद नहीं था। एक क्लासमेट जो अति प्रतिभाशाली, इन्नोवेटिव और दबंग था उससे मेरी दोस्ती हो गयी। दोस्ती का अर्थ हमेशा से मेरे लिए ''दोस्ती'' रहा था, पक्की दोस्ती। कुछ सालों बाद उसका बाईक पर एक्सिडेंट हो गया, बहुत ही भयानक था। बारह दिनों के कोमा के बाद होश आया था। ब्रेनइंजरी के साथ चेहरे का दाहिना भाग, कान, आंख व जबड़ा सभी क्षतिग्रस्त हो गये थे। देश के बड़े विशेषज्ञों से मशवरा किया, सब बोले आशा नहीं है पर उसके नामी डॉक्टर पिता बोले इसे कुछ नहीं होगा। एक सुदर्शन–स्मार्ट लड़के को ये क्या हो गया? होश आने पर धीरे–धीरे सब मालूम होने पर वो भविष्य के अंधेरे में टूटने लगा, जॉब पर जाना नहीं हो सकता था। कुछ महिनों के बाद लगा, ये दोस्त तो टूटता जा रहा है, कैसे बचाऊँ? उसके साथ किसी साथी को होना चाहिए, हमने बात की और शादी के लिए तैयार हो गए।

उसके अतिसमृद्ध, पढ़े–लिखे conservative परिवार वाले राजी थे। मेरे परिवार में सभी डॉक्टर थे, उन्होंने मुझे wait and watch की सलाह दी। पर सोचने के लिए महिने–साल नहीं थे और शादी हो गई। धीरे–धीरे चोट के सब निशान साफ हो

गए। हम सभी उस एक्सिडेंट को भूल चुके थे कि दस साल बाद अचानक ब्रेनइंजरी से बने हिमेटोमा ने हमारी कहानी का पटाक्षेप कर दिया। ये क्या हो गया? सोचते एक आंसू भी नहीं आया, दिमाग में जलजला आया था , हर वक्त दिमाग में झनझनाहट और उबाल महसूस होता रहता था। आर्थिक रूप से मैं आत्मनिर्भर थी।

फिर छः साल बाद भाग्य ने ग्रुपकैप्टन रणधीर सिंह से मिलाया जो जोधपुर में पोस्टेड थे। हम दोनों ही अपने साथी से बिछुड़े हुए थे। इनका घाव हरा था पर फिर जीने की कोशिश कर रहे थे, डूबते को तिनके का सहारा चाहिए था। मेरे मन में भी दुविधा थी कि इस उम्र में, अपने पूर्व अनुभवों, जख्मों के साथ, बिलकुल अलग पारिवारिक वातावरण और तीन grown-up girls के साथ कैसे एडजस्टमेंट होगा?

नवंबर 1988 में हम संपर्क में आये और 2 दिसंबर को हम कुछ देर के लिए पहली बार मिले। अगले दिन फिर मिले, अच्छा लगा और रणधीर ने प्रपोज किया, पर मैं इसके लिये तैयार नहीं थी, इसलिए समय मांगा। सब बड़ा कठिन था। पर इनकी साफगोई से स्थिति सामान्य हो पाई थी। बहुत बातें हुईं। पर ऐसी विचित्र स्थिति में यदि कभी आप पड़े हों तो समझ सकतें हैं कि जो आप पूछना चाहतें हैं वो पूछ नहीं पाते हैं, जो कहना चाहते हैं वो कह नहीं पाते, जो जानना चाहते हैं वह जान नहीं पाते, बस घबराहट सवार रहती है। दिमाग के किसी कोने में चुभता है कि कहीं हम हमारे पहले साथी के विरूद्ध तो नहीं जा रहें है और इस उलझन में हम अपने साथी की बात ही करते जाते हैं। 21/12/88 को रणधीर ने कुछ ऐसा ही महसूस किया था। इन्होनें अपनी डायरी में लिखा.....

Something there is about a withheld tear ,
Something much important yet unsaid,
Some message undefined and unclear,
Some urgent missive unheeded, unread.

Something there is about a tear unshed,
A vibrant sentiment unexpressed,
Or like a lethal wound which has bled
And filled the ins though outs are neatly dressed.

Or feeling inexpressible by words,
A saber which has not been yet unsheathed;
An acid playing havoc with innards
Like toxic air inhaled and unbreathed.

There is something about an unshed tear,
Which may be full of promise or of fear.

18-12-88

Ah! There is something magical, divine,
In the crystal, first born, star-kissed dew.
The night is done but dawn has not yet dawned.
The day is in but sun has not yet risen.
The leaves are all dew-laden, newly spawned.
The time is like ethereal plantain vision.
Soon the sun will rise and drops of dew,
Will turn into a leafy rivulet.
And this process without much ado.

The surface of the Earth will be wet.
Something there is, I often find in you
The fragile virginity of newborn dew

दिसबंर अन्त में हम फिर मिले, तब तक संकोच थोड़ा कम हो गया था, काफी बातें हुईं। मेरे मन में शंकाओं, अनिश्चितताओं का घमासान मचा था। बहुत सारे किन्तु परन्तु थे। व्यक्ति के पूर्व अनुभव सबसे बाधक होते हैं। नये लोगों से तालमेल बिठाना सबसे कठिन था। कारण मुझे इसकी आदत नहीं थी। ये सब मेरे निजी जीवन को प्रभावित करने वाले थे।

10–1–89 को एक ही दिन में उन्होंने आठ पत्र लिखे, आठों पत्र Sonnet के द्वारा ही लिखे गये थे। उनके विचार भी लय–ताल में आते थे, 14 पंक्तियों के छंद में लिखते चले जाते थे। उनको जोड़ना या बुनना नहीं पड़ता था। और उस दिन शाम को ही आ गए अपना जवाब लेने के लिए।

10-1-89

When you with downcast eyes sit and think
I plead with you to raise your head and see
The truth into the eyes and slowly drink
The Love's nectar, outpouring from me.

I lift your chin and make you raise your head
And make you see into my loving eyes.
A quickening, quickly, weary Time's tread;
A stirring dead emotions, dormant sighs.

You look at me with fear and confusion,
And ask me why you should and why you must
Believe in faithless world. Your confusion

Is based on jilted faith and cheated trust.

I think, my dearest Sudha that I should
Repeat that love is great and life is good.

10-1-89

I just talked to you on phone
And heard your ringing, singing, lovely voice
And wished to, in your charms, dive and drown,
Because for me, there is no other choice.

The laughter in your voice was loud and clear;
Inflexions of your words were intimate;
I wished that you were near me, my dear,
And see me when I strongly reiterate

That I was lonely, lovely, sorely hampered,
When you were brought to me by happenstance,
When I was, by your bubbling person, conquered-
When due to you, inhibitions stood no chance.

When in a fleeting, blissful single day
You stole me from myself and had your say.

10.1.89

I don't belong to the breed of men who just
Indulge in casual sex for fleeting pleasure.
And I must tell you this. I must, I must.
They cheapen Love and empty love's treasure.

My dearest Sudha, you must understand
That men like me are slow but are forever,
And they are not the least, great and grand.

Nor worldly-wise, nor practical, nor clever

But they are constant in their word and deed
And when they take their mates in their arms,
They satisfy their partner's every need
By giving endless love in lien of charms.

"Viyogi" therefore says, "become my wife".
"And let me, with my love, engulf your life".

10.1.89

Today I am brimming with confusions.
My mind is full of hapless, hopeless dread.
And when I see your psyche's ill illusions,
An undefined fear, fills my head.

When you are next to me, to warm my life
I suddenly remember, you are far,
I want a real home, a real wife.
But fear to leave my hearts' door ajar.

You dwell on past rejections more and more,
When I propose to make a Home with you.
I cannot fully open heart's door
For fear of human nature's feckless loo,

Which sears and impairs and encumbers,
The future "Home" on past's glowing embers.

10-1-89

My darling, when I wrote to you to-day
My words outpoured from me in dizzy state
But then I wondered, what I want to say
Will reach you on some future far off date.

This thought was entertained and doubt was hosted.
With every word I wrote, it grew and grew-
My letter was completed, sealed and posted
But I remained unhappy. This I knew.

And in this sorry state of mind, I erred,
In wondering, what to think and what to do?
Because, because of this my need bestirred,
And due to this I rushed and came to you.

With love, I knew, my letter will be read
But it was good to reach you in its stead.

तेरे औने मूजवी घटना वचित्तर होई गयी,
सारी दी सारी नमोशी तित्तर–वित्तर होई गयी।

हमारे जीवन के गहरे सागर में एक तूफान आ गया था। ठीक से फैसला लेने की मेरी क्षमता तो गायब हो गई थी। एक बात सच थी कि इन्होंने अपने कुनबे की जिम्मेदारी अपने मन से ली थी और पिता के समान बड़ा किया था। इसलिए लगा कि ऐसा व्यक्ति मुझ जैसे स्वभाव वाली को निभा लेगा। एक वायुसेना अधिकारी जो संकट में आकाश में धीर, गंभीर और त्वरित निर्णयशक्ति (quick decision power) वाला, ईमानदार, वफादार पति, विद्वान, संवेदनशील प्रसिद्ध पुरस्कार प्राप्त कवि था,शायद अच्छा दोस्त हो सके। अकेलेपन और दिमाग में उठते जलजले से छुटकारा पाना चाहती थी। अतः सब भगवान पर छोड़ दिया। इनके शब्दों में.....

"when the bridge will come , we will cross it"

RIGHT TIME

I agree, road of life is long and rough,
And full of humiliations and travails,
Enough is when enough of it entails,
For us to say enough is now enough.
Is facing hurdles as they come to pass,
And crosses bridges when they come across. ----

काश ए होऐ जे मेरा भूत–काल नेईं रवै,
भविक्खा उप्पर वर्तमान दा जवाब नेईं रवै,

दुनिया में हर व्यक्ति अनोखा होता है, बेजोड़ होता है। दो व्यक्ति कभी भी समान नहीं हो सकते हैं। इसलिए दो व्यक्तित्वों की तुलना नहीं करनी चाहिए, चाहे वो दो पुरूष या स्त्रीयां ही क्यों न हो।

INDIVIDUALITY

Every hand has different finger-prints
And every person separate rational
The children springing from your heated loins
Are made by inter-action of your genes
This characteristic no commonality enjoins
Though common it appears, simply means;
The children born to you are not your own;
The surely come from you, but not from you
You can't erase or add a single dot
In this design of nature- venture not.

18 मार्च 89 को हमारी शादी हो गयी। रणधीर का 31 मार्च 89 को (VRS) रिटायरमेंट हो गया। हम अजमेर आ गये जहां मैं नौकरी कर रही थी। सब ठीक था पर विचारों के एकान्त में रणधीर अपनी पत्नि पम्मी को याद करते और लिखते थे, मन में कहीं बैचेनी थी।

शादी के बाद लगभग 5–6 महिनों तक लगा मैं किसी दूसरे ही संसार में आ गयी हूं। इनका अतिरिक्त ध्यान रखना मुझे असहज कर रहा था। सबसे पहिले मेरा पूरा चेकअप करवाया और सारे टेस्ट करवाये। बचपन में आम के पेड़ से गिरने से उपर के दो incisors टूट गये थे, सब परेशान थे कि ये वापस आयेगें या नहीं , बड़े होने पर आये पर पिछले 2–3 सालों से ठंड में परेशान कर रहे थे। उन्हें निकलवा दिया गया। बचपन से मुझे सर दुखता था, जिसके लिये मेरी खूब देख–भाल की गई थी पर कुछ ठीक नहीं हुआ।
मेरा septum थोड़ा मुड़ गया था तो septorhinoplasty करवायी। घर तो चिकित्सकों से भरा पड़ा था , सब हंसते थे कि अब पकड़ में आयी है। पूरा overhauling हो रहा था। रणधीर मेरे किसी नाखून में भी दर्द नहीं चाहते थे। पर एक फायदा तो हुआ कि माइग्रेन जैसे दर्द से छुटकारा मिल गया था।

उन दिनों कई बार रात को नींद उड़ जाती थी तो देखती ये जागे हुए हैं ओर एकटक मुझे देख रहे हैं। पूछती क्या हुआ है? बोलते नींद नहीं आ रही है। ये सब मुझे परेशान करता था। जानती थी कि ये मुझे देखते हुए भी मुझे नहीं देख रहें है। किसी ओर को ही देख रहे हैं।

जब भी कोई टेंशन होता या उलझन होती है तो सबसे पहले अपने साथी को बगैर कहे ही मालूम हो जाती है, दोस्ती पक्की हो तो आप यदि हां की जगह ना कह रहे हो

तो दोस्त को मालूम रहता है कि हां ही कह रहे हो, कैसे? शायद ऐसे.....

ENDEARMENTS

Tales behind the wrinkles on your face,
Are known to me in intimate details,
And hide no threat or burden some menace,
Or indicate no anguish or travail,
And right below your folds of wrinkles lie,
The blooming ruddy roses of your youth,
Which set me once afire, can't belie,
The passage of the years, tell the truth
But sparkle in your eyes blazing forth,
Is telling me a story of its own

वो मुझे उत्तरवाहिनी कहते थे ..... इतनी असमानताओं के बाद भी हम दोनों का मूल स्वभाव समान था। ईमानदारी, वफा, साफगोई, परिवार के लिए कुछ भी कर गुजरना, ख्याल रखना, सादगी के साथ जीवन जीने की इच्छा। अच्छी चीज के लिए परंपराओं के विरूद्ध कार्य करने में झिझकना नहीं और सकारात्मकता के लिए किसी की परवाह न करना जो समाज में अधिक प्रशंसनीय कार्य नहीं है।

TOGETHER WE CAN REALLY GO TO TOWN

When all adjoining rivulets are flowing
According to the gradient of the plain,
To worth, What is the Utterbehni doing
By flowing north against the common grain?

But if like me it knows where it is going,
There, I will let and leave it on its own,
For as the unban settlements are growing,
I am on my way out of the town.

Perhaps, the Uttarbehni doesn't know
That like it, I am also, all alone,
Against the common grain I also flow
Together we can really go to town.

For I will make a hut upon its shore
And neither will be lonely any more.

हम दोनों के दिल–दिमाग में अपने सद्यदुःखों के जलजले थे, उनसे पार पाने के लिए जीवनधारा को मोड़ना चाह रहे थे पर प्रचंड धारा को मोड़ना इतना आसान कहां होता है?

SUUDS

Are we ONE my love, if not, then why?
Oh! why the holding back of total love?
Believe me when I think of this, I cry,
My witnesses are the sky and God above.

Why not complete acceptance, total giving?
Why not loving acceptance of the faults?
Why not the blissful, blessed, lovely LIVING?
Why not the facing of necessary halts?

Why dwell on fantasies and long past hurts?
Why live on falsehoods and false appearance?
My love when True Love Truly Exerts
With giving, patience, fortitude, forbearance

Then only the miracle of love happens
And only then the joy of life sharpens.

शादी के बाद मुझे महसूस हुआ कि इनके घाव अभी हरे हैं। हम में चाहत है, स्वीकार्यता है, अपने घोर अकेलेपन और एक ईमानदार साथी की इच्छा ने हमें मिलाया है। जरूरत से ज्यादा केयर करने को हम प्यार नहीं कह सकते हैं। हमारी उपस्थिति/ सानिध्य एक दूसरे के लिए बहुत ही रूचिकर था। एक भावनात्मक लगाव था पर घाव अभी हरा था। मुझे लगा इनकी पत्नि–'प्रेम'–पम्मी के बारे में बहुत बातें करनी चाहिए जिससे मन की इच्छा व यादें मन में ही न घुटें, सब बाहर आए। इस बीच हमने देहली में श्री महेश योगी का Transcendental Meditation का 15 दिनों का कोर्स भी किया था। इसका जिकरा गीता में भी है। मनोवैज्ञानिक सत्य है कि परेशान करनेवाले सभी विचार जब बारबार सतह पर आते हैं तो वे प्रभावहीन होते जाते हैं। जैसा मैं मानती थी कि हम अपने साथी को कभी भी भूल नहीं सकते हैं तो उसे भुलाने का सजग प्रयास अर्थहीन है। अगर साथी से सच्चा गंभीर प्यार रहा है तो इस संसार में वही तो ऐसा व्यक्ति है जो हमें सच्ची प्रसन्नता देता था। तो उसकी यादों से हमें दुःख क्यों हो? उसकी मधुर यादें तो जीवन का संबल होनी चाहिए।

उसे भूलने का प्रयास क्यों? उसे तो हरवक्त हमारे साथ होना चाहिए। हमारे जीवन में होने वाले सभी कार्यकलापों में उसकी याद तो खुश करने वाली होनी चाहिए। साथी की या जीवन की अच्छी–बुरी यादों, नितांत निजी यादों को व्यक्ति अपने पति

या पत्नि से नहीं कहेगा तो किससे कहेगा? अपने पति या पत्नि से अपनी निजी बातों की चर्चा एक स्वस्थ दांपत्य जीवन का परिचायक है। अगर इसमें ज़रा भी ईष्या–द्वेष आये तो आपसी संबंधों में खतरे की घंटी है। इस सोच की चर्चा और अमल ने हमें और नजदीक ला दिया, हम पति–पत्नि से ज्यादा एक दूसरे के दोस्त बन गए।

TRUE FRIEND

One who from friends in adversity recoils
The greatest ornament of love impairs
When friends are down and out, in a bind,
He quickly comes and on their side appears

And stands up to be counted. All unkind,
Resentful humiliations with them bears.
Without a word of pity uttered, said
He with his very gift of presence shares

Their grief in mute defiance, of the dead
And hopeless hopes and fearful woes and oars.
That flow like molten lead, through his heart,
A true friend this way plays his humble part.

एक दूसरे के साथ किसी भी अवसर पर कोई भी अच्छी–बुरी याद अवसर की मधुरता को बढाती ही है।
समाज या परिवार के दिए जख्मों को भी हम अनजाने में सहला लेते थे। परिवार, समाज के दिये जख्म कई रंजिशों को जन्म देते हैं। बातें पुरानी होने पर लगता है कि हम उन्हें भूल

गए हैं पर वैसा ही कुछ देखने–सुनने पर वो फिर याद आ जाती हैं।

जीवन मे बड़े उतार–चढ़ाव के बाद अक्सर सारा संसार निरर्थक लगता है। जन्म–मरण, सुख–दुःख, अपना–पराया सभी तथ्यहीन लगता है। यह सब झूठा है, सपना है। यह वैराग्य अल्पकालीन और दीर्घकालीन हो सकता है। अल्पकालीन वैराग्य को अक्सर श्मशान वैराग्य कहते हैं।

सपना

हमें स्वयं अपने जीवन से
घृणा नहीं तो स्नेह भी नहीं
मन तो क्या अपने बस में तो
कुच्छ भी नहीं यह देह भी नहीं
अपना–आप भुला कर बैठे
जग को भी पहचाना नां
कोई ठिकाना, कोई घरौंदा
अपना नां, बैगाना नां
असमन्जश में जब कोई बैठा
मानुस हा–हा कार करे
उसको चाहिये तनिक सम्भलकर
बस यह सोच–विचार करे

अपनापन अपना कर देखो
अपना क्या–बैगाना क्या
सच्च के खोजू–सच्च मिले तो
सच्च समझ घबराना क्या
स्वयं ही पीड़ा–स्वयं ही पापी
वही स्वयं है पीड़ित भी
स्वंय पिलाऊँ, स्वंय प्याकड़
स्वंय मनाता दावत भी

मरूस्थल की मृगतृश्णा जैसा
सब–वैगाना अपना है।
दुःख को भूल जाये जो समझे
यह जीवन तो सपना है। .....कुंवर वियोगी

ज़िन्दगी का सफर, है ये कैसा सफर? बड़ा अनोखा है, इसे कोई समझ नहीं सकता है। तो क्यों न हम इस जीवन को जियें? खुशी–खुशी जियें?

आओ जी लै चै

जिन्दगी दे पैन्डे न औखे वड़े
जिन्दगी दै पैन्उे न औख वड़े

1

गल्ल सुनी लै मेरी मेरे याकता
मूहां दा निकली वड़ी बेसाखता
गन्ड वन्नी लै खुदा दा वासतां
चल रमां कन्ने हमेशां आसता
थारै थारै न मड़ा दुशमन खड़े
जिन्दगी दे पैन्डे न औखे वड़े

प्रेमी जन्दे न गड़ाके मारदे
तूई तेरे भाक–झांके खारदे
मुशकलें च मसत जन्दे जारदे
लक्ख मारू मुशकलें गी सहारदे
भान्गड़े पान्दे ए जन्दे रान्गड़े
जिन्दगी दे पैन्डे न औखे वड़े --------

मनुष्य का जीवन क्या है? जीवन मुट्ठी भर मिट्टी है, जिसे साम–दाम–दण्ड–भेद नीति से जिया जाता है। समय ही बलवान है।

मिट्टिया दी मुटठ

मिट्टिया दी मुट्ठ ऐ जीना मेरा
सगमी मार कुट्ट ऐ जीना मेरा
हारने गी हारना जानै नैईं
दुशमनें गी खातरी आनै नैईं
छोड़दा हुयतां कुसै वानै नैईं
ठानदा ए जो कोई ठानै नैई
मूड़ मत्तू चुट्ट ऐ जीना मेरा
जिन्दगी च जीन जीना सखत ऐ
जिन्दगी दा मूड़ राजा वकत ऐ
ते एदी मारू मारे वी यकलखत ऐ
रकत में दिन्नां ए पीन्दा रकत ऐ
लाल सुआ घुट्ट ऐ जीना मेरा
कैन्कोगैला सायें दा जीना मेरा
ते खतोला चायें दा जीना मेरा
तोला तोला लायें दा जीना मेरा
ते वगोला धायें दा जीना मेरा
वे सुआरी लुट्ट ऐ जीना मेरा ----

साथ रहते–रहते बहुत सारे परिवर्तनों को मैं खुशी–खुशी स्वीकार करना सीख रही थी पर इस वातावरण में दबाव भी बढ़ता जा रहा था। इस मानसिक प्रहार दबाव से बचाव के लिये जो किया वह और हानिकारक हुआ।

A young and lovely sparrow upward looked,
She is a lovely sparrow, have no doubt.
Her loveliness is within and without,
And to the top best branch her heart was hooked.

To perch and peer on it, she did aspire,

She wished to take to wings and sit on it.
I counseled her to fulfill her desire,
She ought to tackle levels bit by bit.

And ought to know the labor it presages,
Before aspiring for the wanted heights,
And ought to understand the various stages
Of mastering the art of soaring flights.

But the lovely sparrow did not see,
My point and hence we agreed to disagree

She launched herself upwards in her haste,
Got tangled in the branches and the leaves.
Her effort ended in a bruised waste.
With downward hanging head she sorely grieves

With more than wounded limbs bruised flesh,
Under the spell of soul destroying blues,
Which have spun a byzantine mesh,
Around her person without any clues.

For coming out of it and extricate
Her mind frowning state and privacy,
As all the indicators indicate,
It merely is an old woman's tale.

That opportunities, once only knocks.
That chance not taken , future chance blocks.

पम्मी ने इनके परिवार को असमय ही सम्हालने में मदद की थी, पूरे तन–मन से सहायता की थी, अभावों को प्रसन्नता से स्वीकार किया था। मकान को घर बनाने में एक विश्वास का

वातावरण दिया, बगैर रंजिशों के स्वस्थ वातावरण दिया। इस सबके लिए असीम सहनशक्ति की जरूरत होती है। उस महिला के लिए मैं अन्दर से आदर अनुभव करती हूं । पम्मी से मुझे कभी ईर्ष्या–द्वेष नहीं हुआ। सिर्फ आदर भाव ही रहा। उनकी विवाह की वर्षगांठ एक अगस्त थी।

IN TIME WITH 2 AUG.

I often think and hope in hopeless hope
For some forgotten tunnels to escape ,
In darkened corridors of mind, I grope
For, freedom, from the life's perpetual rape.

When, no escape I find from cruel strife
Which so remorseless hammers at my guts ,
I come to understand that this is life,
And quietly check my useless ifs and buts.

I make amends for all my gutless days
By firm decision. Hope to end all this
And spend my after – life in peaceful bays
Where rule the gentle waves, eternal bliss.

But if have even then no peace of mind
What method of escape then shall I find?

इन्होंने जम्मू बसने की सोची और वहां जॉब भी मिल गई। मैंने भी नौकरी छोड़ने हेतू आवेदन किया पर इजाजत नहीं मिली और प्रमोशन–ट्रांसफर मांडल हो गया। ये जम्मू चले गए। हमने सोचा कि ट्रॅान्सफर होने पर भी तो अलग रहना होता है। लगभग दो साल ये जम्मू रहे, 2–3 बार मांडल भी आये।

अंग्रेज़ी अखबार में एडिटोरियल लिखते–लिखते डोगरी का एक पेज का अखबार निकालने में सहायता की। शुरू में अखबार की सामग्री, एडिटिंग सब खुद करना होता था। अपनी कितनी ही रचनायें तब छप तो गईं पर इनके साहित्य खजाने से गायब हो गईं। तब से ही एक नियमित कॉलम, ''पते दी गल्ल'' लिखना शुरू किया। यहां रणधीर के जीवन में फिर से परिवर्तन आया था। अनायास आये इस मौके का रणधीर ने खूब मजा लिया। जीवन में पत्रकार भी बनना चाहते थे और नियति ने उन्हें डोगरी के प्रथम पत्रकार बना दिया।। डोगरी पत्रकारिता का आरंभबिंदु कुंवर वियोगी ही थे। जम्मू प्रभात नामक पत्र से डोगरी पत्रकारिता को जन्म दिया, उसे सजाया, संवारा ,पोषित किया। जम्मू छोड़ने के बाद भी पत्र पर पूरी नजर रही। 'पते दी गल्ल' नियमित कॉलम रहा और अन्य सामग्री से भी पूरित करते रहे।

मांडल भीलवाड़ा से आठ किलोमीटर ही दूर था, तब भी आना जाना आसान नहीं था। मांडल फोन भी नहीं थे, मोबाइल का तो नाम ही नहीं था। भीलवाड़ा जाकर हर सोमवार और शनिवार को STD से बात करते थे। बूथ पर भीड़ होती थी, प्रायवेसी का सवाल नहीं था। बात भी महज मुश्किल से तीन मिनिट हो पाती थी। वो भी के टी टाइम्स से बात करते थे। सामान्य पूछताछ और एक–दूसरे की आवाज सुनकर संतुष्ट हो जाना होता था। मेरे पास फोन नहीं था तो ये बाद में भी फोन नहीं कर सकते थे। मुझे फोन के तीन मिनिट के लिये बहुत तरदुद करना पड़ता था। पर आवाज सुन लगता था जैसे पास ही हैं। एक बार जम्मू फोन करने के लिए कम से कम 110रू खर्च होते थे। STD का तीन मिनिट का चार्ज था– 90रू.। आने जाने में खूब समय और शक्ति खर्च होती थी पर लगता था सदुपयोग हुआ है।

Whenever , I, my Love, your presence wish,
My hopes like roaring waves, then increase.
A sense of hopeful hopes does flourish
And blesses me with rare expertise.

A feeling of a glowing warmth comes,
To push me on to pinnacles unclimbed,
And what was inaccessible becomes,
Accessible and easy, rightly tuned.

This world sour opinions, wily taunts
Are muffled and by the music in my mind,
And mere thought of you, to me grants,
Harmonious, peaceful moments, sweet and kind.

And if you come in person, in my view.
I wonder what miracles would ensure.

रणधीर अपने शहर, अपने लोगों, अपनी यादों के बीच थे। मेरा अस्तित्व भी यादों में था। जम्मू में जरूर अपने को असहज और यायावर अनुभव करते होंगे। पैतृक मकान बेच दिया गया था। स्वयं का कोई ठौर नहीं था। स्वयं का ठौर होता तो पम्मी की यादों में भी शायद एक तसल्ली होती। ज़रूर लुटा–लुटा अनुभव करते होंगे। वो मुझे छोड़कर जाना नहीं चाहते थे।

1. पम्मी दी त्रीऽ पुन्न–तित्थ–
मन जीने दी कोशश साल भर जरुर करदा ऐ,
अवो हर साल यकम अप्रैल दा खलनायक आई करियै।
मिरे मिथे दे मनसूबे गी चकनाचूर करदा ऐ,
जिदे जीवन दा नखलेस्थान भलयां, भलयां उक्खड़े दा।

2. 'प्रेम' की चौबरसी पर सान्नेट लिखा था कि चार साल होने पर भी तुम्हारे बगैर जीवन का संगीत, जादू रस सब खो गये है। मृत्यु ने बड़ी नृशंसता से तुम्हें हम से छीन लिया है।

PREM'S CHAUBARSI YAAD

On first of April, Nineteen Eighty Eight
You went away to where the gods reside.
And we have, since then. been disconsolate
Vaccuumed, empty, hapless, woe-be-tide.

Bereft of you, these nameless, aimless years-
Groping, blundering, always round the bend
Hoping that our endless anguished tears
Would somehow cease; miseries would end.

But all our clueless mending bears no fruit.
And our all striving seems to be in vain.
Your parting has been such a ruthless brute,
No blood is left in us for it to drain.

From the day you left us, to this day,
The magic, from our, lives has flown away.

पर साथ ही वर्तमान का ध्यान आता है, सब छोड़कर मेरे साथ अंबारां गांव में बस जायें।

पिछले पंजियें साल्ले गी दूर पिच्छें छोड़ियै
मिरा मन करदा ऐ में अपने माजी बक्खी नस्सी जां
सीमैंटी शहरी जंगला दे सीखचें गी त्राड़ियै
मिरा मन करदा ऐ में अम्बारां जाईऐ बस्सी जां

तलाड़ दी मिट्टी दे ढेरा च घूड़ी दा रला पाईऐ

अपने पैरें कन्नै छड़ियै काह्नी गी प्यारां में
कंधों गी खड़ेरां दुग्गे अपने हत्थें नै लाईए
ते बरगे, थ्मम, बेल–बूटे उक्करियै सुआरां में,

वनाईऐ कुल्ला ए, आखां ''सुधा'' गी तुलसी ला बेह्ड़ै
सुधा गी तुलसी लान्दे दिक्खियै किलकारियां मारां
तुलसी दिक्खियै फी जेल्लै चेतां प्रेमां दा छेड़ै
तां ओह्दी दिलकशी कुल्ले चफेरे त्रौंकियै बारां

फी लेईऐ कुल्ले दी परखना कुल्ले गी आखां
मृतूलूका दी नशवर चीज गी मुड़ियै अमर आखां

रणधीर कहते हैं.....मैंने जीवन में कई लड़ाईयां लड़ी हैं, कुछ हारी भी हैं, समय के साथ सच–झूठ, हां–ना अपने अर्थ बदलते जाते हैं। वर्तमान को कई पुरानी यादें उद्वेलित करती हैं और कुछ भूली यादें उत्साहित भी करती हैं। प्रेम से भरी निगाहें, खुले होंठ, स्वाभाविक नारी सुलभ मर्यादित, धुंधले से चेहरा का आभास होता है। जिसे किसी समय मैं बहुत अच्छी तरह से जानता था पर बहुत दिन हो गए हैं।

IT WAS LONG AGO

A few traces of the past intervene,
And jostle present moments with affection.
A few flashes of a long forgotten scene
Arouse in me a feeling of elation,
A faint impression of a lovely face
With parted lips, sparkle in the eyes,
A presence oozing femininity and grace
A clear glimpse, I tap my puzzled brow.
I knew her once but it was long ago.

तुम मुझसे मत पूछो कि मैंने सपने में क्या देखा है? कारण उस सपने की बात बतलाना असंभव नहीं पर कठिन अवश्य है। सपने में देखी बात का नशा बहुत देर तक रहने वाला है पर और स्पष्ट रूप से याद करने की कोशिश करने के प्रयास में सब रेत के समान खिसक जाता है। पर मैं उस सपने की ट्रांस में और जीना चाहता हूं। मैं उसके खयालों में मस्त रहना चाहता हूं।

I dreamt that I was dreaming in my dream
But what was it? I ask you not to ask,
Because to place a finger on its theme,
If not impossible, is still a task.

And though its fragrance in my psyche lingers,
Yet when I try to figure its extent,
It quickly slips like sand through my fingers
Its pleasurable aftermath may flee.

Pray, let it hold me in it nebulous wonder,
And what was it? Pray, do not ask me.
And if I want to tell it, I can still ,
But though I can, I do not think I will.

रणधीर का जम्मू में आवासकाल मानसिक स्तर पर बहुत कठिन था। जम्मू में रहते हुए उन्हें अपने जीवन को देखने–जानने–विश्लेषण करने का अवसर मिला था। पम्मी की मृत्यु के बाद जिस मानसिक अवस्था में जम्मू से गए थे। उससे अब अधिक स्थिर अवस्था में थे। अब वो अपनी स्थिति का आकलन कर सकते थे। मैंने ही उन्हें जाने को कहा था,

इसलिए मेरे प्रति कोई guilt भाव नहीं था। पम्मी के साथ जिये पलों को पुनर्जीवित करने पत्निटॉप और बटोटा भी गए थे।

फिर से जीने के फैसले पर भी पुनर्विचार का मौका मिला था। नये जीवन के प्रति भी ईमानदारी और संतुष्टि आवश्यक थी। इस मानसिक द्वंद को सुलझाना जरूरी था। मैं हर फैसले में उनके साथ थी। दोस्ती दुनिया की सबसे बड़ी दौलत होती है। उनका मन शान्त–स्थिर होना जरूरी था। इसी संदर्भ में कई कविताओं के अंश हैं, जो उनके द्वंद को बतलाते हैं।

राहगीर चलते–चलते अचानक ऐसे दोराहे पर आता है कि उसे चुनना है कि वह किस रास्ते जाये ? एक रास्ता बहुत चलने वाला है तो वहीं दूसरा उबड़–खाबड़ और कम उपयोग वाला लगता है। मन तौल रहा है कि वह कौन सा चुने।

एह् का रस्ता कीह् चुनया?

में रस्ते पर चला दा हा, दरस्ता आई आ चानक,
आंऊं भलखोई आ जे कोह्कड़े रस्ते गी फगड़ा में?
मिगी जो भाखे हे रस्तें दी चोन करने दे मानकः
इन्दी उब– खड्डब्बी शकल ते बेरौनकी रौनक;
इेनें गी दिक्खिऐ फ्ही अपने–आपै कन्नें झगड़ा में।

PATNI TOP RE-VISITED WITHOUT HER

Tranquil, peaceful, calm, in solitude,
Birch and pine and fur trees stand in truce,
And when some vagrant wisps of wind intrude,
They sway and sigh and whisper. I deduce

That mighty storms all , wrathful, flashing, rule
Have gnarled majestic trunks of sturdy trees
And bent them double, made them rough and crude ,

Though now they brooding stand in apparent peace.

Love, when I met you first, the woody lanes
Were the same. These everlasting veterans are
Bedecked with beauty of some fitful peace
And stand in silence bearing aches and pains.

But where are you? Your absence leaves a scar,
What wrinkled, twisted, lifeless woods are these?

BATOTE REVISITED

Have you seen Batote on leeward side
Of "Pattni" top so closely which it hugs
Like startled damsel, newly wedded bride,
Enwrapped, so mutely hugs the bridal rugs.

My Pammi once did in this place reside,
And end of journey for me it became
And to this dame of hills I always came
To spend a few moments with my future bride.

Then felt I like some falcon on the prowl,
When with gigantic purpose it does soar,
But to-day when I see this hilly bowl
I find it barren, lifeless, empty, sore.

For people not the places are my goal
And Pammi in this heaven stays no more.

DEATH WE DIE

What saddens me and hampers every chance
Of living is, we let our fears prevail;
And the wise injunction – "Death does come but once"
Does go unheeded – bludgeons us. Flail

The waves of sweetest music ; granite walls
Of our anxiety roll away unheard
And our existence, akin to rag dolls,
Appearing life – like truly, but absurd

Are these illusions. If we only could
Refuse to die when challenged by each fear
And wallop this anxiety as we should,
Then we could lead a happy life, my dear.

And live like princes, to our loves attend,
To meet our death finally as a friend.

मेरे जम्मू न जाने और मेरे ही द्वारा भेजे जाने के प्रति भी थोड़ा रूष्ट थे। पर मिलने की आतुरता भी थी। क्षितिज के पार एक उदय होती सृष्टि नजर आ रही थी। 1994में ये मांडल आ गये।

WHERE IS LOVE?

How smoothly flowing the swan- like beauty sways.
And in its own-self always busy lives.
To loving soul it scarcely attention pays
And in its own self marvels and believes.

If this was not so; how come you, my friend
Forget my presence, legion of my woes?
Now do not tell me that you didn't intend
To tell me that who cares and who knows?
One glance at me you throw and this I grant.
But where is love? The alms- I do not want. -----

Parting Of Ways I

What wild plumage flutters to my mind,
Of hopes and thoughts aspiring far and wide.
Then what unearthly reason do you find
For obscenities for which you always chide?
The parting of our ways in married life
Has come, my spouse, to end this senseless strife. -----

THAT NIGHT

That lovely night of love and understanding,
That blessed sacred happy, happy night
Where restless Time appeared to be standing
And everything appeared to be right.
Is still a source of blissful memory
Though you are inaccessible to me. --------

Regret

With ceaseless vigour I, myself endeared-
To high and low. And when I wrote for you-
I write of you, and feel it in my bones-
A tiny warning of a huge regret

And missing you, I think of you and write
And with each line my daily stature grows.
But you, my friend are out of worldly sight
Renounce this world and come to you for good.

DEJECTION

I seek and get the things I never seek,
I never get whatever, I have sought.
To look for her, I walk along the creek,
And want her badly, but I find her not.
When day is dreary, endless, overlong,
When evening takes a year to come along. -----

A WEE BIT MORE

A wee bit of more effort will not make,
A wee bit differences to you. You may find,
Few paces more, tentative when you take,
Your destination. Get your second wind.
By waiting we may have the widest choice,
Of happiness in which we can rejoice. ----

With ceaseless vigour , I myself endeared,
To high and low. And when I wrote for you,
The weak and mighty, friend and enemy cheered,
And when to you I come to bid adieu.

I write of you, and feel it in my bones,
A tiny warning of a huge regret,

Which pricks the marrow with its deadly thorns.
I fret and keep on saying I do not fret,

And missing you I think of you and write;
And with each line my daily stature grows,
But you my friend are out of worldly site,
Though all to you, I know, The credit goes.

This –no one knows but if I could, I would,
Renounce this world and come to you for good.

JOY

I – happy happy – like a fiddle fit,
Pirouette and to the beat of pleasure hum,
And throw my arms around you to submit,
To hurting hugs. And now that you have come.

No harm to tell of loathsome agonies ,
Which tortured and tormented your beloved:
To see the mynas kissing on the trees,
And I so lonesome – unkissed and unloved.

To write the letters filled with ironies,
Of circumstances, tear them up and blink,
The tears away to hide the miseries,
Lest you may not so cowardly me think.

But nestled in your arms, I admit,
I don't remember pain – not a bit.

मुनासिब वकत पै चलेंगे हम दौनो,
क्रौचों के दिलमिले–हिलमिले जोड़े की तरह।
छोड़ के शिकवों को, गिलों को पीछे,
चंद अफसोस भरे पछतावे लेकर।

बची–खुची अड़चनों का निभारन करके,
आशा के भड़कते हुए आवे लेकर।
मन पसन्द रास्तों पै यहां हम जा न सके,
खुद ही अपनाई हुई निष्ठा के थकावे लेकर।
चंद दिन और सबर, और सबर, और सबर,
खुद ही मीसूस करेंगे दफर्तन शायद।
यह क्या कम है कि हम जिन्दा हैं,
देर से चाहे हुआ पर मिलना तो हुआ।
अब भी हमारे लिये हमदम जिन्दा हैं,
जो किसमत में लिखा था होना वो हुआ।
अपनी ही मरजी से सफर तैह करने के लिये,
वाह्द–अजां अपनी खुशी ही से मरने के लिये।

.... कुंवर वियोगी

और

Marrige

In a marriage, man and woman think more,
Of the partnership than they do of themselves.
It is interweaving (sweet की भांती) of interests and
A facing of sacrifice for the sake of both. Feeling
Of security(रक्षा) and contentment(सन्तुष्टी) comes
From mutual(मिल–जुलकर की हुई) effort. In
Marriage, as in dancing, happiness comes not
From skill but from to-getherness.
In purely physical love there is emotional
Sincerity which can burn both partners to ashes.
No two human beings can always live
To-gether in the most intimate relationship
Of marriage without sometimes frustrating
Each other. Understanding is needed because
Where love is blocked it turns to anger and
Hate. The art of love is patience till spring comes.

रणधीर बहुत ही संवेदनशील व्यक्ति रहें हैं। जब भी कोई भावुक दृश्य देखते उनकी आंखों में आंसू आ जाते । फिल्म

'बागबान' के अन्त को जितनी बार देखते भावुकता में आंसू आ जाते । मैं पूछती , रणधीर कितनी बार तो देख ली है, फिर ये भावुकता क्यों? शायद अपनों के दोषारोपण, स्वार्थी व्यवहार और बिछुड़ना तड़पाता होगा। तभी कहते हैं.....
मुझे लगता है कि प्यार और आग समान ही होते हैं। आग तो पानी से बुझाई जा सकती है पर प्रेमी हृदय के आंसू को रोका नहीं जा सकता है। प्यार की अग्नि उन्हें और तपा देती है। प्रेम की तड़प में मैं रोऊँगा ,मेरी आंखों से आंसू बहने दो

SILENT SUFFERER

The nature of fire and love is the same.
The fire is easily extinguished with water
But tears of lovers can not tame
The fire of love. They make it even brighter.
Yes I shall weep but never ever speak,
And let the tears tumble down my cheek.

रणधीर के मांडल आने के कुछ महिनों के बाद दो नवजात बेटियों को गोद लिया। जीवन के सारे ऊहापोह खत्म हो गये। फिर हम भीलवाड़ा आ गये। दोनों बालिकाओं के साथ जीवन अति व्यस्त हो गया।

रणधीर को बचपन से ही अंग्रेजी के प्रोफेसर बनने की इच्छा थी पर पारिवारिक स्थितियों के कारण नौकरी करनी पड़ी थी। जम्मू टाईम्स के लिये रोज ''पते दी गल्ल''लिखना जारी था। ये एक दो कॉलम का पूरा लेख होता था। भीलवाड़ा में बच्चे खूब मेधावी थे पर अंग्रेजी नहीं आने के कारण जीवन में सफल नहीं होते थे। रणधीर ने पहले "English Speaking classes " शुरू की, अंग्रेजी पर साधिकार ज्ञान होने से students की संख्या बढती ही गई। कुछ समय बाद CLAT,MAT, CDS & Competitive Exams की तैयारी भी कराने लगे। इसके लिये कोई शुल्क नहीं लेते थे। फिर

Group Discussion भी करवाने लगे। कई लड़के– लड़कियों का IIM अहमदाबाद और सेना में चयन होने लगा।

जो भी लड़के–लड़कियां CDS के लिये आये व मन से मेहनत की वो सेना में ऑफिसर बन गये। छात्रों को पूछने पर सलाह भी देते। धीरे–धीरे कर्नल साहब के नाम से जाने जाने लगे। कई डॉक्टर, इन्जिनियर, पॉलिटीशियन भी बेझिझक आने लगे। कई विद्यार्थियों के परिवार वाले भी अपनी समस्या समाधान के लिये आना शुरू हुए।

अखबार के माध्यम से English Editorial और जम्मू प्रभात के माध्यम से डोगरी में कॉलम का लेखन रणधीर के लिए बहुत संतोषप्रद रहा। जीवन में देश और समाज से जो पाया था उसे ब्याज समेत पुनः समाज को लौटा रहे थे। देश और समाज से उऋण हो रहे थे।

बचपन से Unsaid & undefined वेदना, जीवन के अभाव, पत्नि की असमय मृत्यु, घर का बिखरना और हाथों से सब लुट जाना आदी बहुत गहरे घाव थे, जिन पर इस उऋणता ने मरहम का काम किया। मन का धुंधला आकाश फिर नीला हो गया।

> शादी के 27 सालों में दोस्ती गहराती गई। कैंसर से एक रोगी ही विचलित नहीं होता है वरन सारा घर, वर्तमान, भविष्य सभी कुर्बान हो जाते हैं। प्रिय को छीने जाने की फांस हमेशा चुभती रहती है। समय उस चुभन को कम करता जाता है पर जींदा तो रहती है। वियोगीजी की लिखी एक कविता ''चार कमरे'' में जीवन का दर्शन छुपा है। दोस्त होने से मेरी पहुंच तीसरे कमरे तक हो गई थी। चौथे कमरे की झिर्री से रणधीर की unsaid, undefined पीड़ा को थोड़ा जान पाई थी। शायद पत्नि से दोस्त, दोस्त से मां बनने की प्रक्रिया में ऐसा हुआ होगा। बाद के कुछ सालों में वे मुझे मां कहने लगे थे। लड़कियां कहती थीं –

पापा! आप मम्मी को मां क्यों कहते हैं? ये हंसकर कहते तुम भी तो 'मां' कहते हो।

कैंसर रोग से लड़ने से अधिक कठिन मानसिक स्तर पर लड़ना और जीतना जरूरी है। आत्मविश्वास, धैर्य, साहस के साथ रिश्तों में समझ, गहन गंभीरता, जिये पलों की खुशी ही लड़ाई के हथियार होते हैं।
भगवान किसी को ऐसी चुनौती न दे।

शुभाशीष!